ओम प्रकाश कुमरावत 'आचार्य'

वास्तु द्वारा गृह निर्माण

मानचित्रों सहित



2·2

वास्तु द्वारा भवन निर्माण

(मानचित्र सहित)

विख्यात ज्योतिष एवं वास्तुर्विद

ओमप्रकाश कुमरावत 'आचार्य'

(एम.ए.बी.एड्.)



साधना पब्लिकेशन्स

प्रकाशक :
साधना पब्लिकेशन्स
K-4/4 मॉडल टाउन-II
दिल्ली-110009
फोन : 55496808, 9891070005, 27411257

मूल्य : **₹ 110/-**

मुद्रक :
डी॰ जी॰ प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110032

अपनी बात

कहा जाता है कि अपने घर जैसा सुख संसार में कहीं नहीं। सच ही है, आखिर हम अपने घर से दूर कब तक और कहां रह सकते हैं। अपना घर अंततः अपने सपनों का महल होता है। और अपने सपनों के महल का निर्माण लापरवाही और बेतकल्लुफी से क्यों?

सैकड़ों छोटे-बड़े आवास-परिसरों के परिशीलन और अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ, वास्तुशास्त्र और उसके सिद्धांतों के इतने प्रचार-प्रसार के बावजूद यही प्रतीत हुआ है कि अभी भी हम या तो उन्हें कपोल कल्पना मानते हैं या संपन्न लोगों का विषय। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है।

वास्तुशास्त्र के सिद्धांत हमारे आवास के आकार-प्रकार और आर्थिक स्थिति के अनुकूल या प्रतिकूल नहीं होते। वरन् वह तो हर उसी निर्मित भूभाग पर फलित होते हैं, जिसमें हम निवास करते हैं। हमारा आवास चाहे अत्यंत छोटा हो, मध्यम आकार का हो अथवा विशाल अट्टालिका स्वरूप हों, उसमें वास्तु के निर्देशों का समावेश किया जा सकता है। अर्थात् प्रत्येक स्तर पर अपने भवन का निर्माण वास्तुनुरूप किया जा सकता है।

अपने सपनों के महल को ब्रह्मांड की ऊर्जा के प्रवाह की दिशा में अनुकूलित किया जा सकता है। **'वास्तु द्वारा गृह निर्माण' (मानचित्रों सहित)**, नामक लघु वास्तुग्रंथ के सहयोग से।

वास्तुशास्त्र में वर्णित स्पष्ट दिशा-निर्देशों से सुसज्जित, प्रत्येक दिशा वार, छोटे, बड़े, मध्यम आकार के लगभग दो सौ से अधिक मानचित्रों की अनमोल शृंखला से आपके सपनों के महल का चुनाव अत्यंत सहज हो सकता है ऐसा मुझे विश्वास है।

आपका भवन कैसा हो? कैसा होना चाहिए? यह जान सकते हैं, आप बिना इंजीनियर और वास्तुशास्त्री के सहयोग से। बिना समय, धन और सुख गंवाए।

एक साथ वास्तु निर्दिष्ट इतने मानचित्रों की रचना, उनका संग्रह निश्चित ही एक पुलकित करने वाला अद्वितीय अनुभव होगा। आप चाहे ज्योतिष और वास्तु प्रेमी हों, भवन शिल्प से जुड़े व्यवसायी हों, इंजीनियर, ठेकेदार, राजगार, भवन निर्माता या भवन निर्माण के स्वप्नद्रष्टा, सबके लिए यह पुस्तक एक ऐसा दस्तावेज है, जिसमें संपूर्ण वास्तुदृष्टि युक्त निर्माण- प्रक्रिया समाहित है। सैकड़ों लोगों के सपनों के महल को वास्तु दृष्टि प्रदान करते, उनके मानचित्र बनाते-बनाते अचानक ही ईष्ट की प्रेरणा हुई, कि ज्योतिष एवं वास्तु प्रेमी पाठक वर्ग के सामूहिक हितार्थ एक अत्यंत सुगठित, सुगंधित वास्तुनुरूप मानचित्रों का एक ऐसा अनूठा संग्रह लघु ग्रंथ के रूप में प्रकाशित किया जाए।

जटिल श्रम, कठिन किंतु अत्यंत प्रियकर साधना और उसकी शक्ति, हमारे द्वारा लिखित डेढ़ दर्जन से अधिक पुस्तकों के पाठक वर्ग का अपार स्नेह, उनका पत्र रूप उत्साह, निकटतम ईष्ट मित्रों का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सहयोग, प्रकाशन हेतु **साधना पब्लिकेशन्स** की तत्परता का त्वरित परिणाम आपके सामने है।

मैं उम्मीद करता हूँ, कि संपूर्ण वास्तुशास्त्र के सरलीकृत रूप में चित्रित मानचित्र के अनुरूप आप अपना भवन बनाने में, अपने सपनों के महल को सजाने और संवारने में सफल होंगे तथा पुस्तक में आपने जो कमियां महसूस कीं, क्या और होना चाहिए था, इन सबसे हमें परिचित कराने की कृपा करेंगे। कृपया पत्र व्यवहार इसी पते पर करें।

□□

ओम प्रकाश कुमरावत 'आचार्य'
भावसार मोहल्ला, सरकानुनगो
का बाड़ा-खरगोन-451001
(म. प्र.) दूरभाष—07282-233987

अनुक्रम

विषय-प्रवेश		7
मानचित्र विशेषता विशेष		
उत्तर दिशा मुखी	: आवास विशेष ढाल और उसका निर्माण, आवासीय मानचित्र	17
दक्षिण दिशा मुखी	: आवास विशेष ढाल और उसका निर्माण, आवासीय मानचित्र	39
पूर्व दिशा मुखी	: आवास विशेष ढाल और उसका निर्माण, आवासीय मानचित्र	60
पश्चिम दिशा मुखी	: आवास विशेष ढाल और उसका निर्माण, आवासीय मानचित्र	81
ईशान दिशा मुखी	: आवास विशेष ढाल और उसका निर्माण, आवासीय मानचित्र	102
आग्नेय दिशा मुखी	: आवास विशेष ढाल और उसका निर्माण, आवासीय मानचित्र	124
नैऋत्य दिशा मुखी	: आवास विशेष ढाल और उसका निर्माण, आवासीय मानचित्र	145
वायव्य दिशा मुखी	: आवास विशेष ढाल और उसका निर्माण, आवासीय मानचित्र	166



विषय-प्रवेश

वास्तुशास्त्र के विषय में आजकल कौन नहीं जानता? सकारात्मक या नकारात्मक रूप से कुछ अच्छा, कुछ बुरा, कुछ पूरा, कुछ अधूरा, किंतु कुछ न कुछ जानते अवश्य हैं। यह आज का विषय कदापि नहीं है? सदियों से भारत वर्ष में भवनों, दुर्गों, पुरम और विशाल अट्टालिकाओं के निर्माण में वास्तुशास्त्रों के निर्देशों का पालन होता आया है। चाहे जगन्नाथपुरी का मंदिर हो, चाहे रामेश्वर का शिवलिंग, चाहे कोणार्क का सूर्य मंदिर हो अथवा खजुराहो का मूर्ति शिल्प, हर स्थान पर वास्तु विशेषताओं का भरपूर उपयोग किया गया है।

दरअसल ज्योतिष को वेदों के नेत्र कहा जाता है। और वास्तु ज्योतिष का एक अंग। इस प्रकार भारतीय संस्कृति में वेदों में वर्णित ज्ञान को चराचर जगत् से रू-ब-रू होने की आचार संहिता माना जाता है। तो ज्योतिष द्वारा उसके भविष्य में झांकने का प्रयास किया जाता है, उसी का एक अंग वास्तु शास्त्र हमें पृथ्वी पर पृथ्वी (प्रकृति) के अनुकूल रहने का दिशा-निर्देश प्रदान करता है।

जिस प्रकार बिना नमक के भोजन होता है, बिना स्नान किए दिन बिताना है, बिना बटन के कमीज पहनना होता है, उसी प्रकार बिना वास्तु विशेषताओं के भवन होता है। अर्थात् यदि भवन (आवास, व्यवसाय या देवस्थान आदि) का निर्माण किया जाए और उसमें वास्तु विशेषताओं को संलग्न न किया जाए तो उस भवन के उपयोग करने पर न तो निवासियों के जीवन में सुख होगा, न आनंद न ही ऐश्वर्य।

स्वयं मैंने सैकड़ों वास्तु विकृत स्थानों का अध्ययन भी किया और

वास्तु विशेषताओं से युक्त भवनों का भी। विकृत स्थानों को सुधारकर लाभ भी प्राप्त किया है, और लोगों को लाभ मिलता भी है। आप स्वयं भी अनुभव कर सकते हैं। क्या आपने कभी ऐसे भवन का अवलोकन किया है।

– जहां आग्नेय कोण में पानी की टंकी हो या अन्य जल स्थान हो।

– जहां ईशान कोण में कूड़ा-कचरा भरा रहता हो।

– जहां वायव्य कोण में गोदाम या भारी सामान रखा हो।

– जहां दक्षिण-नैऋत्य का तल निम्न हो और उत्तर-पूर्व का ढाल उच्च हो।

– जहां बीम कॉलम के नीचे बैठक या शयन होता है?

निःसंदेह आप पाएंगे ऐसे आवास में येन-केन-प्रकारेण औसतन सुखों का अभाव होगा। अर्थात् सुख विहीनता का कोई कारण नहीं, फिर भी भवन निवासियों के लिए सुख मृगमरीचिका बन जाते हैं।

इसके विपरीत जिस प्रकार के भवनों में वास्तु निर्देशों का समुचित पालन किया जाता है, वहां अरोग्यता स्वतः उत्पन्न होती है। आय भले ही सीमित हो गुजर-बसर होने के साथ-साथ प्रतिष्ठा और खुशियां बरकरार रहती हैं। प्रगति के समान अवसर मिलते हैं।

कहना न होगा कि आज जनसंख्या विस्फोट, प्रशासनिक दबाव और महानगरीय सभ्यता के तथाकथित निर्देशन में अब निजी या सार्वजनिक आवासों का निर्माण कराना हमारी मजबूरी होता है। ऐसी स्थिति में भवन की संपूर्ण आंतरिक संरचना को पूर्णतः वास्तुनुरूप बनाकर उसे विशेषताओं से सुसज्जित किया जा सकता है।

हम जिस प्रकार के आवास का निर्माण कराने जा रहे हैं, वह अत्यधिक छोटा हो या मध्यमाकार अथवा विशाल प्रत्येक स्थिति में वास्तु-निर्देशों के अनुरूप बना सकते हैं। यहां पर हमने समाज के प्रत्येक अंतिम व्यक्ति और वास्तु-विषय को एक साथ प्रस्तुत किया है। इसलिए अपने ही स्तर पर यहां तीन प्रकार के आवास की कल्पना की गई है तथा उसके अनुसार उनके मानचित्र प्रस्तुत किए गए हैं, जो निम्नांकित हैं–

1. छोटा भवन—हमारे पास कितना ही छोटा भूखंड क्यों न हो यदि हमने उसे अपने आवास के निमित्त क्रय किया है, या उस पर आवासीय दृष्टि से निर्माण कराना चाहें तो निःसंदेह कम स्थान में अधिकाधिक सुविधाएं जुटाना होगा। अतः यहां निर्मित छोटे आवास के मानचित्रों में हमने प्रमुखता से रसोईघर, छोटा कक्ष और बड़ा कक्ष तथा स्नान-गृह, शौचालय और सीढ़ियों को दिशानुरूप दर्शित किया है। जहां—

(i) **रसोईघर**—की स्थिति आग्नेय कोण में होने के साथ-साथ यहां आवश्यकतानुसार पूजन हेतु देव स्थापन, अन्न भंडारण आदि भी किया जा सकता है।

(ii) **छोटा कक्ष**—छोटा कक्ष जहां उचित दिशा में होने पर पूजन, अध्ययन, भंडारण, शयन आदि हेतु प्रयोग किया जा सकता है।

(iii) **बड़ा कक्ष**—जिसे बैठक या हाल के रूप में व्यवस्थित कर यहां टी.वी., सोफा या इसी प्रकार की आवश्यक सजावट के साथ-साथ शयन हेतु प्रयोग भी किया जा सकता है।

(iv) शौचालय, स्नान गृह की संरचना इस प्रकार की जानी चाहिए कि उसके पास से ही सीढ़ियां बनाकर छत पर जाया जा सके; इस प्रकार जहां एक ओर स्नान की बचत होगी, वहीं धन की बचत भी की जा सकती है।

(v) सैप्टिक टैंक हेतु हमें चाहिए कि दक्षिण नैऋत्य के बाहरी भाग में कहीं उसका निर्माण जहां सुविधानुसार हो वहां बनवाए जा सकते हैं।

(vi) जल स्थान ईशान कोण के बाहरी परिसर में हो तो अति उत्तम होगा अन्यथा मानचित्र में दर्शित ईशान कोण में भवन के आंतरिक भाग में ही बनवाया जा सकता है।

विशेष

(i) छोटा भवन चूंकि छोटा ही होता है, और वह स्थानाभाव के कारण ही छोटा बनवाना होता है, अतः यह आवश्यक नहीं कि उसके चारों ओर चहारदीवारी बनवाई जाए। ऐसी दशा में भवन

में पर्याप्त प्रकाश, वायु के आवागमन के लिए मानचित्र में दर्शित स्थानों के अलावा भी प्रवेश-द्वार के विपरीत दरवाजे, उजालदान, खिड़कियों आदि की व्यवस्था की जा सकती है।

(ii) यद्यपि यहां हमने जो मानचित्र प्रस्तुत किए हैं, उसमें मार्ग और अन्य मार्ग की स्थिति में आवास का मानचित्र अलग से बनाया है। किंतु यदि मार्ग और मानचित्र में असमानता (अरुचिकर) प्रतीत हो तो अन्य प्रकार के मानचित्र के अनुरूप भी भवन का निर्माण कराया जा सकता है।

जैसे—हमारे भूखंड के दाहिनी ओर भी अन्य मार्ग हैं, इस हेतु निर्मित मानचित्र का स्वरूप हमें ठीक नहीं लग रहा, जबकि बायीं ओर मार्ग होने पर जो मानचित्र बना है, वह हमें ज्यादा उपयुक्त लग रहा है, तो हम बायीं ओर मार्ग के अनुरूप मानचित्र के अनुसार भवन-निर्माण करा सकते हैं। अर्थात् एक दिशा की ओर बने सारे मानचित्रों में से किसी एक का चयन कर उसके अनुसार भवन-निर्माण करावें। भले ही वह मार्ग की दृष्टि से प्रतिकूल हो। उसमें किसी प्रकार का वास्तुदोष नहीं रह जाता।

(iii) चूंकि छोटे भवन की कोई विधिवत परिभाषा और आकार नहीं दिया जा सकता। वह भिन्न-भिन्न माप के अनुसार सैकड़ों प्रकार का हो सकता है। इसलिए यहां हमने भी स्पष्ट माप के कक्षादि का वर्णन न करते हुए मात्र संकेत के रूप में दर्शाया है। यथा रसोईघर को कक्ष के रूप में दर्शाया है। किंतु उसकी लंबाई-चौड़ाई आदि नहीं है क्योंकि वह तो कुल भवन के आकार पर निर्भर करती है। और हमारा भवन किसी भी माप का हो सकता है। ऐसी स्थिति में प्रत्येक माप के प्रत्येक कक्षों वाला मानचित्र का प्रकाशन न तो किसी पुस्तक के लिए संभव है, और न हमारे द्वारा उसका बनाना। अतः अपने भवन की लंबाई-चौड़ाई के अनुपात में कक्षों के आकार का निरूपण करना चाहिए।

2. **मध्यमाकार भवन**– हमें यह जानकर आश्चर्य होगा कि देश और विश्व की लगभग 50% आबादी मध्यमाकार भवनों में निवास करती है। मध्यमाकार आवास से हमारा आशय जिसमें छोटे-से बरामदे से लेकर बैठक, के रूप में एक बड़ा-सा कक्ष, हो इसके अलावा एक या दो कक्ष बेडरूम (शयन कक्ष) के रूप में हों, कम-से-कम एक कक्ष भंडारण या अध्ययन, या अतिथि आदि के लिए हो साथ ही रसोईघर तथा शौचालय, स्नानगृह, चढ़ाव की व्यवस्था हो।

   आजकल सैकड़ों की संख्या में कॉलोनियों का निर्माण, फ्लैट समूह सरकारी, सहकारी या निजी बिल्डरों द्वारा किया जाता है। समाज को दिग्भ्रमित करते हुए पूर्णतः वास्तु विशेषता युक्त होने का दावा किया जाता है। अस्तु, हम ऐसे आवास का निर्माण करने जा रहे हैं, जो उस स्तर के मानचित्र प्रत्येक दिशा और मार्ग के अनुरूप निर्मित हैं। इस हेतु भी छोटे भवन और विशेष में वर्णित बातों का अध्ययन किया जा सकता है।

3. **बड़ा भवन**—बड़े भवन से हमारा आशय यह कि जिसमें बरामदा, हॉल या बैठक, रसोईघर खाद्यान्न भंडारण, शयन कक्ष, अध्ययन कक्ष, पूजन कक्ष, अन्य भंडारण, पर्याप्त जल स्थान, सीढ़ियां, जीना, शौचालय, स्नानगृह आदि सब कुछ स्वतंत्र हो।

   इसके अलावा प्रत्येक दिशा के अनुरूप भवन का मानचित्र और उससे जुड़ी वास्तु विशेषताओं का अध्ययन करते हैं। इससे पहले मानचित्र विशेष का अवलोकन ध्यानपूर्वक करना हमारे लिए अत्यंत लाभदायक होगा।

मानचित्र विशेषता निर्देश

(i) यहां प्रत्येक दिशा की ओर प्रवेश-द्वार वाले कुल 24 मानचित्र हैं। जिनमें से हम अपनी सुविधानुसार किसी भी प्रकार के मानचित्र के अनुरूप भवन का निर्माण करा सकते हैं। भले ही मार्ग की स्थिति कैसी भी हो।

(ii) प्रत्येक भवन के मानचित्र में हवा, प्रकाश का प्रबंध ऐसा है, कि बिना किसी कृत्रिम उपाय (बिजली) के भी प्राकृतिक रूप से हवा, प्रकाश के साथ-साथ यथेष्ट सूर्य की ऊष्मा, धूप आदि का प्रबंध भी हो।

(iii) दरवाजे के स्थान पर खिड़की और खिड़की के स्थान पर दरवाजा रखने से किसी प्रकार का वास्तुदोष उत्पन्न नहीं होगा। साथ ही हम अपनी सुविधानुसार दरवाजों और खिड़कियों की संख्या परिवर्तित कर सकते हैं। अर्थात् हम जहां जिसकी (दरवाजे या खिड़की) आवश्यकता महसूस करें। वहां उसी प्रकार की व्यवस्था की जा सकती है।

(iv) यहां प्रत्येक स्तर (छोटे, मध्यमाकार या बड़े) के भूखंड पर बनने वाले भवन हेतु चारों ओर चहारदीवारी की व्यवस्था की गई है। यदि हमारा बजट निर्माण तथा आवश्यक कक्षों का परस्पर अनुपात चहारदीवारी बनवाने योग्य न हो तो भी किसी प्रकार असुविधाजनक नहीं होगा। क्योंकि प्रत्येक मानचित्र का निर्माण ही इस ढंग से किया गया है कि चहारदीवारी न हो तो भी प्रकाश, वायु, सुरक्षा सहित समस्त सुख-सुविधाएं यथावत बनी रहें।

(v) यहां पर प्रत्येक दिशा मुखी मानचित्र पूर्णतः वास्तु निर्देशों के अनुरूप बनाये गए हैं। इंजीनियरिंग या टेक्निकल दृष्टि से नहीं। अतः हमें जिस प्रकार का भवन, जिस दिशा मुखी बनवाना है, उसके आधार पर टेक्निकल दृष्टि से किसी श्रेष्ठ इंजीनियर्स से भी मानचित्र इसी प्रकार का बनवाना चाहिए।

(vi) यदि यहां वर्णित मानचित्र से भिन्न मानचित्र व्यक्तिगत स्तर पर हमसे बनवाना चाहें तो भूमि की नाप (लंबाई-चौड़ाई) मार्ग स्थिति, अपेक्षित कक्ष संख्या, आर्थिक नियोजन आदि की जानकारी सहित अपेक्षित शुल्क भेजकर मानचित्र बनवा सकते हैं।

(vii) यहां मात्र आवासीय भवन के मानचित्रों का वास्तु रूप वर्णित

है। भवन की आंतरिक सज्जा क्या? क्यों? कैसे? आदि के लिए हमारी 'साधना पब्लिकेशन्स', दिल्ली द्वार प्रकाशित गृह **'वास्तुशास्त्र और सज्जा'** का अध्ययन करना चाहिए।

(viii) यहां किसी भी दिशा मुखी आवास हेतु निर्मित मानचित्रों को चार श्रेणियों में बांटा गया है–

(क) जब प्रवेश-द्वार की ओर मार्ग हो–अर्थात् मात्र एक ओर मार्ग।

(ख) जब प्रवेश-द्वार के अतिरिक्त दाहिनी ओर भी मार्ग हो–अर्थात् भूखंड के दो ओर मार्ग।

(ग) जब प्रवेश-द्वार के बायीं ओर मार्ग हो, अर्थात् यहां भी भूखंड के दोनों ओर मार्ग हों।

(घ) जब प्रवेश-द्वार की ओर के विपरीत पीछे भी मार्ग हो, अर्थात् भूखंड के आगे और पीछे दोनों ओर मार्ग हों।

विशेष– (i) यद्यपि यह आसानी और सुविधाजनक ढंग से समझने के लिए वर्गीकरण किया गया है। दरअसल सभी मानचित्र वास्तु निर्दिष्ट हैं, अतः हम किसी दिशा विशेष मुखी आवास हेतु उस दिशा की ओर बने कुल 48 मानचित्रों में से किसी भी एक का चयन कर भवन निर्माण करा सकते हैं।

(ii) यदि भवन के तीन ओर मार्ग हों तो ऐसी स्थिति में हमारे विचार पर निर्भर है, कि हम अपना भवन किस मानचित्र के अनुरूप बना सकते हैं। क्योंकि सभी मानचित्र वास्तु दृष्टि से समृद्ध और त्रुटिरहित हैं।

(ix) जो वास्तु प्रेमी पाठक वृंद अपने भवन का निर्माण करा चुके हैं, अथवा किराए के भवन में निवास करते हैं, उन्हें चाहिए कि आपके भवन में यदि यहां वर्णित निर्देशों का पालन नहीं हो पाया है, और यथासंभव, बिना तोड़-फोड़ के, सुविधाजनक

ढंग से वास्तुनुरूप परिवर्तन कर सकें तो ऐसा अवश्य कर लेना चाहिए। किंतु यह ध्यान रखें कि यदि संपूर्ण भवन के निचले तल के ढाल में, और ईशान कोण में दोष है, तो आप कृत्रिम रूप से सैकड़ों उपाय कर लें, अंततः वह दूर नहीं होंगे। अर्थात् उस दोष को नवनिर्माण द्वारा ही दूर किया जा सकता है। अस्तु।

(x) यदि हम अपने भवन के किसी हिस्से को किराए पर देना चाहते हैं, अथवा दुकान आदि भी बनवाना चाहते हैं, तो उक्त मानचित्र में दर्शित कक्षों में ही बड़ी सहजता से परिवर्तन कर सहज बनाया जा सकता है।

(xi) आवास का निर्माण किसी भी दिशा मुखी हो यह ध्यान रहे कि भवन का आकार–

वर्गाकार–सामान्य शुभ होता है।

आयताकार–सर्वोत्तम होता है।

वृत्ताकार–शुभ होता है।

षट्कोणाकार–अनिष्ट कारक होता है।

अष्ट कोणाकार–बेहद अशुभ होता है।

त्रिभुजाकार–मृत्यु तुल्य कष्ट कारक होता है।

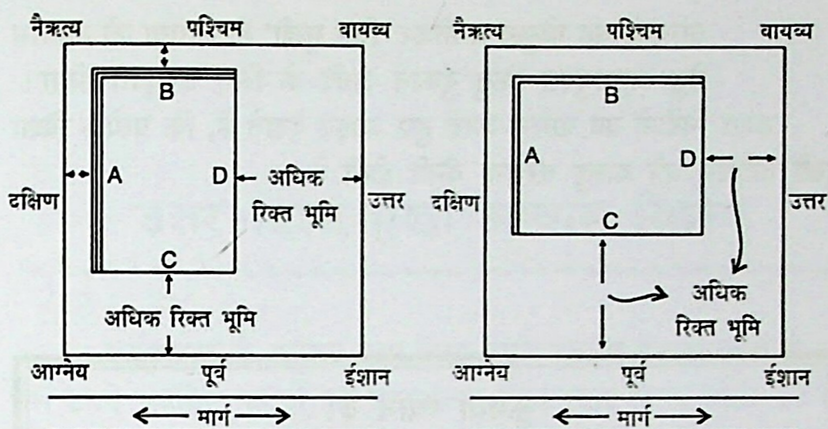
पंच भुजाकार–मिश्रित फलदायक होता है।

इसी प्रकार–

– वायव्य, आग्नेय और नैऋत्य बढ़ा हो तो बेहद अशुभ होता है।

– ईशान, घटा हुआ हो तो अशुभ होता है।

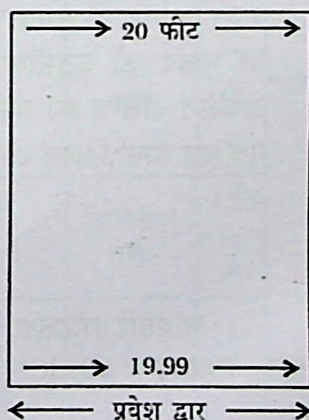
(xii) भवन का निर्माण कराते समय यदि स्थान पर्याप्त हो और यदि कुछ अनिर्मित भूभाग छोड़ना हो तो दक्षिण नैऋत्य पश्चिम में कम भाग तथा उत्तर-पूर्व में अधिक भाग खाली छोड़ना चाहिए।



इसी प्रकार दक्षिण-पश्चिम (A और B) की दीवारें ऊंची और अधिक मोटाई की तथा पूर्व-उत्तर (C और D) की ओर की दीवारें कम ऊंचाई तथा मोटाई की होनी चाहिए।

(xiii) भवन निर्माण का आरंभ आग्नेय कोण से करना चाहिए। दक्षिण की ओर बढ़ते हुए निर्माण जारी रखें। दक्षिण-नैऋत्य-पश्चिम-वायव्य एवं अंत में ईशान, उत्तर-पूर्व की दीवारें उठाना शुभ होगा तथा निर्माण के दौरान कठिनाइयां नहीं आएंगी।

(xiv) भवन को आवास हेतु बनाया जा रहा है, अतः उसे गोमुख अर्थात् प्रवेश द्वार की ओर संकरा तथा पीछे की ओर चौड़ा होना चाहिए—माना पीछे की चौड़ाई 20 फीट है, तो आगे की चौड़ाई 20 से कम होना चाहिए, भले ही यह कमी मात्र 1 मी. मी. की हो। किंतु मी. मी. भी अधिक कदापि नहीं होना चाहिए।



अन्यथा वह गोमुख न होकर 'सिंह मुखी' हो जाएगा जो आवास हेतु अनुपयुक्त किंतु दुकान आदि के लिए उपयुक्त होगा।

उक्त निर्देशों का पालन करते हुए आइए देखते हैं, कि प्रत्येक दिशा मुखी आवास की वास्तु संरचना कैसी होती है–

कृपया ध्यान दें!

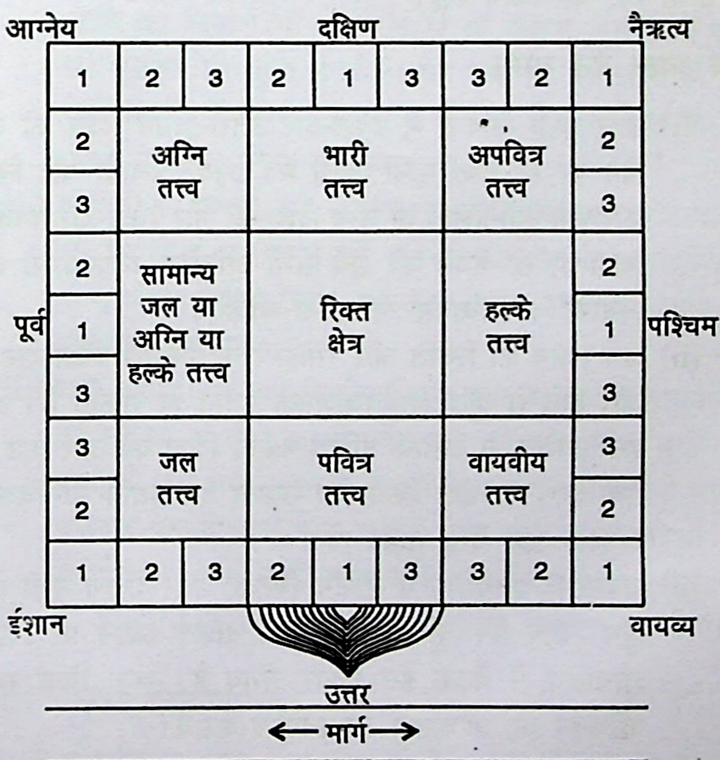
देश भर में सैकड़ों की संख्या में पाठकगण हमसे अपनी निजी समस्याओं का समाधान व्यक्तिगत तौर पर चाहते हैं। ऐसी स्थिति में हम चाहते हुए भी उनके साथ सहयोग नहीं कर पाते। अतः ज्योतिष या वास्तु विषयक किसी भी प्रकार की समस्या के समाधान हेतु–

1. जन्म कुंडली अथवा इसके न होने पर जन्म दिनांक, स्थान, समय और अपने सटीक प्रश्न लिखकर भेजें, जबकि–
2. वास्तु परामर्श के समय भवन का नक्शा, (भवन न होने पर) या भूखंड की चतुर्सीमा युक्त जानकारी भेजें।
3. अपेक्षित दक्षिणा का हमारे नाम से डिमांड ड्राफ्ट (डी. डी.) एवं मय डाक टिकट और पता युक्त रिक्त लिफाफा संलग्न करें।

ओमप्रकाश कुमरावत 'आचार्य'
भावसार मोहल्ला, सरकानुनगो का बाड़ा–खरगोन–
दूरभाष–07282 - 233987 451001 (म. प्र.)

उत्तर-दिशा मुखी आवास विशेष

वास्तुशास्त्र के अनुरूप उत्तर दिशा मुखी आवास में पंच तत्त्वों के रूप में उनसे संबंधित पदार्थों का समायोजन निम्नानुसार किया जाता है। हमें उत्तर मुखी आवास के निर्माण के समय निर्दिष्ट मानचित्र के साथ-साथ इन बातों का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए—



(i) उत्तर दिशा मुखी आवास में उत्तर-वायव्य की अपेक्षा उत्तर-ईशान में प्रवेश-द्वार उत्तम होता है। किंतु यह ध्यान रखें कि हमारे प्रवेश-द्वार के सम्मुख यदि कोई पेड़, बिजली का खंभा, अन्य भवन का कोई खंभा, गड्ढा, पहाड़ी, (टीला) आदि इस प्रकार हों जो द्वार और मार्ग के बीच अवरोध उत्पन्न करते हों अथवा उसकी छाया प्रवेश-द्वार पर पड़ती हो तब या तो उक्त अवरोधादि को हटायें, अथवा प्रवेश-द्वार उत्तर-वायव्य दिशा में बनवाएं। आवासीय भवन में प्रवेश-द्वार मध्य में नहीं होते।

(ii) ऊपरी मंजिल पर वास्तु सक्रियता गौण होती है। किंतु बनाते समय यह ध्यान रखें कि प्रत्येक संरचना तल मंजिल के समान हो तो सर्वोत्तम जितने कम परिवर्तन हों उतना उत्तम होता है। दक्षिण-नैऋत्य सर्वाधिक ऊंचा रहे, यह ध्यान रखें।

विशेष ध्यान देने योग्य

(i) उत्तर मुखी आवास में प्रवेश-द्वार उत्तरी-ईशान दिशा की ओर होने पर ही श्रेष्ठ माना जाता है। इसके अलावा यदि किसी कारण से पूर्वी-ईशान या अन्य दिशा की ओर प्रवेश-द्वार बनवाया जाता है, तो भवन की शेष सभी आंतरिक व्यवस्थाओं और निर्माणों को यथावत रहने देना चाहिए।

(ii) जल स्थान की स्थिति और रसोईघर का निर्माण प्रवेश-द्वार की ओर होने से कुछ असुविधाजनक प्रतीत हो सकता है। अतः इन्हें अधिक से अधिक दक्षिण-नैऋत्य दिशा की ओर कुछ हद तक आगे या पीछे किया जा सकता है। यद्यपि मानचित्र के अनुरूप रहने देना सुखद होगा।

(iii) यथासंभव शौचालय में सीटिंग (बैठक) उत्तर-दक्षिण मुखी होना शुभ रहता है। चूंकि मानचित्र में दर्शित स्थान पर निर्मित शौचालय में बैठक इस प्रकार संभव है। अतः बिना स्थान परिवर्तन के, शौचालय का निर्माण करावें।

(iv) सैप्टिक टैंक को दक्षिण-नैऋत्य दिशा में ही भवन के बाहरी ओर अथवा अंदर ही बनवाया जा सकता है। यथा संभव शौचालय को भवन के बाहरी परिसर में बनवाना व्यावहारिक एवं वास्तु दोनों ही प्रकार से शुभ होगा।

(v) जल स्थान जहां तक संभव हो अंडर ग्राउंड रहे, ईशान की ओर मानचित्र में दर्शित स्थान पर भवन के अंदर या बाहर की ओर भी बनवाया जा सकता है। किसी विशेष मजबूरी के चलते यदि आगे-पीछे करना आवश्यक हो तो उत्तर दिशा की ओर रखना अधिक शुभ होगा, जबकि पूर्व की ओर ले जाना मध्यम शुभ होगा।

(vi) यदि भवन के तीन ओर अन्य भवन आदि हों, और चहारदीवारी आदि का निर्माण भी संभव न हो तो दक्षिण, नैऋत्य में छत को भूलकर भी खुला न छोड़ें। यह भयानक वास्तुदोष होगा। ऐसी स्थिति में पश्चिम या मध्य के ब्रह्म क्षेत्र का कुछ हिस्सा ऊपर से खुला छोड़ा जा सकता है।

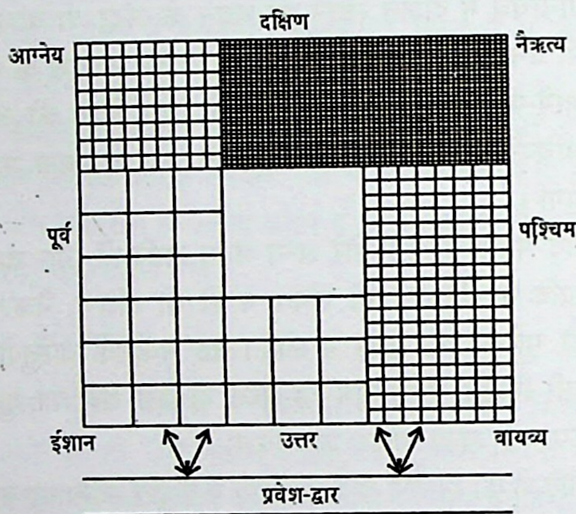
(vii) सीढ़ियों का निर्माण यदि मानचित्र में दर्शित स्थान पर न करवाया जा रहा हो तो यह ध्यान रखें, पश्चिम की ओर चढ़ना सर्वाधिक शुभ, दक्षिण-नैऋत्य उत्तम, पूर्व-उत्तर अशुभ होता है। ईशान में सीढ़ियां न बनाएं।

(viii) यदि चहारदीवारी का निर्माण किया गया है, अथवा बागवानी की सुविधा हो तो भवन में प्रवेश-द्वार की ओर हल्के, सुगंधित पुष्पों के पौधे तथा भवन के पिछले भाग दक्षिण-नैऋत्य में भारी फलदार पेड़ या वृक्ष तथा दाहिनी ओर पूर्व आग्नेय दिशा में बेलदार पुष्प, पौधे आदि तथा बायीं ओर स्थित पश्चिम-वायव्य के आसपास ऊंचे पेड़ अशोक आदि का लगाना शुभ होगा।

ढाल और उसका निर्माण

हम जिस भूमि पर भवन बनाने जा रहे हैं, प्रकृति ने उसे किसी भी

प्रकार का स्वरूप प्रदान किया हो, उसे हमें अपने अनुकूल बनाकर ही प्रयोग करना चाहिए। अतः इस दिशा मुखी आवास हेतु हमें संपूर्ण भवन का ढाल इस प्रकार निर्मित कराना (कृत्रिम रूप से) अधिक शुभत्व उत्पन्न करने वाला होगा। आवास चाहे अत्यंत छोटा हो मध्यमाकार हो या बड़ा हो संपूर्ण निर्मित भूतल को दिशानुरूप निम्न चित्र के अनुरूप ढाल का निर्माण करावें।



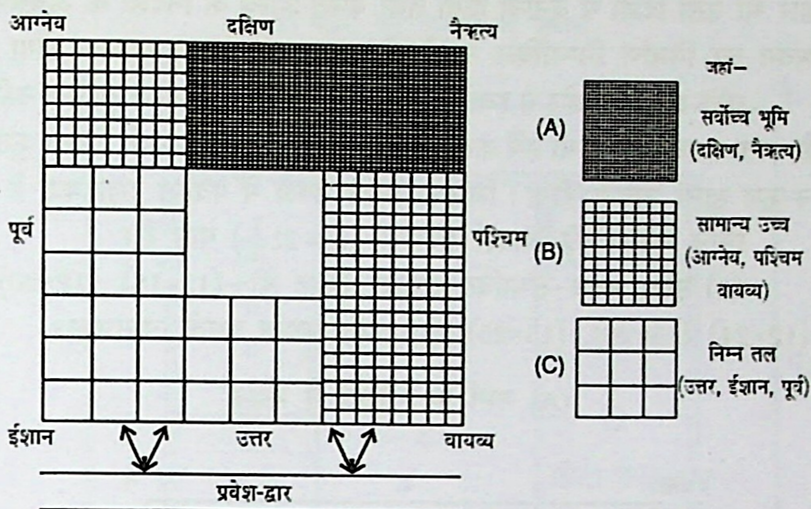
(i) लंबाई और चौड़ाई में स्थित कुल दूरी को 9 भागों में विभाजित किया।

(ii) निर्दिष्ट रूप से दिशानुरूप–

(A) सर्वोच्च भूमि को कम से कम 6 इंच तथा अधिक से अधिक 0-12 इंच तक ऊंचा करें।

(B) सामान्य उच्च भूमि को कम से कम 4 इंच और अधिक से अधिक 6-8 इंच तक ऊंचा करें।

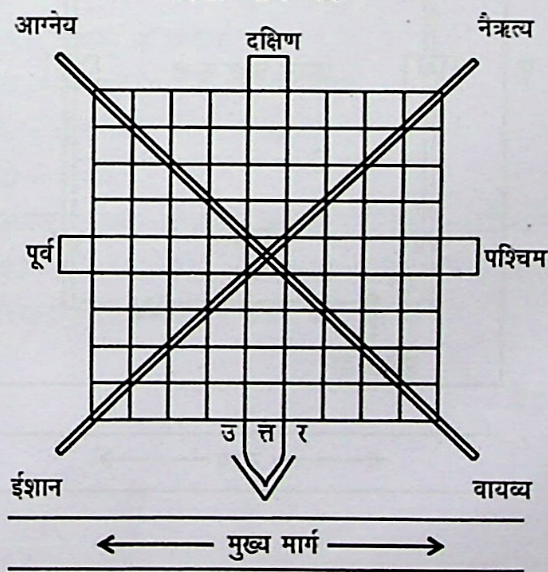
(C) निम्न भूमि को समतल ही बना रहने दें।



आवासीय मानचित्र

जब एक ही दिशा मात्र उत्तर में मुख्य मार्ग या सड़क हो, तथा अन्य शेष सभी दिशाओं में मार्ग आदि का अभाव हो तो हमें अपने भवन का प्रवेश

दिशा बोध चक्र



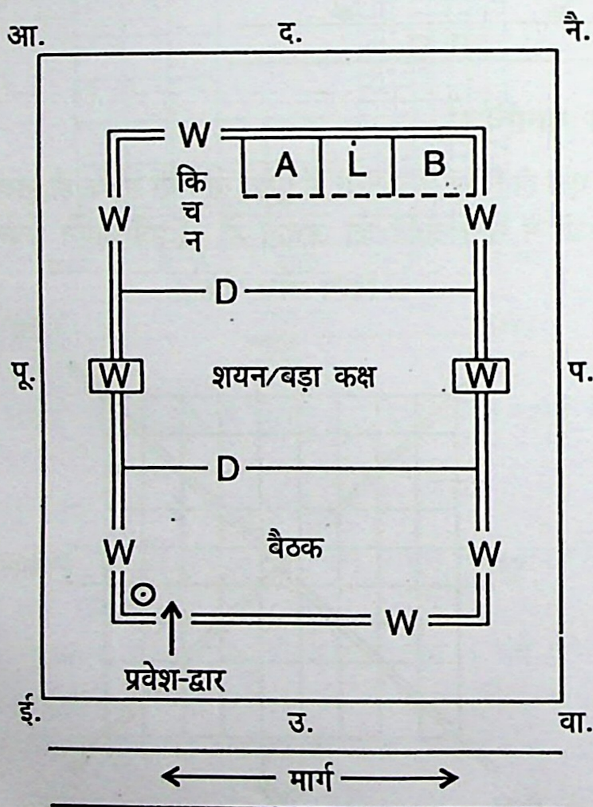
द्वार भी उसी दिशा में बनाना होगा तथा वास्तु-शास्त्र के निर्देशों के अनुरूप भवन का निर्माण निम्नांकिंत नक्शे के अनुसार करना शुभदायक होगा।

चूंकि हमें तीन ओर से हवा, प्रकाश एवं निकासी की पर्याप्त सुविधा नहीं है, अतः इसका प्रबंध भी हमें करना होगा। अर्थात् छत का ऊपरी हिस्सा कुछ न-कुछ खुला छोड़ना होगा। जिसका ध्यान नक्शे में पर्याप्त रखा गया है।

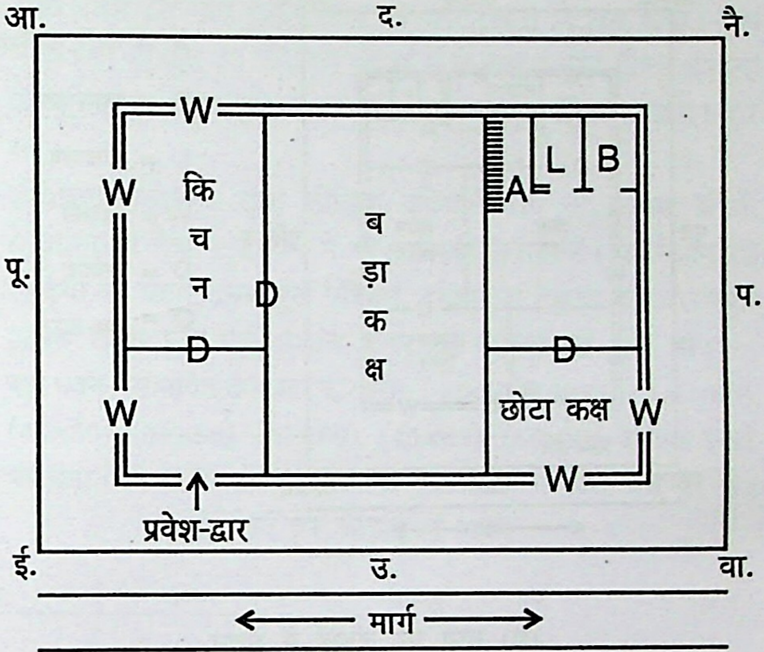
निम्न नक्शों की आदर्श संरचना $(15\times 22\frac{1}{2})$ माप है।

(1) **छोटा भवन**–संभावित आकार (फीट में)–(12×18), (12×20), (12×24) (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



जहां:— A = चढ़ाव या सीढ़ियां

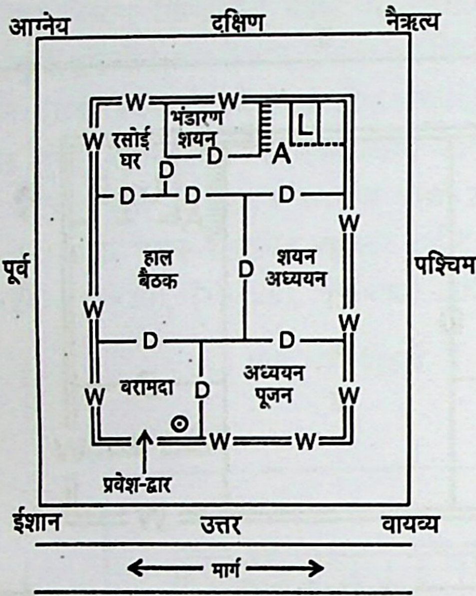
B = स्नानगृह ⊙ = जल स्थान

L = शौचालय W = खिड़की

D = दरवाजा

2. मध्यमाकार भवन—संभावित आकार (फीट में)—(20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शे की संरचना। (20×40) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

A = चढ़ाव, सीढ़ियां

B = स्नान गृह

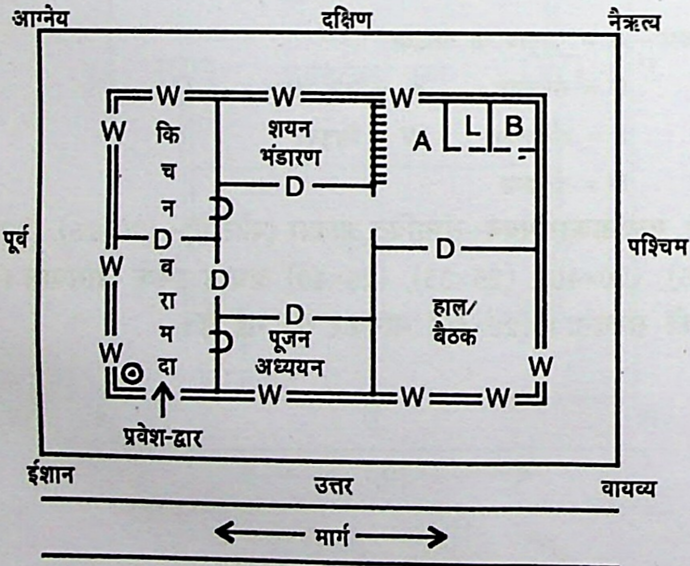
L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

⊙ = जल स्थान

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



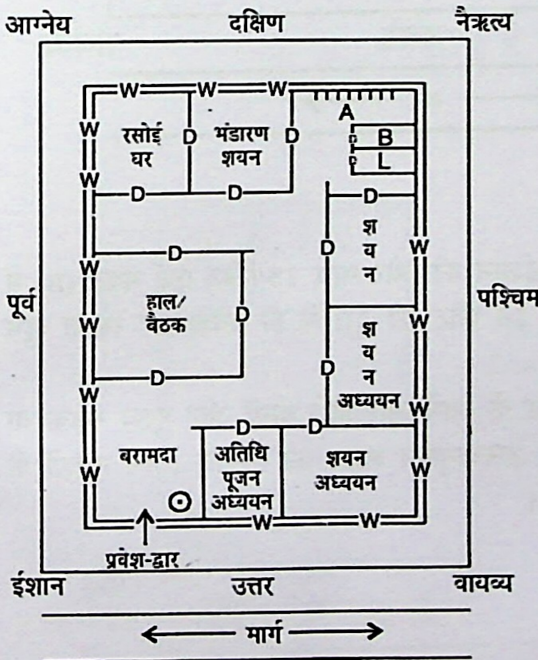
विशेष

(i) मुख्य प्रवेश-द्वार मात्र ईशान-उत्तर की ओर रखना ही शुभ होगा। जहां भवन (A) की कुल 20 फीट की चौड़ाई में से मात्र 7 फीट (उत्तर-ईशान) की ओर तथा भवन (B) में 13 फीट उत्तर-ईशान की ओर प्रवेश-द्वार रखें।

(ii) शौचालय, स्नानगृह तथा सीढ़ियां दक्षिण-नैऋत्य के बजाय अपनी सुविधानुसार नैऋत्य-पश्चिम में भी रखी जा सकती हैं। यह ध्यान रहे सीढ़ियों पर चढ़ते समय मुख पश्चिम, दक्षिण या नैऋत्य की ओर तथा उतरते समय मुख पूर्व, ईशान, उत्तर या वायव्य की ओर हो।

3. **बड़ा भवन**—संभावित आकार (फीट में)—(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40×60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

A = चढ़ाव, सीढ़ियां

B = स्नान गृह

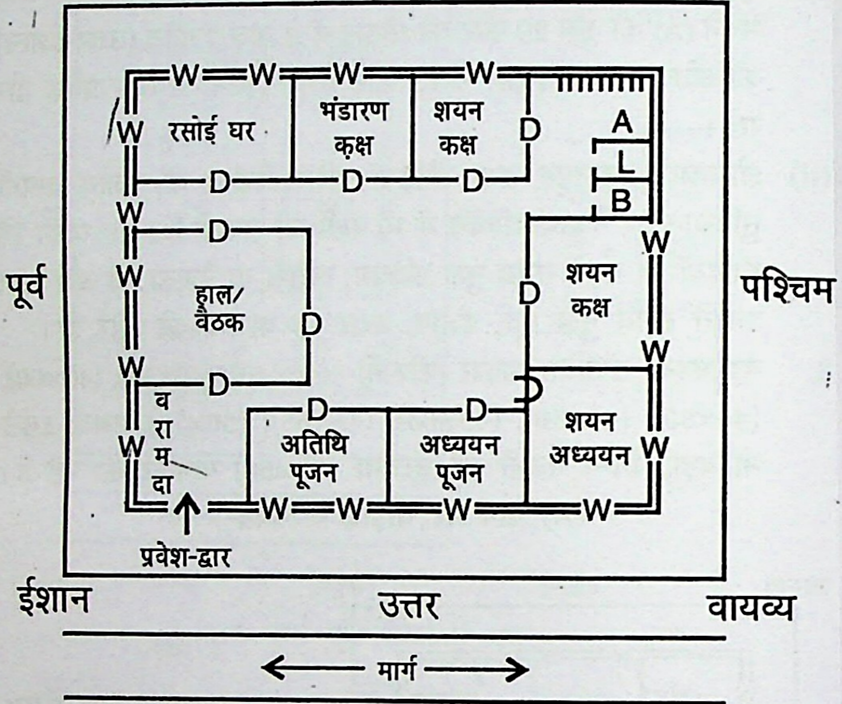
L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

⊙ = जल स्थान

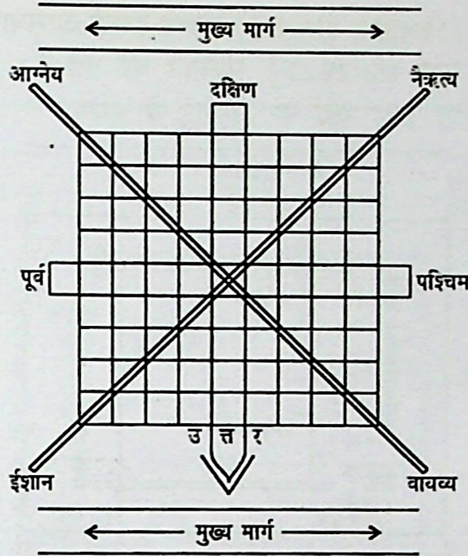
(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

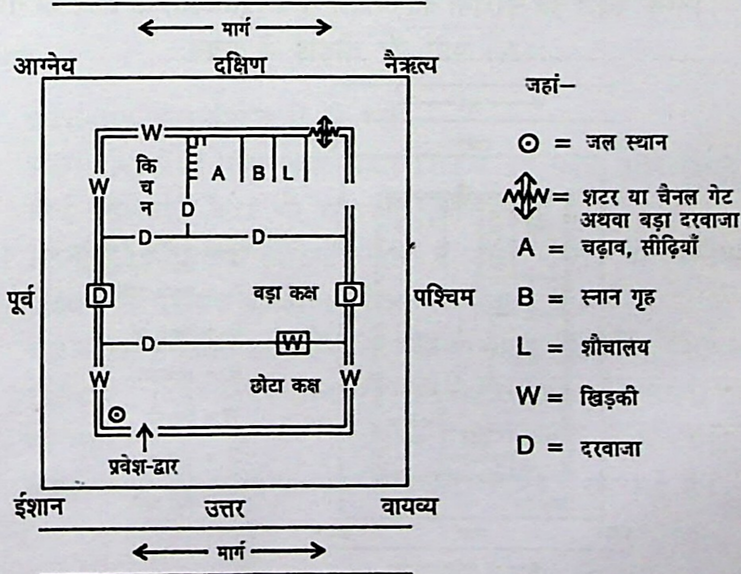
भवन (A) में उत्तर-ईशान की ओर मात्र 13 फीट एवं भवन (B) में इसी दिशा की ओर मात्र 20 फीट की दूरी में ही प्रवेश-द्वार रखना शुभ होगा।

जब आवासीय भूखंड के आगे और पीछे दोनों ओर मुख्य सड़क या आम रास्ते हों, तब वास्तु शास्त्रानुसार भवन का निर्माण निम्न नक्शों के अनुरूप करना शुभ होगा।



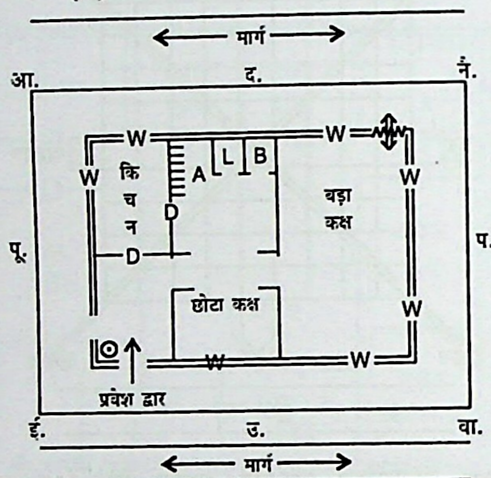
1. **छोटा भवन**—संभावित आकार (फीट में)—(12×18), (12×20), (12×24), (12×24)

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



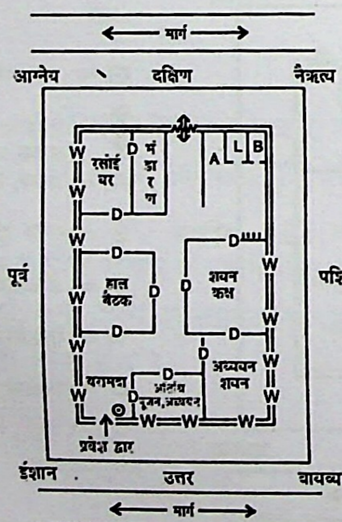
(15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शे की रचना माप 15×22 22$\frac{1}{2}$ मानकर की गई है।

(B) मार्ग पर लम्बाई में भवन



2. **मध्यमाकार भवन**—संभावित आकार (फीट में)—(20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शे की संरचना का आदर्श नाप (20×40) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



= शटर या चैनल गेट अथवा बड़ा दरवाजा

A = चढ़ाव, सीढ़ियाँ

B = स्नान गृह

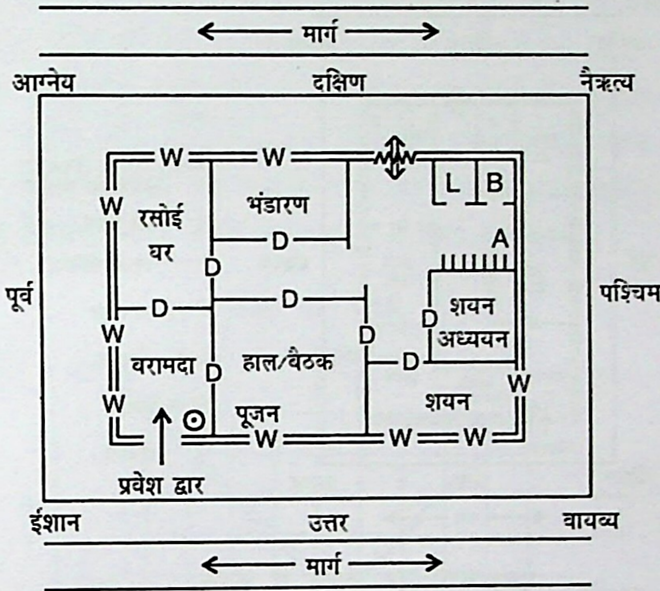
L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

⊙ = जल स्थान

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

(i) प्रवेश-द्वार उत्तर-ईशान में ही रखें।

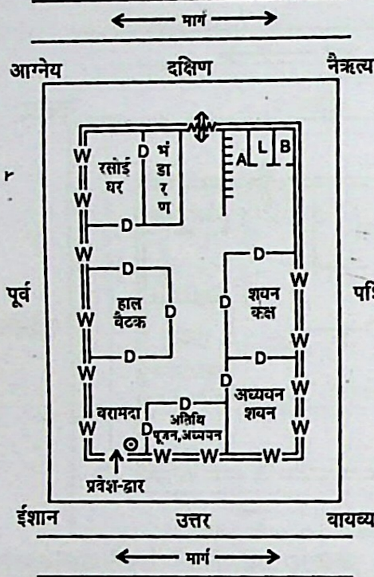
(ii) भवन (A) में 7 फीट तथा भवन (B) में 13 फीट उत्तर-ईशान के बीच प्रवेश-द्वार कहीं भी रखा जा सकता है।

(iii) स्नानगृह, शौचालय सीढ़ियां आदि में उसी परिसर दक्षिण-नैऋत्य, पश्चिम में परस्पर परिवर्तन किया जा सकता है।

3. **बड़ा भवन**—संभावित आकार (फीट में) (40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा।

निम्न नक्शे की संरचना माप (40×60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= शटर या चैनल गेट अथवा बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव, सीढ़ियां

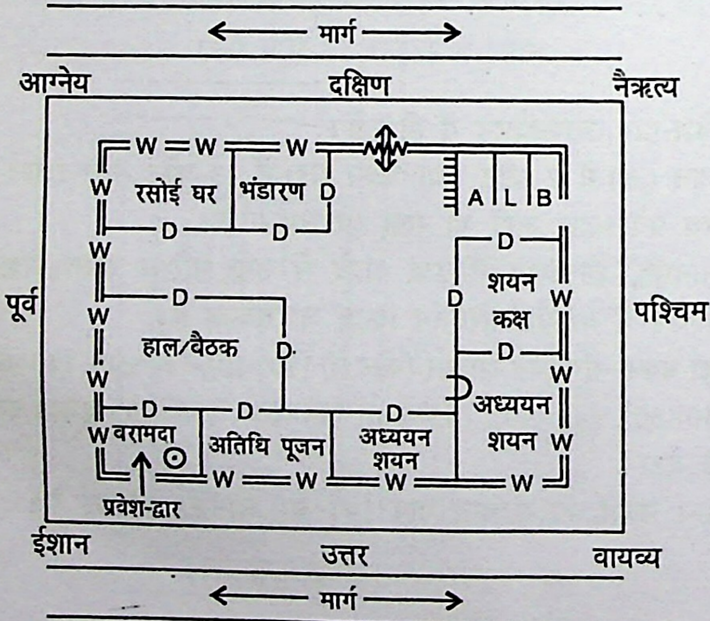
B = स्नान गृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

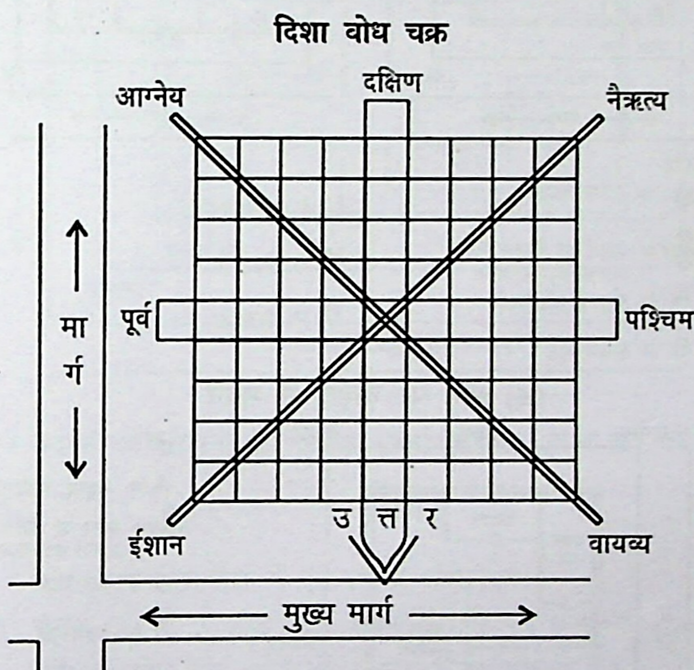


विशेष

भवन क्र. (A) में उत्तर-ईशान की ओर मात्र 13 फीट एवं भवन (B) में मात्र 20 फीट की दूरी में ही प्रवेश-द्वार होना चाहिए।

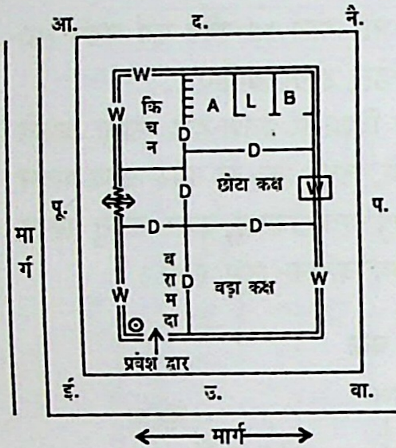
यदि आवासीय भूखंड में हम जिस दिशा में प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं, उसके दाहिने ओर एक अन्य मार्ग हो, तथा शेष दो ओर अन्य भवन आदि के कारण बंद हो तब पर्याप्त वायु एवं प्रकाश युक्त वास्तु संगत भवन का निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप कराना शुभ होगा।

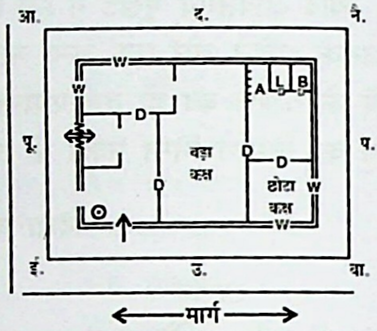
दिशा वोध चक्र



1. **छोटा भवन**–संभावित आकार (फीट में)–(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना ($15\times22\frac{1}{2}$) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन (B) मार्ग पर लंबाई में भवन





जहां—

⊙ = जल स्थान

W = शटर या चैनल गेट अथवा बड़ा दरवाजा

A = चढ़ाव, सीढ़ियां

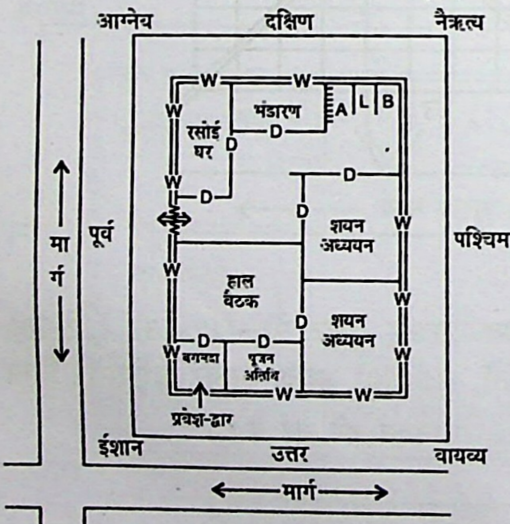
B = स्नान गृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

A = चढ़ाव, सीढ़ियाँ

W = शटर या चैनल गेट अथवा बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

B = स्नान गृह

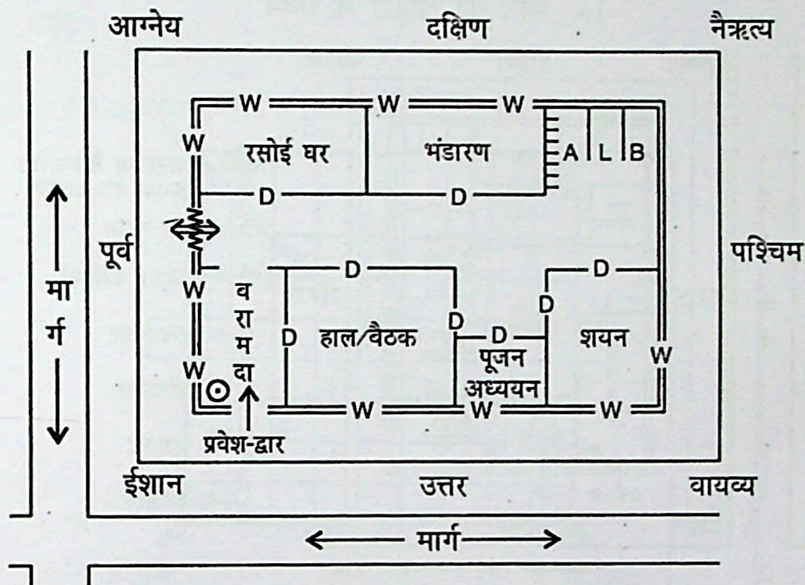
L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

2. मध्यमाकार भवन—संभावित आकार (फीट में)—(20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40) अथवा इनके आसपास।

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



निम्न नक्शों की संरचना का आदर्श नाम (20×40) मान कर की गई है।

विशेष

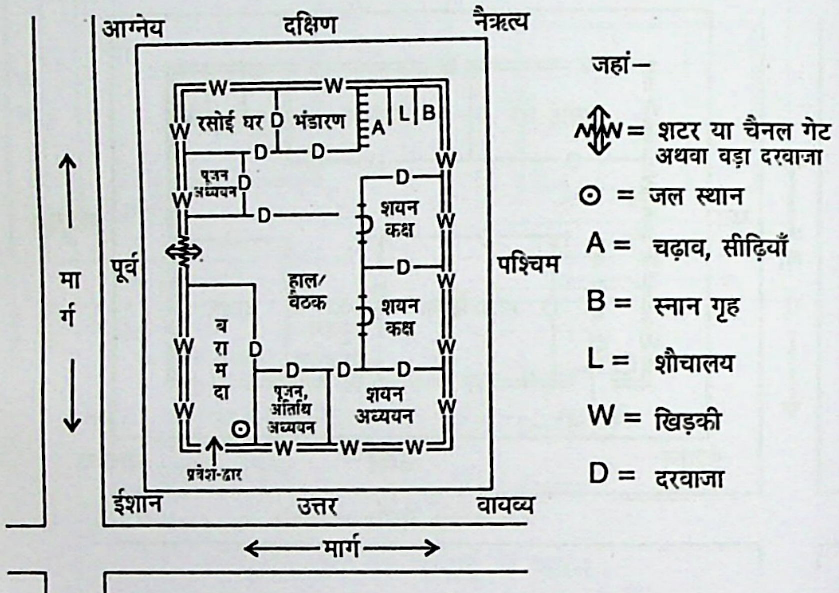
(i) प्रवेश-द्वार उत्तर-ईश में ही रखना शुभ होगा।

(ii) भवन (A) में 7 फीट तथा भवन (B) में 13 फीट की ईशान-उत्तर दूरी में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

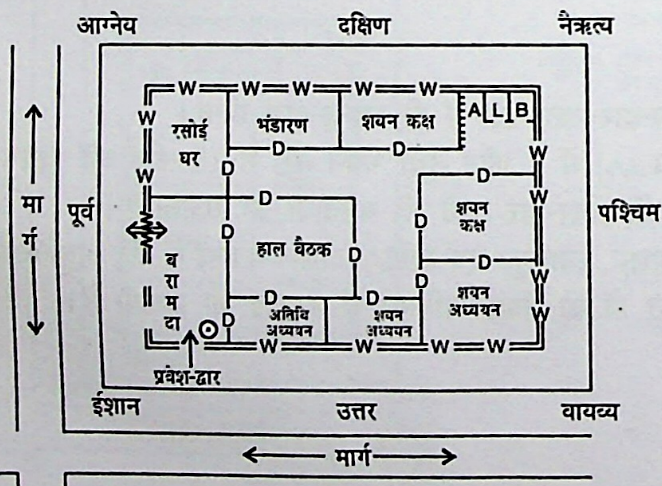
(iii) शौचालय, स्नानगृह एवं सीढ़ियां दक्षिण-नैऋत्य में यदि असुविधाजनक प्रतीत हो तो नैऋत्य-पश्चिम में बनवाई जा सकती हैं।

3. बड़ा भवन–संभावित आकार (फीट में)–(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40×60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन

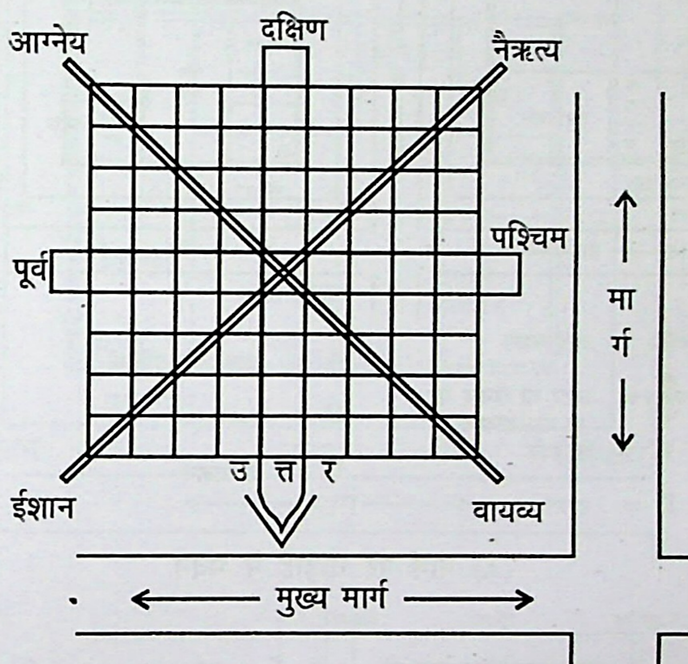


(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

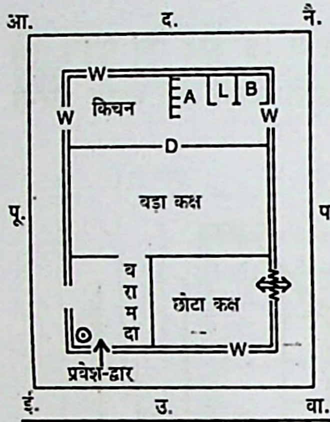
भवन (A) में प्रवेश-द्वार हेतु उत्तर-ईशान में 13 फीट एवं भवन (B) में प्रवेश-द्वार हेतु 20 फीट की दूरी में से किसी स्थान का चयन करना चाहिए।

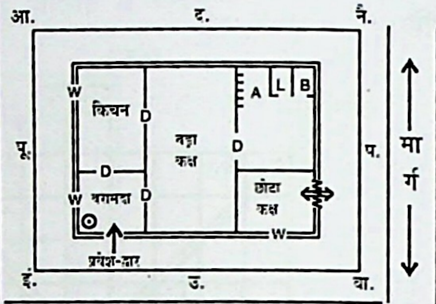


आवासीय भूखंड में हम जिस ओर प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं, उसके बायीं ओर एक अन्य मार्ग हो, तथा शेष दोनों ओर अन्य भवनादि के कारण बंद हो तब वायु एवं प्रकाश युक्त वास्तुशास्त्र संगत भवन निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप करवाना चाहिए।

1. **छोटा भवन**–संभावित आकार (फीट में)–(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शे की संरचना (मानक) $15 \times 22\frac{1}{2}$ वर्ग फीट है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन　　(B) मार्ग पर लंबाई में भवन





⊙ जल स्थान

(shutter symbol) = शटर या चैनल गेट या बड़ा दरवाजा

W = खिड़की

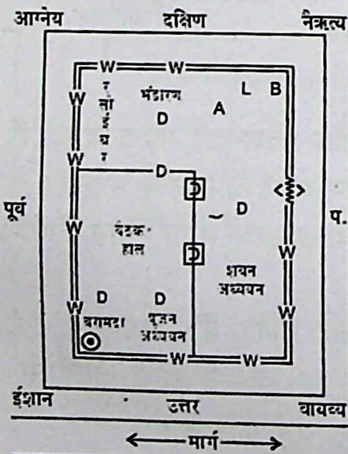
D = दरवाजा

A = चढ़ाव या सीढ़ियाँ

B = स्नान गृह

L = शौचालय

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

⊙ = जल स्थान

(shutter symbol) = शटर या चैनल गेट अथवा बड़ा दरवाजा

A = चढ़ाव, सीढ़ियां

B = स्नान गृह

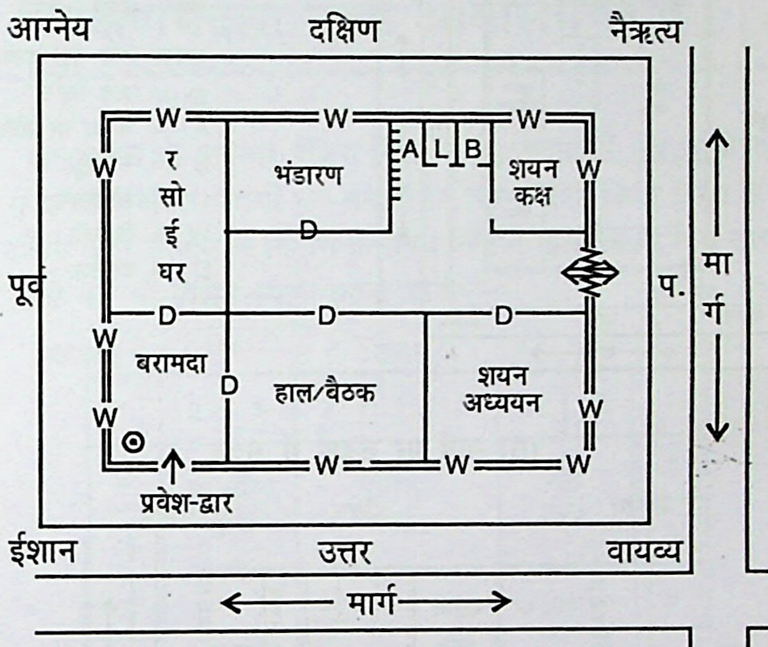
L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

2. मध्यमाकार भवन–संभावित आकार (फीट में)–(20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40) अथवा इनके आसपास।

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

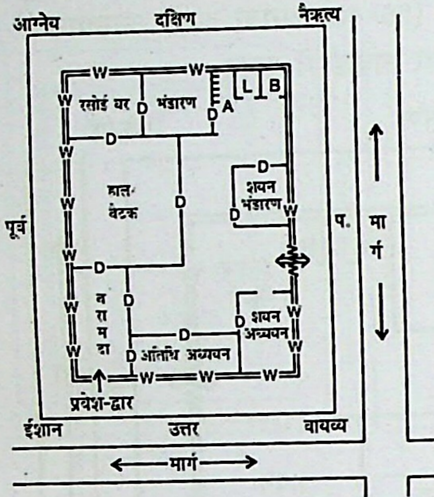
(i) प्रवेश-द्वार उत्तर-ईशान में ही रखना शुभ होगा।

(ii) भवन (A) में 7 फीट तथा भवन (B) में 13 फीट उत्तर-ईशान की ओर प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(iii) शौचालय स्नानगृह एवं सीढ़ियां दक्षिण-नैॠत्य में असुविधाजनक हों तो नैॠत्य-पश्चिम में रखी जा सकती हैं।

3. बड़ा भवन–संभावित आकार (फीट में)–(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40×60) वर्ग फीट मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां :-

= शटर चैनल गेट अथवा अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

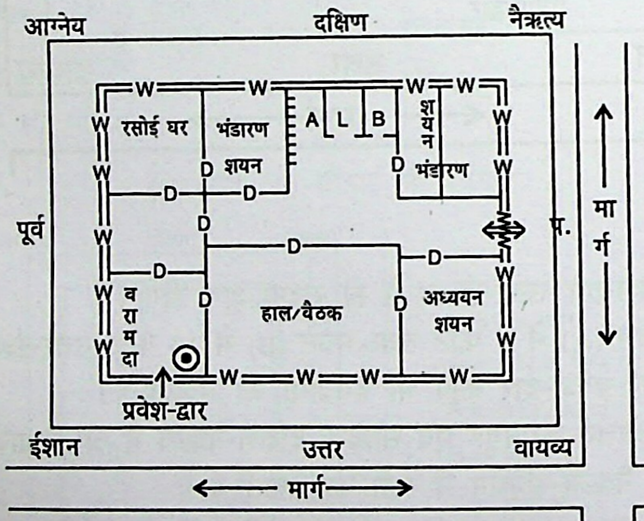
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

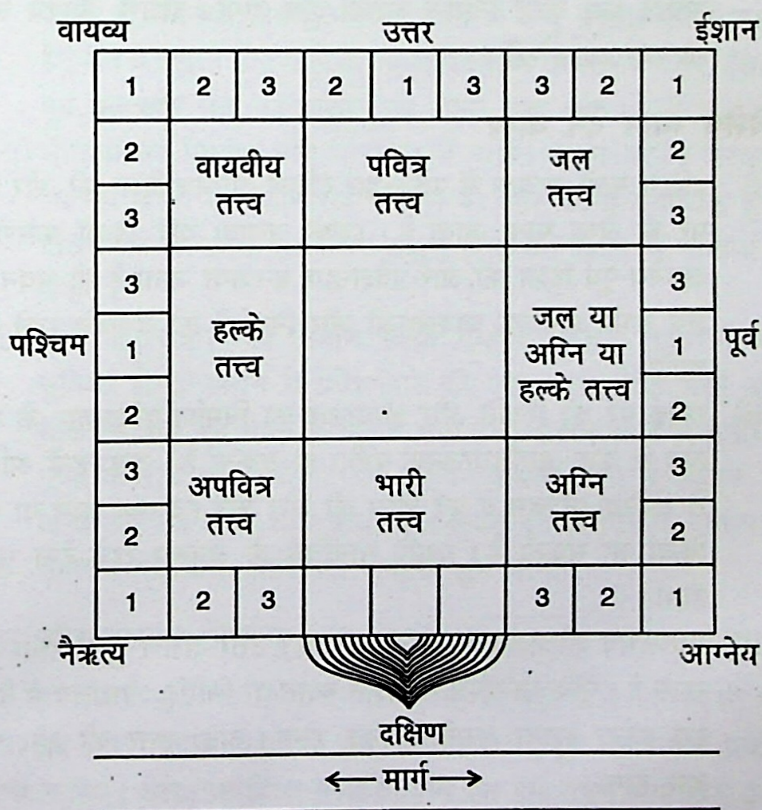


विशेष

भवन (A) में प्रवेश-द्वार हेतु ईशान-उत्तर में (13) फीट एवं भवन (B) में इसी दिशा में 20 फीट की दूरी के अंदर ही स्थान चयन करना चाहिए।

दक्षिण दिशा मुखी आवास विशेष

वास्तुशास्त्र के अनुसार दक्षिण दिशा मुखी आवास में पंच तत्त्वों के रूप में उनसे संबंधित पदार्थों का समायोजन निम्नानुसार किया जाता है। हमें दक्षिण मुखी आवास के निर्माण के समय निर्दिष्ट मानचित्र के साथ-साथ इन बातों का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए—



(i) दक्षिण दिशा मुखी आवास में दक्षिण-नैऋत्य की अपेक्षा दक्षिण आग्नेय में प्रवेश-द्वार उत्तम होता है। किंतु यह ध्यान रखें कि हमारे प्रवेश-द्वार के सम्मुख यदि कोई पेड़, बिजली का खंबा, अन्य भवन का कोई खंबा, गड्ढा, पहाड़ी, (टीला) आदि इस प्रकार हो जो द्वार और मार्ग के बीच अवरोध उत्पन्न करता हो अथवा उसकी छ़ाया प्रवेश-द्वार पर पड़ती हो तब या तो उक्त अवरोधादि को हटाये अथवा प्रवेश-द्वार दक्षिण-नैऋत्य दिशा में बनवाए। आवासीय भवन में प्रवेश- द्वार मध्य में नहीं होते।

(ii) ऊपरी मंजिलों के लिए वास्तुदृष्टि यह है, कि वह निम्न तल के समान किंतु निम्न तल से कम ऊंचा है। अर्थात् प्रत्येक मंजिल की न्यूनतम ऊंचाई कम करते निर्माण कराना शुभ होगा। दक्षिण, नैऋत्य ऊंचा रहे यह ध्यान रखें।

विशेष ध्यान देने योग्य

(i) दक्षिण मुखी आवास में प्रवेश-द्वार दक्षिण आग्नेय दिशा की ओर होने पर ही श्रेष्ठ माना जाता है। इसके अलावा यदि किसी कारण से आग्नेय-पूर्व दिशा की ओर प्रवेश-द्वार बनवाया जाता है तो भवन की शेष सभी आंतरिक व्यवस्थाओं और निर्माणों को यथावत रहने देना चाहिए।

(ii) रसोई घर की स्थिति और शौचालय का निर्माण प्रवेश-द्वार के पास होने से कुछ असुविधाजनक प्रतीत हो सकता है। अतः इन्हें अधिक से अधिक पश्चिम व पूर्व दिशा की ओर कुछ हद तक आगे या पीछे किया जा सकता है। यद्यपि मानचित्र के अनुरूप रहने देना सुखद होगा।

(iii) यथासंभव शौचालय में सीटिंग (बैठक) उत्तर-दक्षिण मुखी होना शुभ रहता है। चूंकि मानचित्र में दर्शित स्थान पर निर्मित शौचालय में बैठक इस प्रकार रखना असुविधाज़नक होगा। अतः उत्तर की ओर रखें, शुभ होगा।

(iv) सैप्टिक टैंक को दक्षिण-नैऋत्य दिशा में ही भवन के बाहरी ओर अथवा अंदर की बनवाया जा सकता है। यथासंभव शौचालय को भवन के बाहरी परिसर में बनवाना व्यावहारिक एवं वास्तु दोनों ही प्रकार से शुभ होगा।

(v) जल स्थान जहां तक संभव हो अंडर ग्राउंड रहे, ईशान की ओर मानचित्र में दर्शित स्थान पर भवन के अंदर या बाहर की ओर भी बनवाया जा सकता है। किसी विशेष मजबूरी के चलते यदि आगे-पीछे करना आवश्यक हो तो उत्तर दिशा की ओर रखना अधिक शुभ होगा, जबकि पूर्व की ओर ले जाना मध्यम शुभ होगा।

(vi) यदि भवन के दायें, बायें और पीछे अर्थात् तीनों ओर अन्य भवन आदि हों, जिनके कारण अभीष्ट भवन में वायु प्रकाश की व्यवस्था हेतु छत को खुला छोड़ना होगा। ऐसी स्थिति में यथासंभव उत्तर, ईशान, पूर्व की ओर छत को खुला रखा जाना शुभ होगा।

(vii) सीढ़ियों का निर्माण यदि मानचित्र में दर्शित स्थान पर न करवाया जा रहा हो तो यह ध्यान रखें पश्चिम की ओर चढ़ना सर्वाधिक शुभ, दक्षिण-नैऋत्य उत्तम, पूर्व-उत्तर अशुभ होता है। ईशान में सीढ़ियां न बनाएं।

(viii) यदि चहारदीवारी का निर्माण किया गया है, अथवा बागवानी की सुविधा हो तो भवन में प्रवेश-द्वार की ओर भारी, चौड़े पत्तों और मोटे तने वाले पेड़ भवन के पिछले भाग उत्तर-ईशान आदि में सुगंधित पुष्पों के पौधे तथा दाहिनी ओर पश्चिम-वायव्य दिशा में अशोक या अन्य ऊंचे पेड़ आदि तथा बायीं ओर स्थित पूर्व आग्नेय के आसपास सामान्य पेड़-पौधे आदि का लगाना शुभ होगा।

ढाल और उसका निर्माण

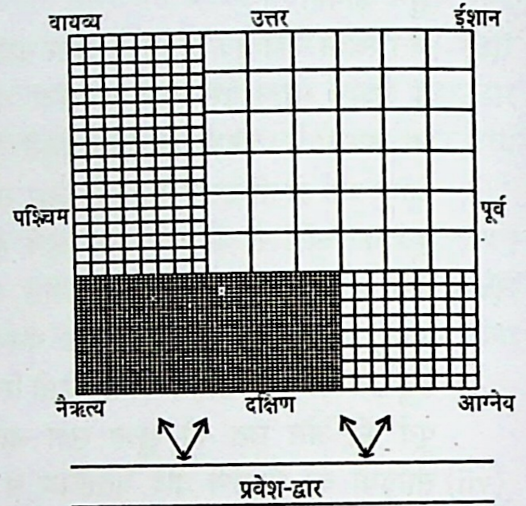
हम जिस भूमि पर भवन बनाने जा रहे हैं, प्रकृति ने उसे किसी भी प्रकार का स्वरूप प्रदान किया हो, उसे हमें अपने अनुकूल बनाकर ही प्रयोग करना चाहिए। अतः इस दिशा मुखी आवास हेतु हमें संपूर्ण भवन का ढाल

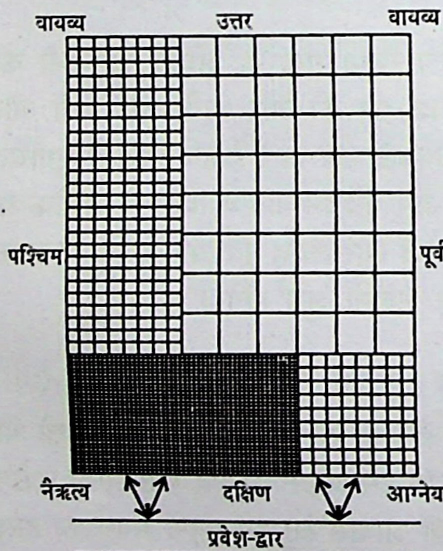
इस प्रकार निर्मित कराना (कृत्रिम रूप से) अधिक शुभत्व उत्पन्न करने वाला होगा। आवास चाहे अत्यंत छोटा हो, मध्यमाकार हो या बड़ा हो संपूर्ण निर्मित भूतल को दिशानुरूप निम्न चित्र के अनुरूप ढाल का निर्माण करावे।

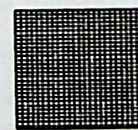
(i) लंबाई और चौड़ाई में स्थित कुल दूरी को 9-9 भागों में विभाजित किया।

(ii) निर्दिष्ट रूप से दिशानुरूप—

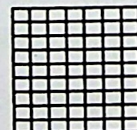
(A) सर्वोच्च भूमि को कम-से-कम 6 इंच तथा अधिक से अधिक 10-12 इंच तक ऊंचा करें।



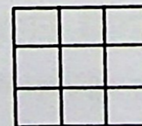




जहां—
सर्वोच्च भूमि
(दक्षिण, नैऋत्य)



सामान्य उच्च
(आग्नेय, पश्चिम वायव्य)



निम्न तल
(उत्तर, ईशान, पूर्व)

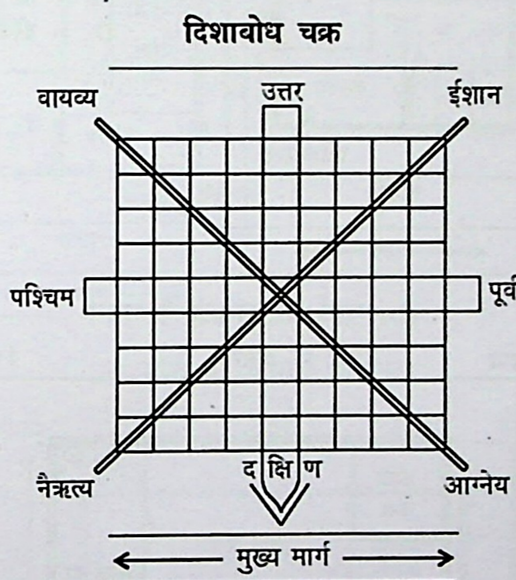
(B) सामान्य उच्च भूमि को कम-से-कम 4 इंच और अधिक-से-अधिक 6-8 इंच तक ऊंचा करें।

(C) निम्न भूमि को समतल ही बना रहने दें।

आवासीय मानचित्र

जब एक ही दिशा दक्षिण में मुख्य मार्ग या सड़क हो तथा अन्य शेष सभी दिशाओं में मार्ग आदि का अभाव हो तो हमें अपने भवन का प्रवेश-द्वार भी उसी दिशा में बनाना होगा तथा वास्तुशास्त्र के निर्देशों के अनुरूप भवन का निर्माण निम्नांकित नक्शे के अनुसार करना शुभदायक होगा।

दिशाबोध चक्र

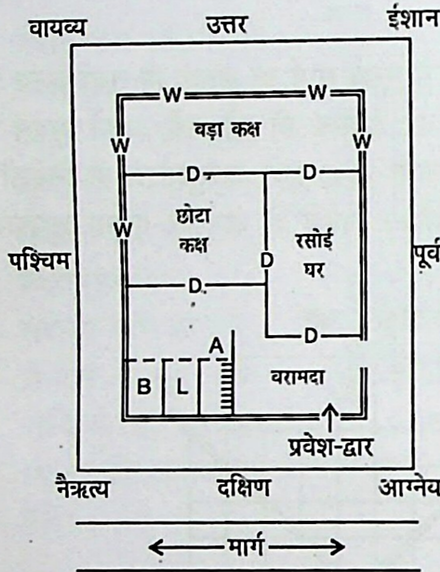


चूंकि हमें तीन ओर से हवा, प्रकाश एवं निकासी की पर्याप्त सुविधा नहीं है, अतः इसका प्रबंध भी हमें करना होगा। अर्थात् छत का ऊपरी हिस्सा कुछ न कुछ खुला छोड़ना होगा। जिसका ध्यान नक्शे में पर्याप्त रखा गया है।

निम्न नक्शों की आदर्श संरचना ($15 \times 22\frac{1}{2}$) माप है।

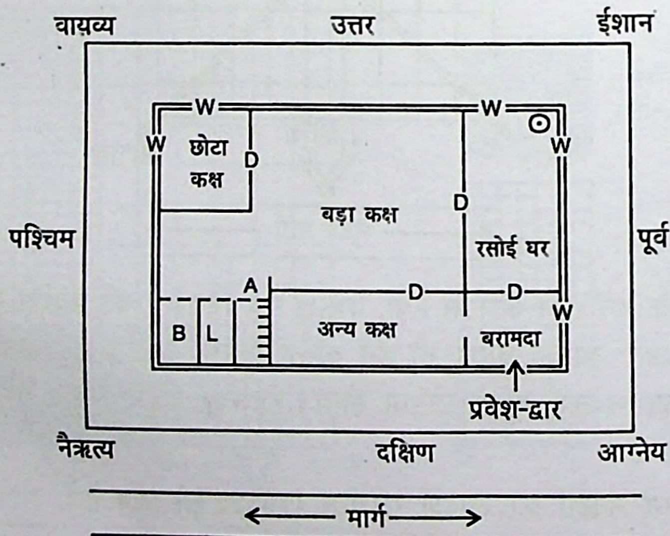
1. **छोटा भवन**–संभावित आकार (फीट में)–(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



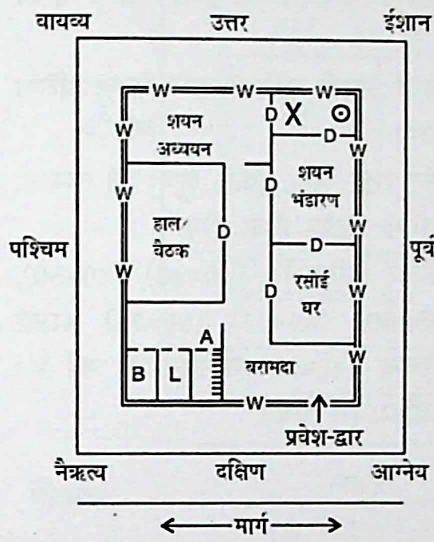
जहां–
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
⊙ = जल स्थान
W = खिड़की
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



2. मध्यमाकार भवन– संभावित आकार (फीट में)–(20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शे की संरचना (20×40) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

⊙ = जल स्थान

X = पूजा गृह

A = सीढ़ियां या चढ़ाव

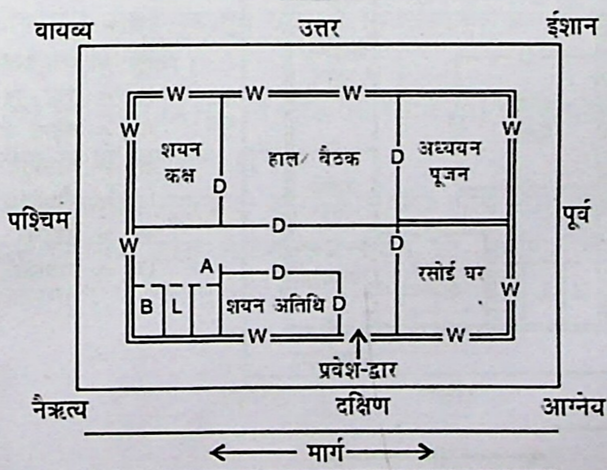
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट आग्नेय-दक्षिण में प्रवेश-द्वार किसी भी स्थान पर बनवाया जा सकता है।

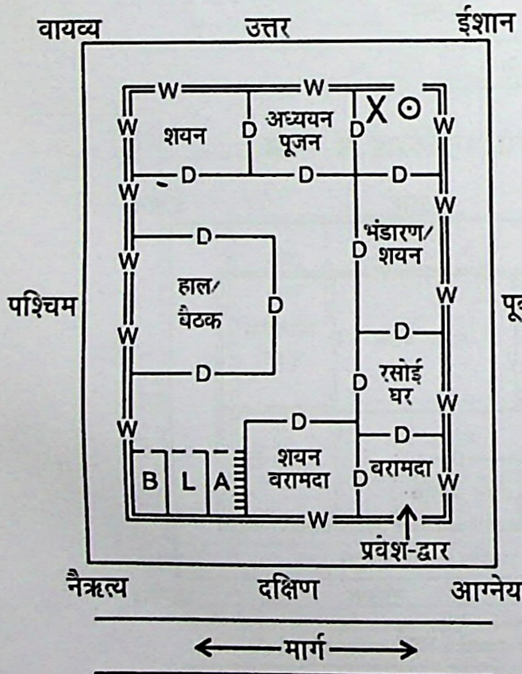
(ii) भवनों में जल स्थान भले ही किसी कक्ष में हो, ईशान कोण में ही होना शुभ होगा।

(iii) शौचालय, स्नान गृह और सीढ़ियां अपनी सुविधानुसार किन्तु दक्षिण नैऋत्य में ही बनवाना शुभ होगा।

(iv) यदि प्रवेश-द्वार नैऋत्य की ओर रखा जाए (कम शुभ) तो क्रमशः (B), (L) और (A) को दक्षिण में रखना ठीक होगा।

3. बड़ा भवन – संभावित आकार (फीट में)–(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शे की संरचना (40×60) मानकर की गई है।

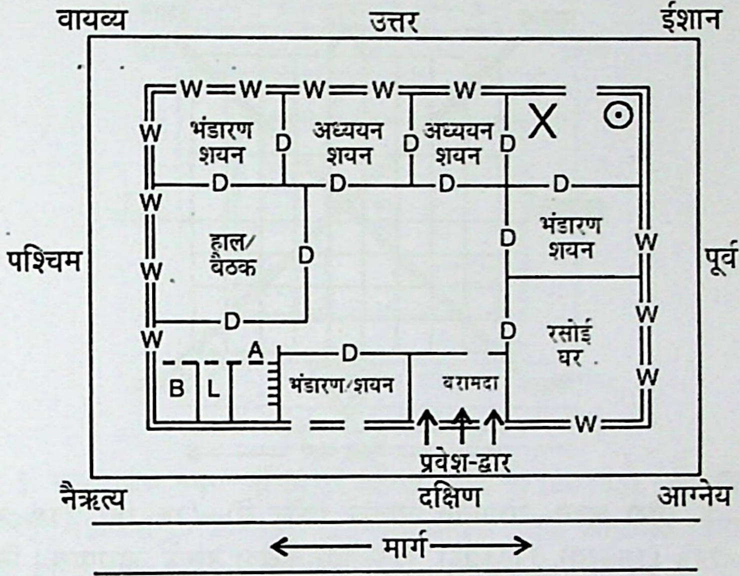
(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

⊙ = जल स्थान
X = पूजा गृह
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट दक्षिण-आग्नेय की ओर प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नान गृह एवं सीढ़ियां सुविधाजनक क्रम में दक्षिण-नैऋत्य में ही ठीक होंगी।

(3) रसोई घर भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट के आग्नेय कोण में ही बनवाना शुभ होगा।

जब आवासीय भूखंड के आगे और पीछे दोनों ओर मुख्य सड़क या आम रास्ते हों, तब वास्तु शास्त्रानुसार भवन का निर्माण निम्न नक्शों के अनुरूप करना शुभ होगा।

विशेष

(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट आग्नेय-दक्षिण में प्रवेश-द्वार किसी भी स्थान पर बनवाया जा सकता है।

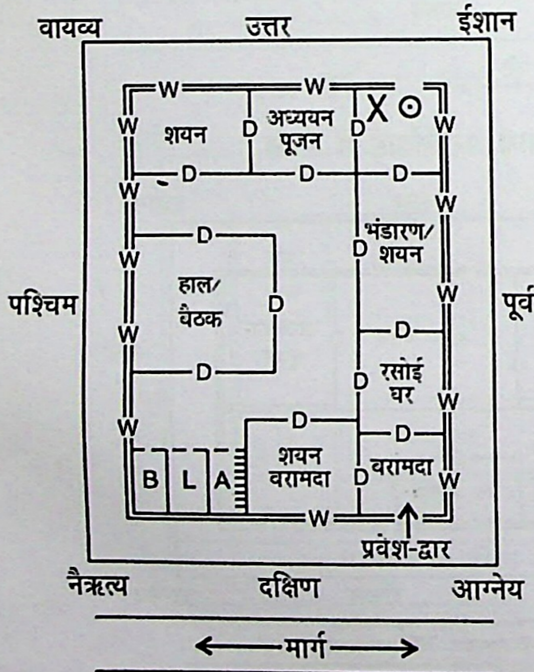
(ii) भवनों में जल स्थान भले ही किसी कक्ष में हो, ईशान कोण में ही होना शुभ होगा।

(iii) शौचालय, स्नान गृह और सीढ़ियां अपनी सुविधानुसार किन्तु दक्षिण नैऋत्य में ही बनवाना शुभ होगा।

(iv) यदि प्रवेश-द्वार नैऋत्य की ओर रखा जाए (कम शुभ) तो क्रमशः (B), (L) और (A) को दक्षिण में रखना ठीक होगा।

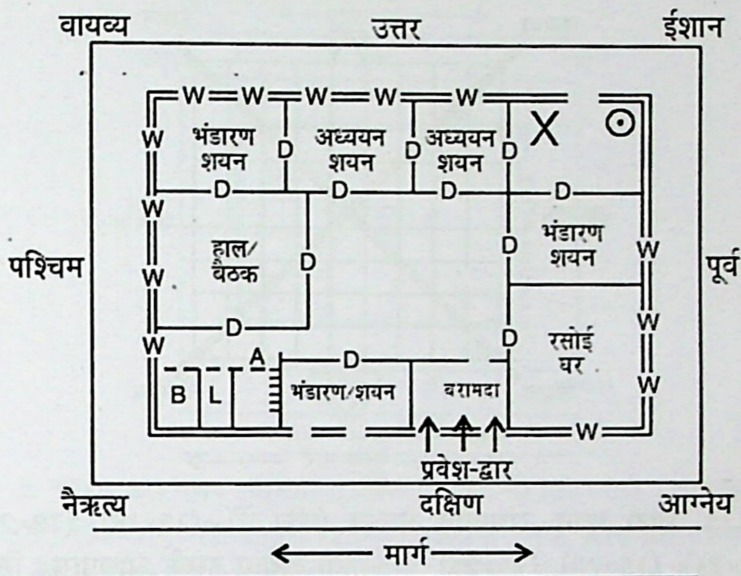
3. बड़ा भवन – संभावित आकार (फीट में)–(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शे की संरचना (40×60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–
⊙ = जल स्थान
X = पूजा गृह
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



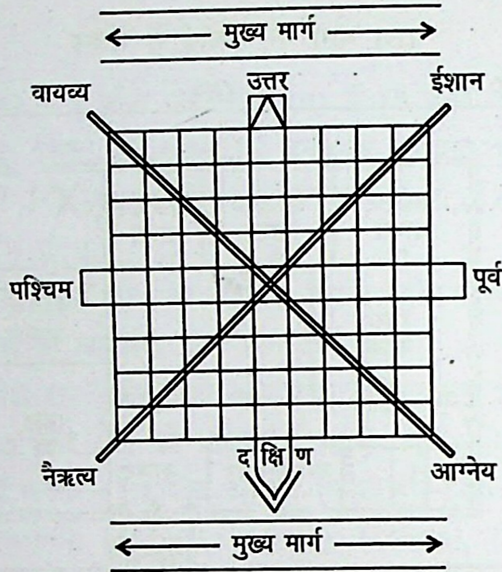
विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट दक्षिण-आग्नेय की ओर प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नान गृह एवं सीढ़ियां सुविधाजनक क्रम में दक्षिण-नैर्ऋत्य में ही ठीक होंगी।

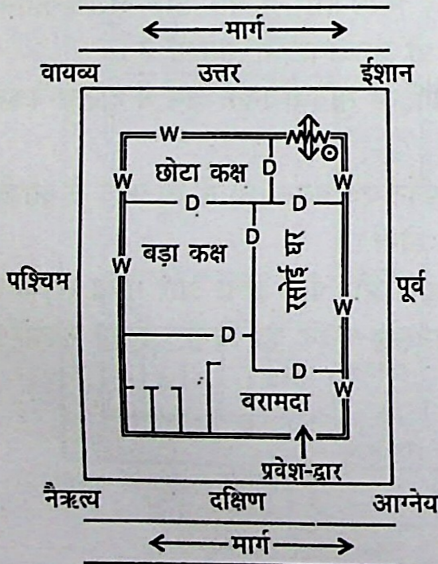
(3) रसोई घर भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट के आग्नेय कोण में ही बनवाना शुभ होगा।

जब आवासीय भूखंड के आगे और पीछे दोनों ओर मुख्य सड़क या आम रास्ते हों, तब वास्तु शास्त्रानुसार भवन का निर्माण निम्न नक्शों के अनुरूप करना शुभ होगा।



1. **छोटा भवन**—संभावित आकार (फीट में)—(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शे की रचना माप 15×22$\frac{1}{2}$ मानकर की गई है।

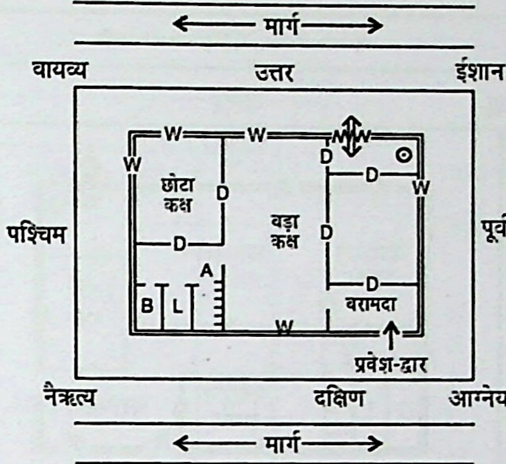
(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

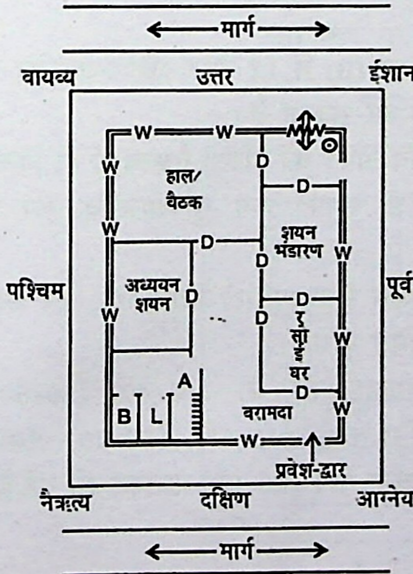
= शटर चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा
⊙ = जल स्थान
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



2. मध्यमाकार भवन—संभावित आकार (फीट में) (20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना का आदर्श नाप (20×40), मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

= शटर चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

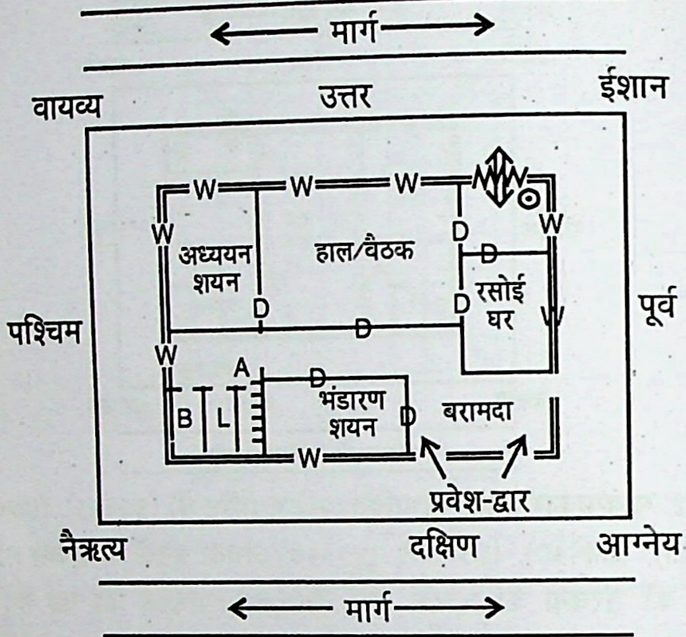
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

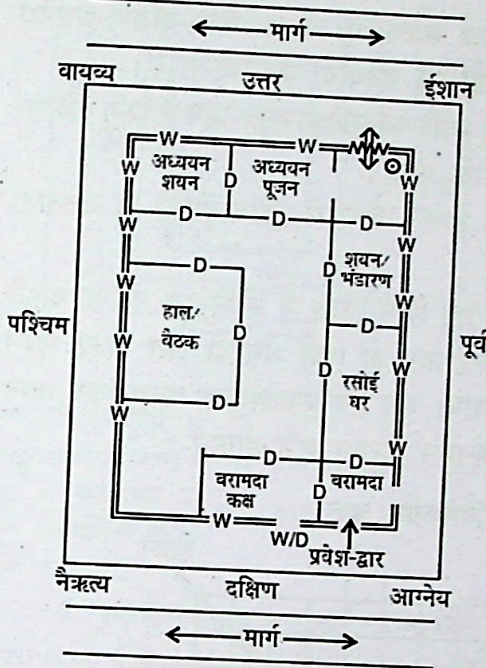
(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट दक्षिण-आग्नेय में कहीं भी प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह और चढ़ाव आदि को दक्षिण-नैऋत्य में ही किसी कोने बनवाना चाहिए भले ही उनका क्रम सुविधाजनक रूप में आगे-पीछे हो जाए।

(iii) भवन (B) में प्रवेश-द्वार दोनों ओर (चित्रानुसार) अथवा एक ओर कहीं भी सुविधाजनक ढंग से निर्मित करावें।

3. **बड़ा भवन–** संभावित आकार (फीट में)–(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शे की संरचना माप (40×60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां :-

= शटर चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

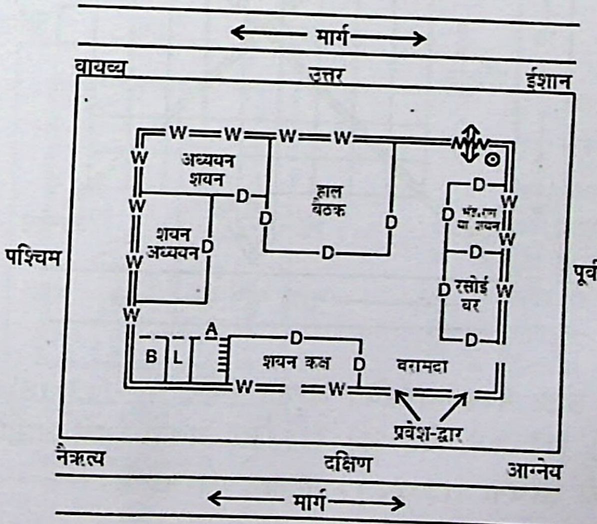
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

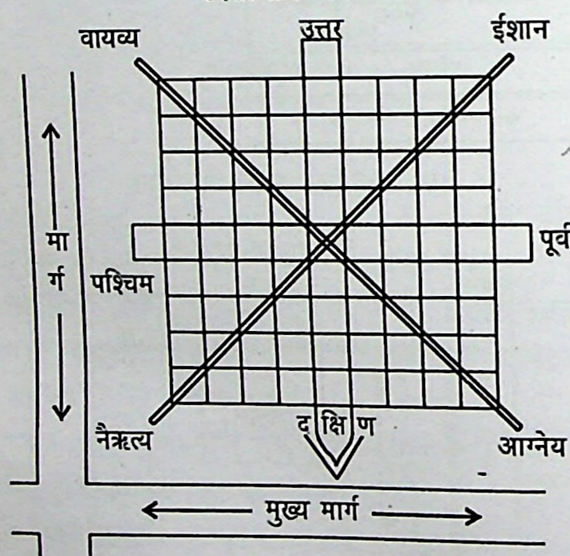
(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट दक्षिण-आग्नेय की दूरी में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नान एवं चढ़ाव आदि को सुविधाजनक क्रम में किंतु दक्षिण-नैऋत्य में ही बनवाना ठीक होगा।

(iii) जल स्थान को यत्नपूर्वक ईशान कोण में (चित्रानुसार) ही बनवाना ठीक होगा।

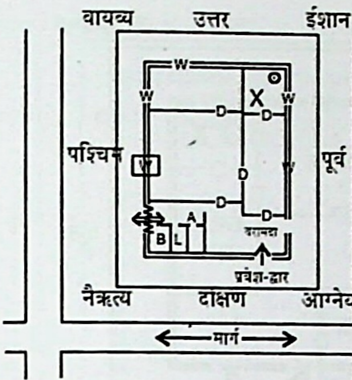
यदि आवासीय भूखंड में हम जिस दिशा में प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं, उसके दाहिने ओर एक अन्य मार्ग हो तथा शेष दो ओर अन्य भवन आदि के कारण बंद हो तब पर्याप्त वायु एवं प्रकाशयुक्त वास्तुसंगत भवन का निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप कराना शुभ होगा।

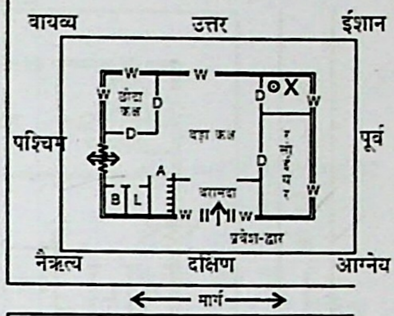
दिशाबोध चक्र



1. **छोटा भवन**—संभावित आकार (फीट में)—(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना ($15\times22\frac{1}{2}$) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन　　　(B) मार्ग पर लंबाई में भवन





जहां—X पूजास्थल

⇕ = शटर, चैनल गेट या अन्य दरवाजा

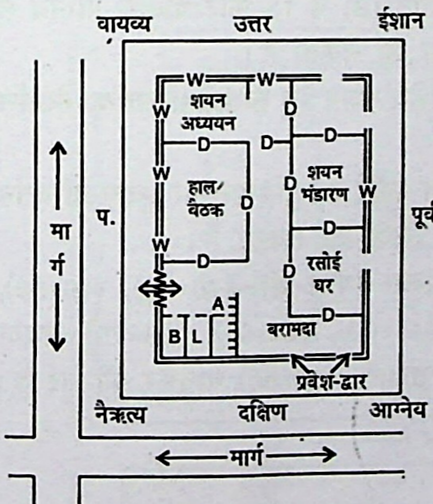
⊙ = जल स्थान　　　L = शौचालय

A = सीढ़ियां चढ़ाव　　　W = खिड़की

B = स्नानगृह　　　D = दरवाजा

2. मध्यमाकार भवन—संभावित आकार (फीट में) (20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40) अथवा इनके आसपास।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

⇕ = शटर चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

X = पूजा स्थल

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

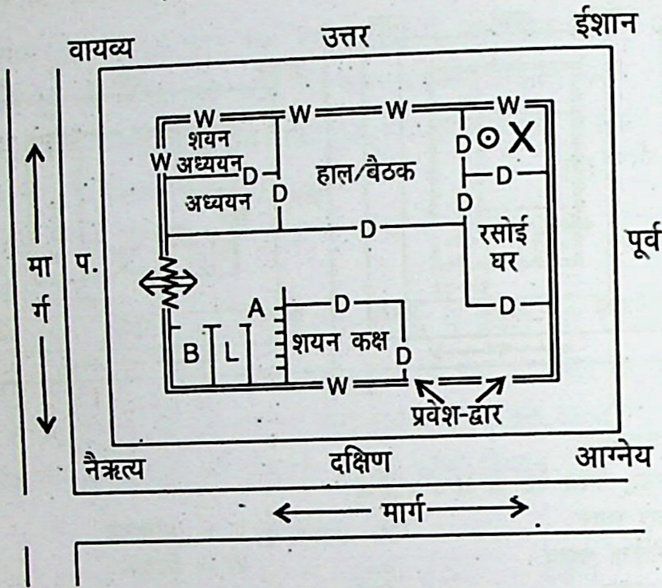
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



निम्न नक्शों की संरचना के आदर्श नाम (20×40) मानकर की गई है।

विशेष

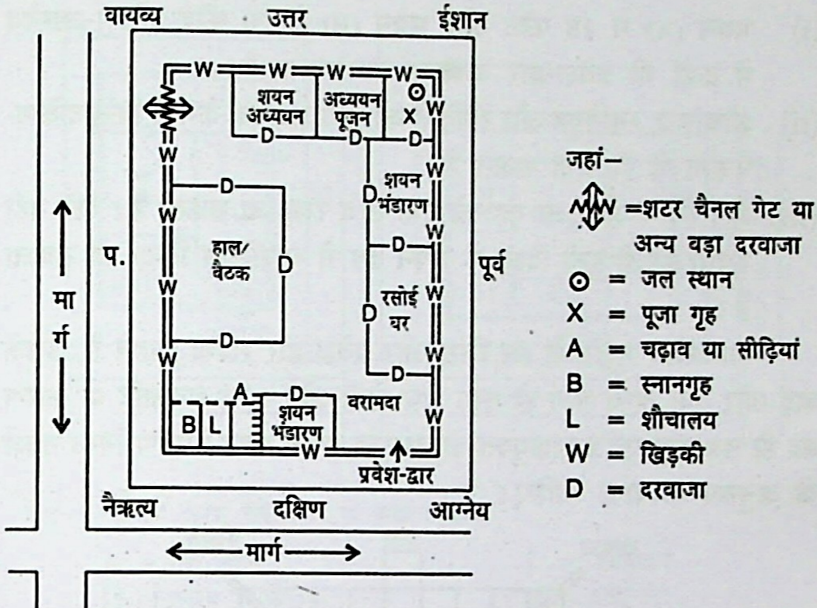
(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट दक्षिण-आग्नेय में प्रवेश द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) ईशान कोण में जल स्थान एवं देव स्थान हेतु स्वतंत्र परिसर का निर्माण अत्यंत शुभ होगा।

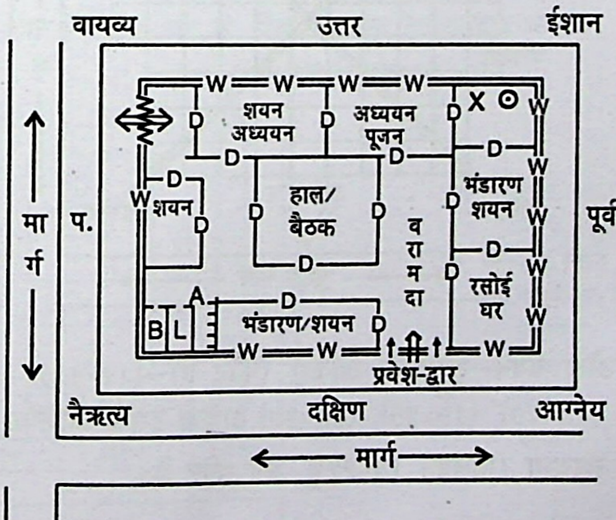
(iii) शौचालय, स्नानगृह एवं चढ़ाव आदि का सुविधानुसार स्थान-परिवर्तन दक्षिण-नैऋत्य परिसर में ही किया जा सकता है।

3. बड़ा भवन—संभावित आकार (फीट में)—(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40×60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



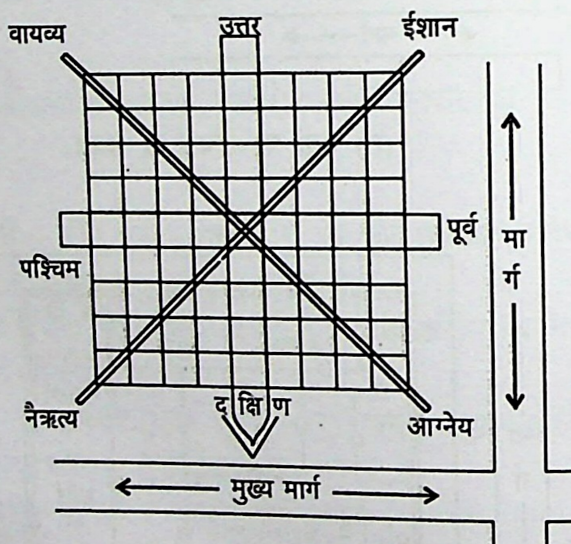
विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट और भवन (B) में 20 फीट दक्षिण-आग्नेय में कहीं भी प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह और सीढ़ियों को सुविधाजनक क्रम में किंतु दक्षिण-नैऋत्य में ही बना सकते हैं।

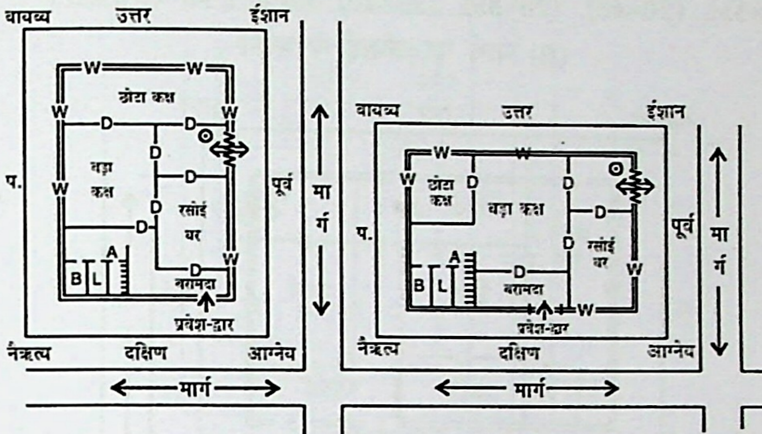
(iii) जल स्थान एवं पूजा गृह को एक साथ रखा जा सकता है। यदि नहीं रखना हो तो इसी दिशा में अपने ढंग से व्यवस्थित किया जा सकता है।

आवासीय भूखंड में हम जिस ओर प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं, उसके बाईं ओर एक अन्य मार्ग हो तथा शेष दोनों ओर अन्य भवनादि के कारण बंद हो तब वायु एवं प्रकाशयुक्त वास्तुशास्त्र संगत भवन निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप करवाना चाहिए।



1. **छोटा भवन**–संभावित आकार (फीट में)–(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शे की संरचना (मानक) $15 \times 22\frac{1}{2}$ वर्ग फीट है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन (B) मार्ग पर लंबाई में भवन



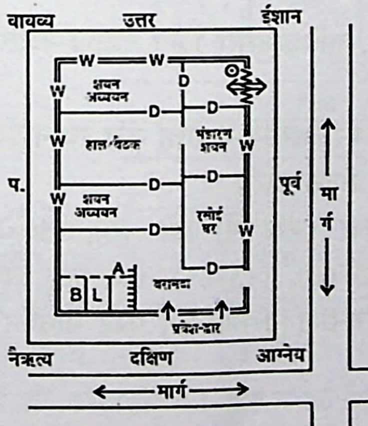
जहां— = शटर, चैनल गेट या बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

विशेष

भवन (B) में रसोई घर से ठीक सटाकर प्रवेश-द्वार बनावें।

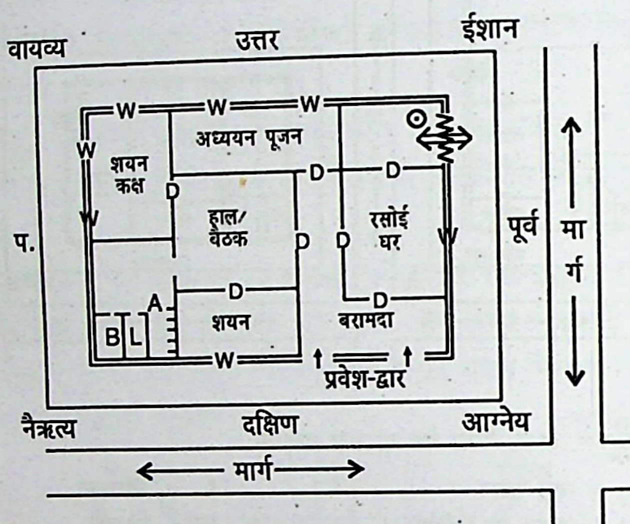
(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—
= शटर, चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा
⊙ = जल स्थान
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

2. मध्यमाकार भवन–संभावित आकार (फीट में) (20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40) अथवा इनके आसपास।

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



निम्न नक्शों की संरचना (20×40) को आधार बनाकर की गई है।

विशेष

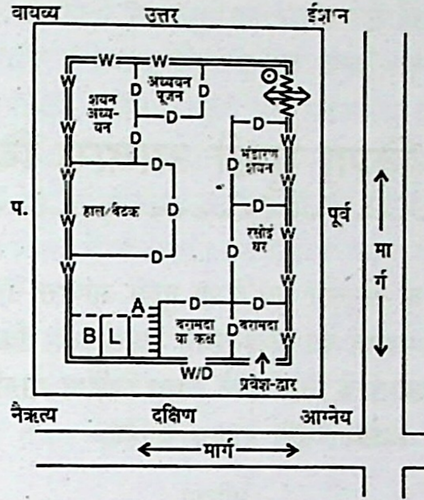
(i) भवन (A) में 7 फीट और भवन (B) में 13 फीट दक्षिण-आग्नेय में प्रवेश-द्वार बनवाना चाहिए।

(ii) शौचालय, स्नानगृह या सीढ़ियां, सुविधानुसार किंतु दक्षिण-नैऋत्य में ही बनवाएं।

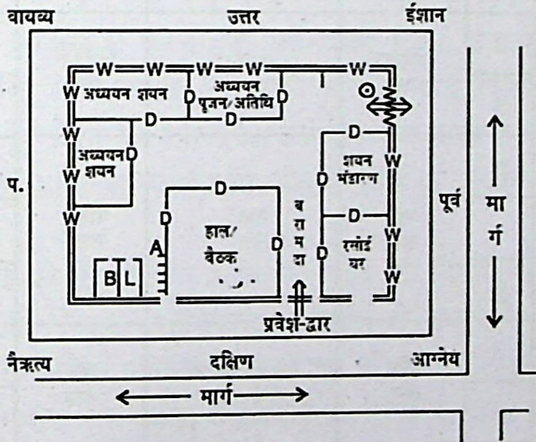
(iii) दोनों भवनों में यत्नपूर्वक रसोई घर आग्नेय में तथा जल स्थान ईशान में बना रहे, ऐसा चित्रानुसार प्रयास करें।

3. बड़ा भवन–संभावित आकार (फीट में) (40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40×60) वर्ग फीट मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



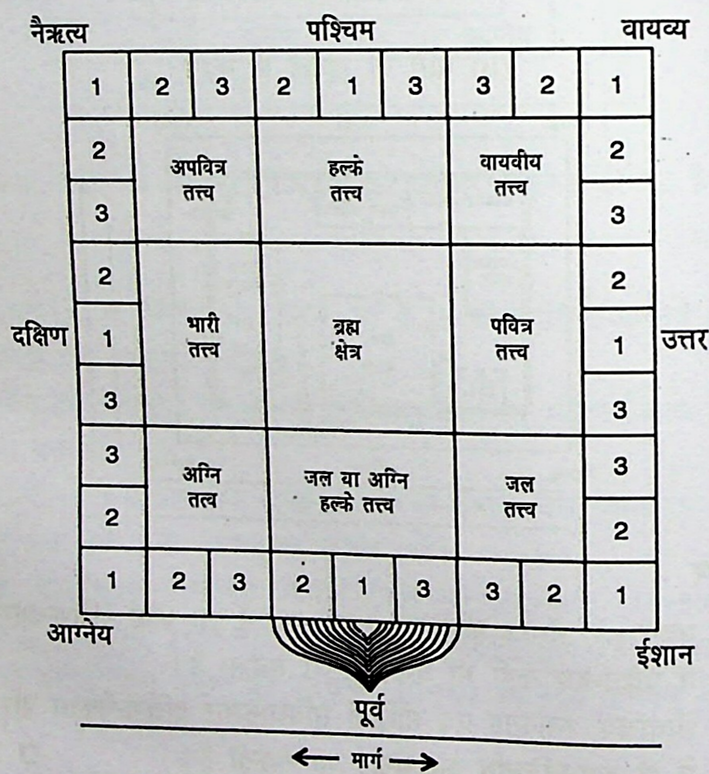
विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट दक्षिण-आग्नेय में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं सीढ़ियां सुविधानुसार दक्षिण-नैऋत्य परिसर में ही क्रम-परिवर्तन कर बनाई जा सकती हैं। □□□

पूर्व-दिशा मुखी आवास विशेष

वास्तुशास्त्र के अनुसार पूर्व दिशा मुखी आवास में पंच तत्त्वों के रूप में उनसे संबंधित पदार्थों का समायोजन निम्नानुसार किया जाता है। हमें पूर्व-दिशा मुखी आवास के निर्माण के समय निर्दिष्ट मानचित्र के साथ-साथ इन बातों का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए–



(i) पूर्व-दिशा मुखी आवास में पूर्वी-आग्नेय की अपेक्षा पूर्वी-ईशान में प्रवेश-द्वार उत्तम होता है किंतु, यह ध्यान रखें कि हमारे प्रवेश-द्वार के सम्मुख यदि कोई पेड़, बिजली का खंभा, अन्य भवन का कोई खंभा, गड्ढा पहाड़ी, (टीला) आदि इस प्रकार हो जो द्वार और मार्ग के बीच अवरोध उत्पन्न करता हो अथवा उसकी छाया प्रवेश-द्वार पर पड़ती हो तब या तो उक्त अवरोधादि को हटायें, अथवा प्रवेश-द्वार पूर्वी-आग्नेय दिशा में बनवाएं। आवासीय भवन में प्रवेश-द्वार मध्य में नहीं होते।

(ii) पूर्वी दिशा की ओर प्रवेश मार्गी भवन बनाते समय यह ध्यान रखें कि भले ही आपके पास भूखंड कितना ही छोटा क्यों न हो, आगे की ओर जितनी रिक्त भूमि होगी (हम छोड़ेंगे) उतना ही शुभत्व उत्पन्न होगा।

विशेष ध्यान देने योग्य

(i) पूर्व मुखी आवास में प्रवेश-द्वार पूर्वी-ईशान दिशा की ओर होने पर अति श्रेष्ठ माना जाता है। इसके अलावा यदि किसी कारण से आग्नेय-पूर्व दिशा की ओर प्रवेश-द्वार बनवाया जाता है तो भवन की शेष सभी आंतरिक व्यवस्थाओं और निर्माणों को यथावत रहने देना चाहिए।

(ii) रसोई घर की स्थिति और शौचालय आदि का निर्माण प्रवेश-द्वार के सामने होने से कुछ असुविधाजनक प्रतीत हो सकता है। अतः इन्हें अधिक-से-अधिक पश्चिम-वायव्य दिशा की ओर कुछ हद तक आगे या पीछे किया जा सकता है। यद्यपि मानचित्र के अनुरूप रहने देना सुखद होगा।

(iii) यथा संभव शौचालय में सीटिंग (बैठक) उत्तर-दक्षिण मुखी होना शुभ रहता है। मानचित्र में दर्शित स्थान पर निर्मित शौचालय में बैठक इसी प्रकार से येन-केन-प्रकारेण संभव बना लेने से वास्तु ऊर्जा का लाभ होगा।

(iv) सैप्टिक टैंक को दक्षिण-नैऋत्य दिशा में ही भवन के बाहरी ओर अथवा अंदर बनवाया जा सकता है। यथासंभव शौचालय को भवन के बाहरी परिसर में बनवाना व्यावहारिक एवं वास्तु दोनों ही प्रकार से शुभ होगा।

(v) जल स्थान जहां तक संभव हो अंडर ग्राउंड रहे, ईशान की ओर मानचित्र में दर्शित स्थान पर भवन के अंदर या बाहर की ओर भी बनवाया जा सकता है। किसी विशेष मजबूरी के चलते यदि आगे-पीछे करना आवश्यक हो तो उत्तर दिशा की ओर रखना अधिक शुभ होगा, जबकि पूर्व की ओर ले जाना मध्यम शुभ होगा।

(vi) यदि भवन के प्रवेश-द्वार के अलावा शेष तीनों ओर अन्य भवन सटकर बने हों, चहारदीवारी या खुली जगह भी न हो, तब प्रकाश एवं वायु के प्रबंध के लिए नैऋत्य भाग के ऊपर की छत को खुला न रखें। यह प्रबल वास्तु विकृति होगी। इस हेतु पश्चिमी या वायव्यी छत खुली रहे।

(vii) सीढ़ियों का निर्माण यदि मानचित्र में दर्शित स्थान पर न करवाया जा रहा हो तो यह ध्यान रखें पश्चिम की ओर चढ़ना सर्वाधिक शुभ, दक्षिण-नैऋत्य उत्तम, पूर्व-उत्तर शुभ होता है। ईशान में सीढ़ियां न बनाएं।

(viii) यदि चहारदीवारी का निर्माण किया गया है, अथवा बागवानी की सुविधा हो तो भवन में प्रवेश-द्वार की ओर हल्के, बेल या कमजोर तने वाले पुष्पादि भवन के पिछले भाग नैऋत्य-पश्चिम में अशोक या ऐसे ही ऊंचे पेड़ तथा दाहिनी ओर नैऋत्य-दक्षिण दिशा में फलदार भारी वृक्ष आदि तथा बायीं ओर स्थित उत्तर-वायव्य के आसपास सुगंधित पुष्पों के पेड़ आदि का लगाना शुभ होगा।

ढाल और उसका निर्माण

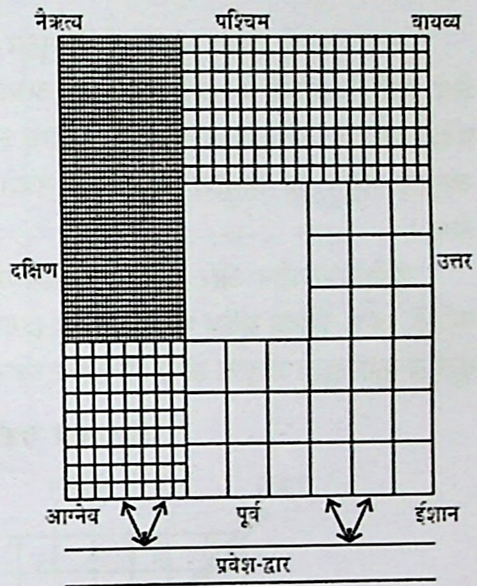
हम जिस भूमि पर भवन बनाने जा रहे हैं, प्रकृति ने उसे किसी भी प्रकार का स्वरूप प्रदान किया हो उसे हमें अपने अनुकूल बनाकर ही प्रयोग करना चाहिए। अतः इस दिशा मुखी आवास हेतु हमें संपूर्ण भवन का ढाल

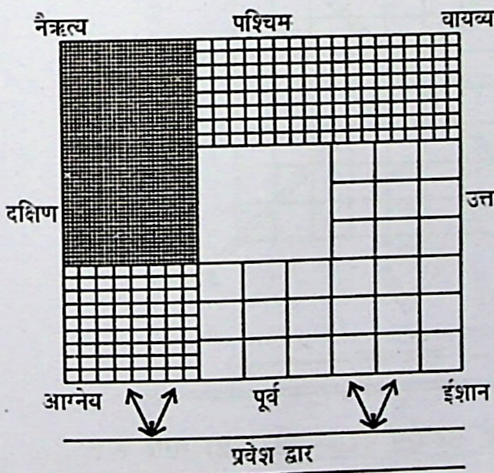
इस प्रकार निर्मित कराना (कृत्रिम रूप से) अधिक शुभत्व उत्पन्न करने वाला होगा। आवास चाहे अत्यंत छोटा हो, मध्यमाकार हो या बड़ा हो संपूर्ण निर्मित भूतल को दिशानुरूप निम्न चित्र के अनुरूप ढाल का निर्माण करावें।

(i) लंबाई और चौड़ाई में स्थित कुल दूरी को 9-9 भागों में विभाजित किया।

(ii) निर्दिष्ट रूप से दिशानुरूप—

(A) सर्वोच्च भूमि को कम से कम 6 इंच तथा अधिक से अधिक 10-12 इंच तक ऊंचा करें।



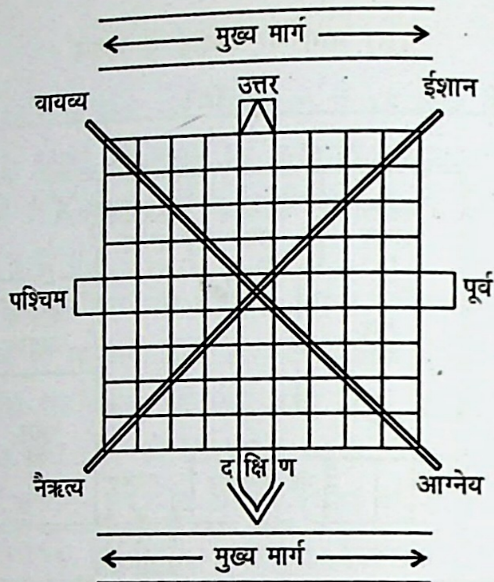


जहां—

(A) सर्वोच्च भूमि (दक्षिण, नैऋत्य)

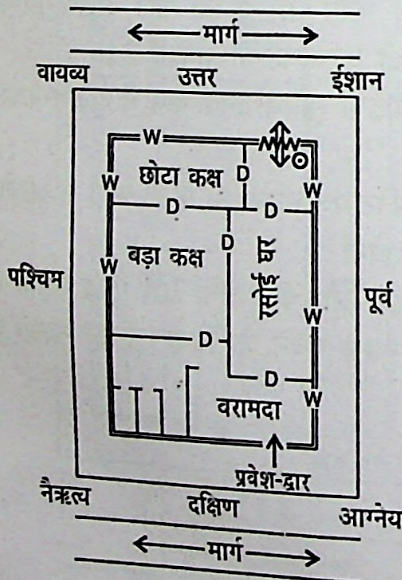
(B) सामान्य उच्च (आग्नेय, पश्चिम वायव्य)

(C) निम्न तल (उत्तर, ईशान, पूर्व)



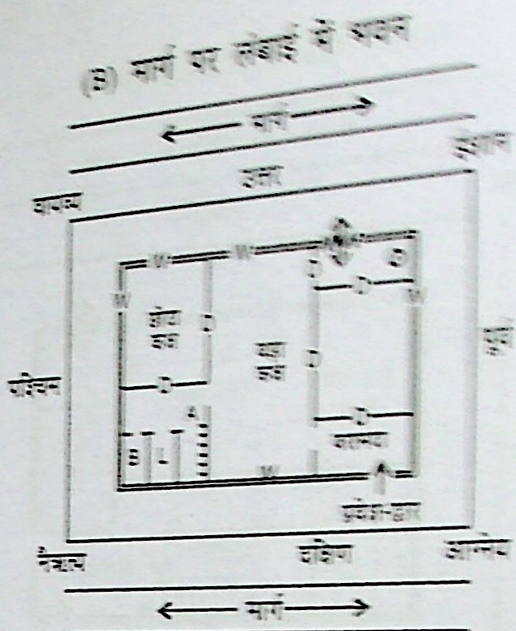
1. **छोटा भवन**—संभावित आकार (फीट में)—(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शे की रचना माप $15 \times 22\frac{1}{2}$ मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



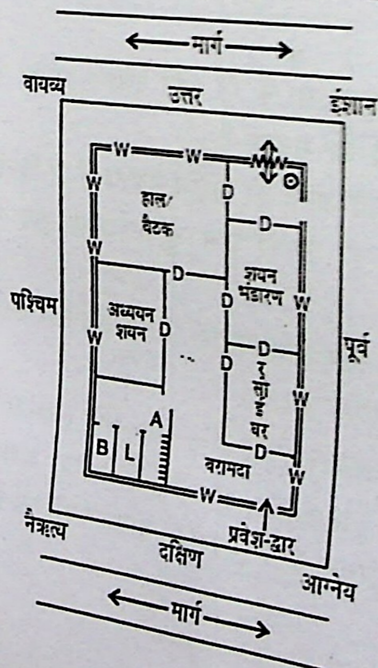
जहां—

= शटर चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा
⊙ = जल स्थान
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा



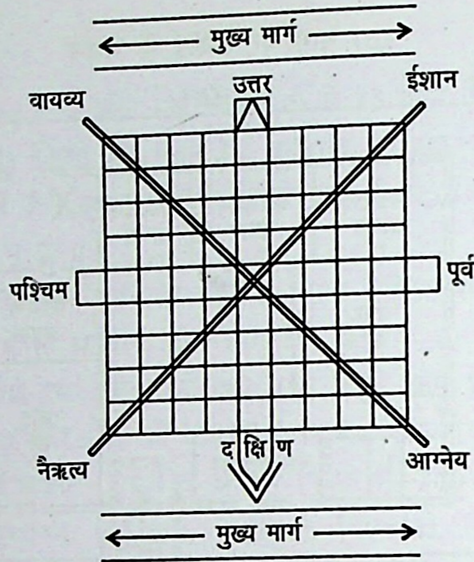
2. मध्यमाकार भवन—संभावित आकार (फीट में) (20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना का आदर्श नाप (20×40), मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



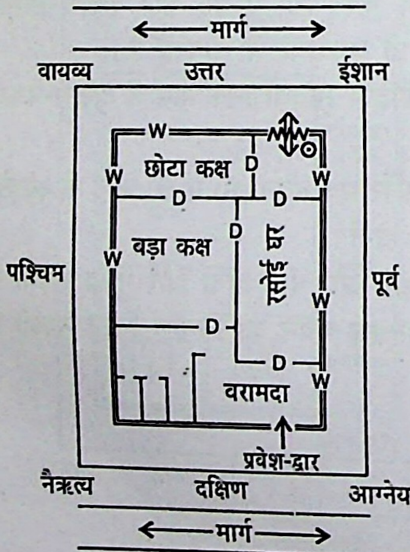
जहां—

= शटर चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा
⊙ = जल स्थान
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा



1. **छोटा भवन**—संभावित आकार (फीट में)—(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शे की रचना माप $15 \times 22\frac{1}{2}$ मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

= शटर चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

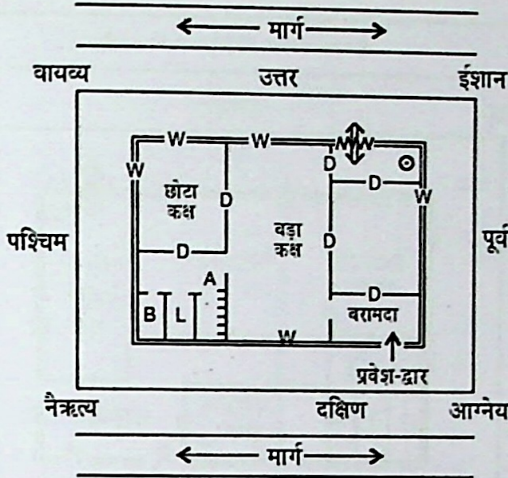
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

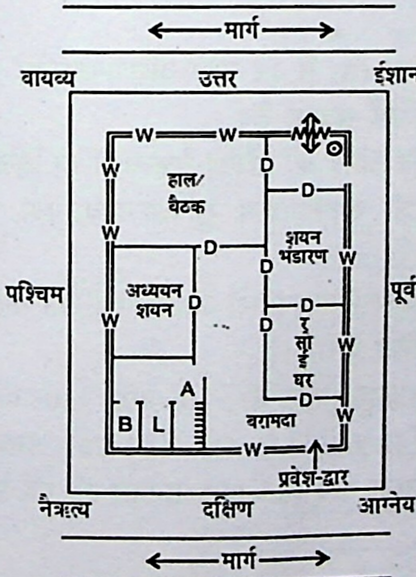
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



2. मध्यमाकार भवन—संभावित आकार (फीट में) (20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना का आदर्श नाप (20×40), मानकर की गई है।

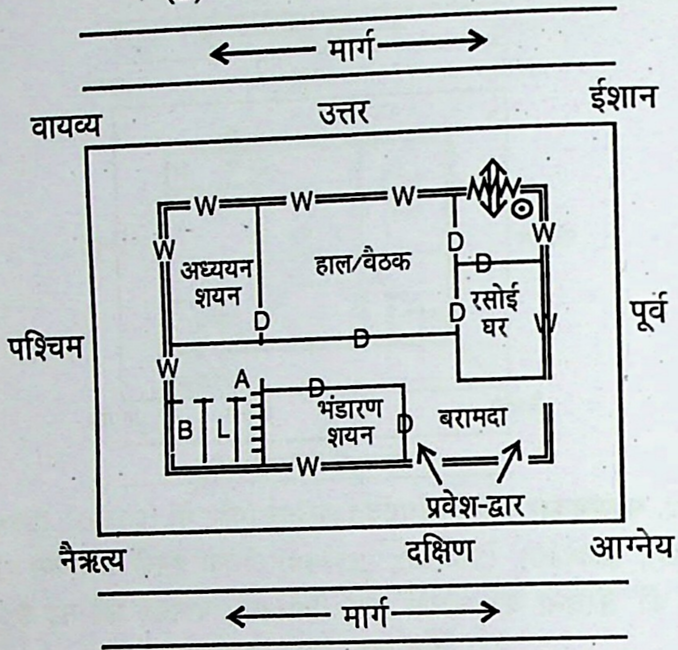
(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

= शटर चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा
⊙ = जल स्थान
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

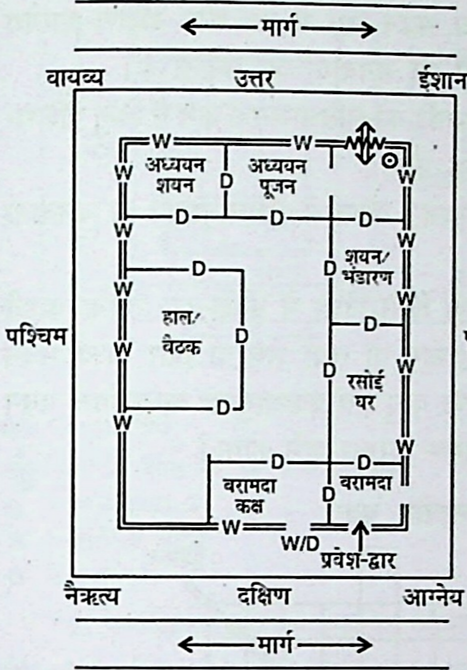
(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट दक्षिण-आग्नेय में कहीं भी प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह और चढ़ाव आदि को दक्षिण-नैऋत्य में ही किसी कोने बनवाना चाहिए भले ही उनका क्रम सुविधाजनक रूप में आगे-पीछे हो जाए।

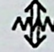
(iii) भवन (B) में प्रवेश-द्वार दोनों ओर (चित्रानुसार) अथवा एक ओर कहीं भी सुविधाजनक ढंग से निर्मित करावें।

3. बड़ा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शे की संरचना माप (40×60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां :-


= शटर चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

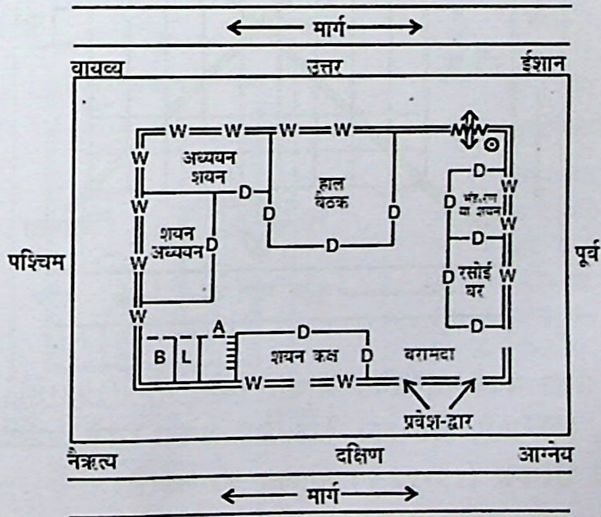
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

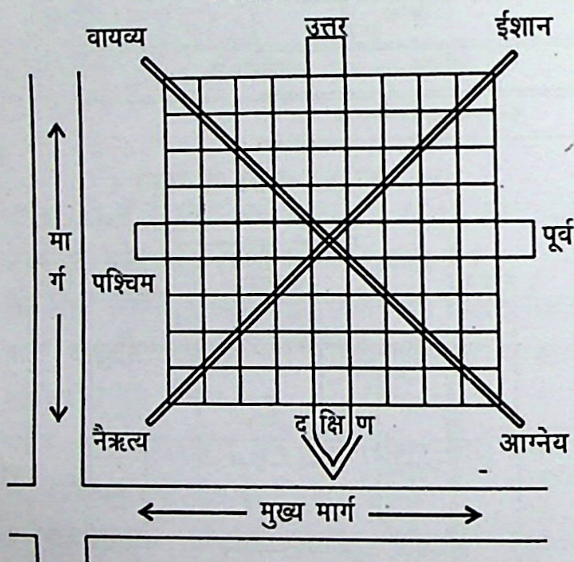
(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट दक्षिण-आग्नेय की दूरी में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नान एवं चढ़ाव आदि को सुविधाजनक क्रम में किंतु दक्षिण-नैऋत्य में ही बनवाना ठीक होगा।

(iii) जल स्थान को यत्नपूर्वक ईशान कोण में (चित्रानुसार) ही बनवाना ठीक होगा।

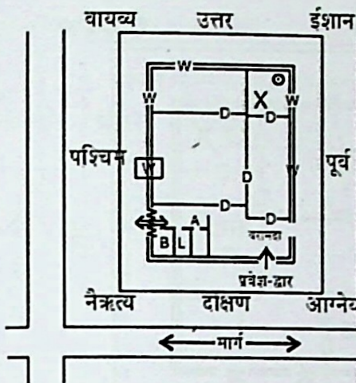
यदि आवासीय भूखंड में हम जिस दिशा में प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं, उसके दाहिने ओर एक अन्य मार्ग हो तथा शेष दो ओर अन्य भवन आदि के कारण बंद हो तब पर्याप्त वायु एवं प्रकाशयुक्त वास्तुसंगत भवन का निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप कराना शुभ होगा।

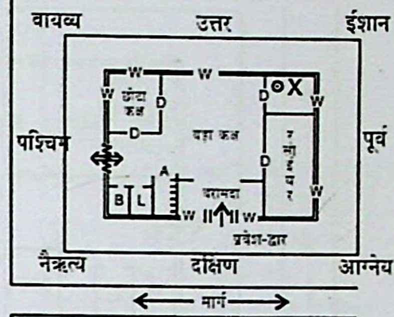
दिशाबोध चक्र



1. **छोटा भवन**–संभावित आकार (फीट में)–(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना ($15 \times 22\frac{1}{2}$) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन (B) मार्ग पर लंबाई में भवन





जहां—X पूजास्थल

= शटर, चैनल गेट या अन्य दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = सीढ़ियां चढ़ाव

B = स्नानगृह

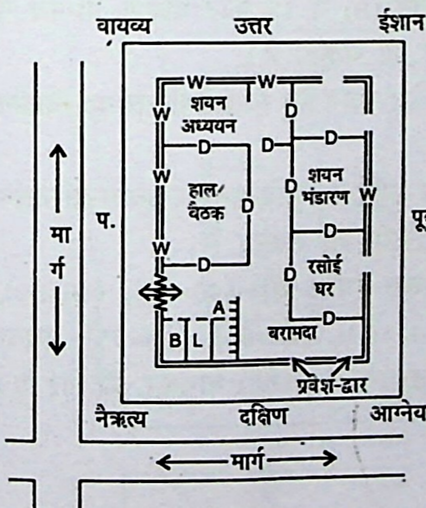
L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

2. **मध्यमाकार भवन**—संभावित आकार (फीट में) (20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40) अथवा इनके आसपास।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

= शटर चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

X = पूजा स्थल

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

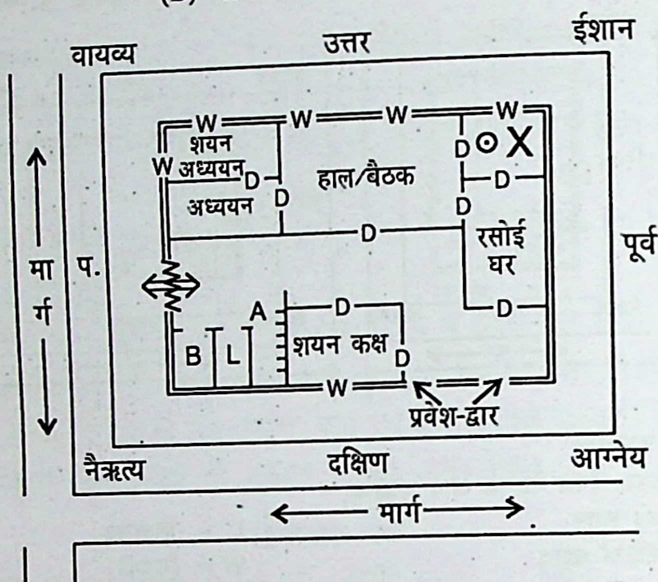
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



निम्न नक्शों की संरचना के आदर्श नाम (20×40) मानकर की गई है।

विशेष

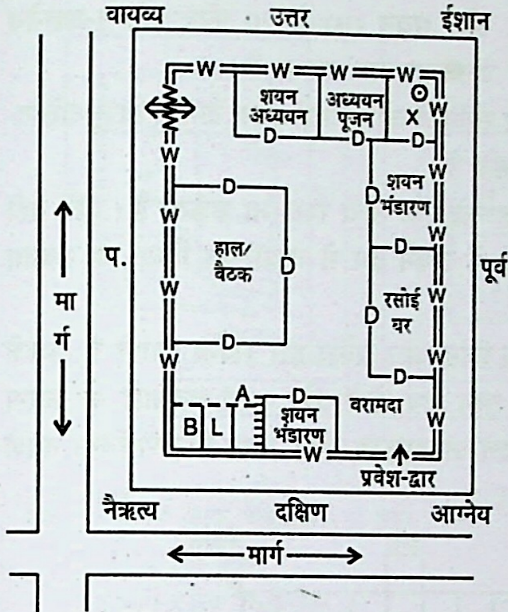
(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट दक्षिण-आग्नेय में प्रवेश द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) ईशान कोण में जल स्थान एवं देव स्थान हेतु स्वतंत्र परिसर का निर्माण अत्यंत शुभ होगा।

(iii) शौचालय, स्नानगृह एवं चढ़ाव आदि का सुविधानुसार स्थान-परिवर्तन दक्षिण-नैऋत्य परिसर में ही किया जा सकता है।

3. बड़ा भवन—संभावित आकार (फीट में)—(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40×60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

= शटर चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

X = पूजा गृह

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

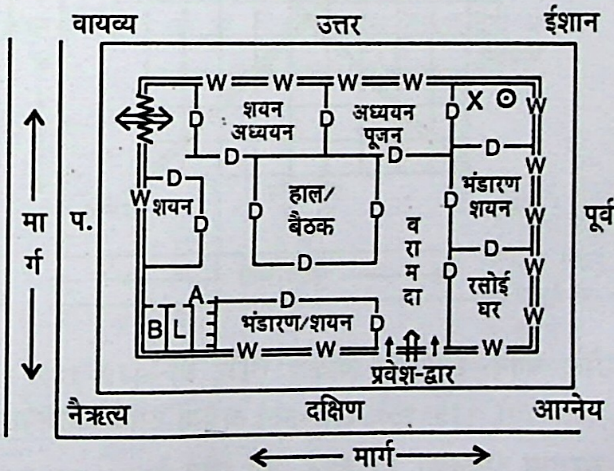
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



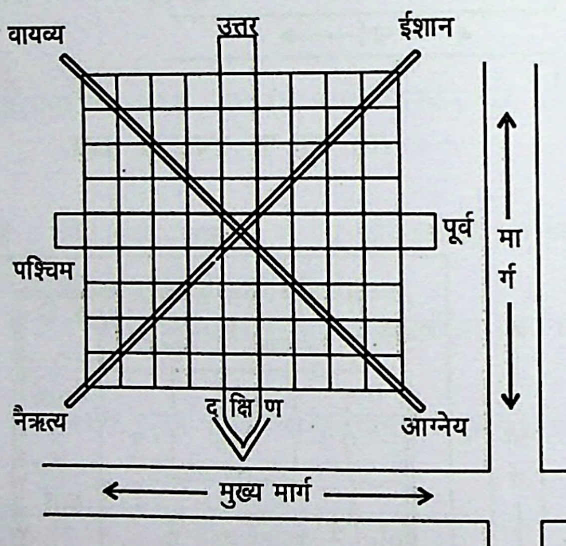
विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट और भवन (B) में 20 फीट दक्षिण-आग्नेय में कहीं भी प्रवेश-द्वार बनाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह और सीढ़ियों को सुविधाजनक क्रम में किंतु दक्षिण-नैऋत्य में ही बना सकते हैं।

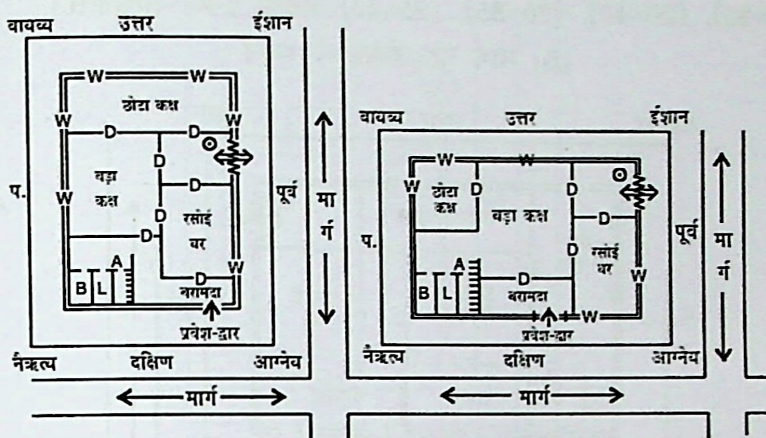
(iii) जल स्थान एवं पूजा गृह को एक साथ रखा जा सकता है। यदि नहीं रखना हो तो इसी दिशा में अपने ढंग से व्यवस्थित किया जा सकता है।

आवासीय भूखंड में हम जिस ओर प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं, उसके बाईं ओर एक अन्य मार्ग हो तथा शेष दोनों ओर अन्य भवनादि के कारण बंद हो तब वायु एवं प्रकाशयुक्त वास्तुशास्त्र संगत भवन निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप करवाना चाहिए।



1. **छोटा भवन**—संभावित आकार (फीट में)—(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शे की संरचना (मानक) $15 \times 22\frac{1}{2}$ वर्ग फीट है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन (B) मार्ग पर लंबाई में भवन



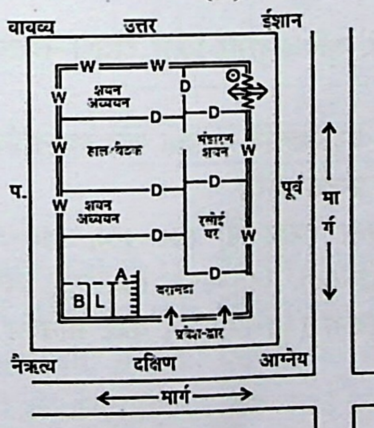
जहां— ⇕= शटर, चैनल गेट या बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

विशेष

भवन (B) में रसोई घर से ठीक सटाकर प्रवेश-द्वार बनावें।

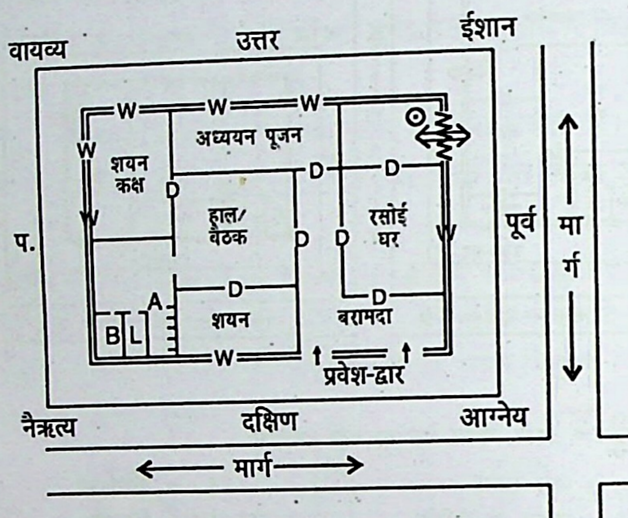
(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—
⇕= शटर, चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा
⊙ = जल स्थान
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

2. मध्यमाकार भवन—संभावित आकार (फीट में) (20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40) अथवा इनके आसपास।

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



निम्न नक्शों की संरचना (20×40) को आधार बनाकर की गई है।

विशेष

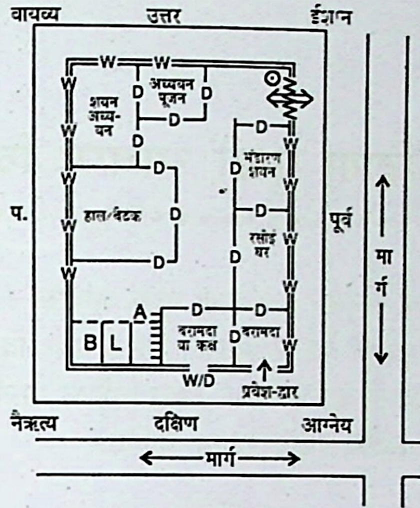
(i) भवन (A) में 7 फीट और भवन (B) में 13 फीट दक्षिण-आग्नेय में प्रवेश-द्वार बनवाना चाहिए।

(ii) शौचालय, स्नानगृह या सीढ़ियां, सुविधानुसार किंतु दक्षिण-नैऋत्य में ही बनवाएं।

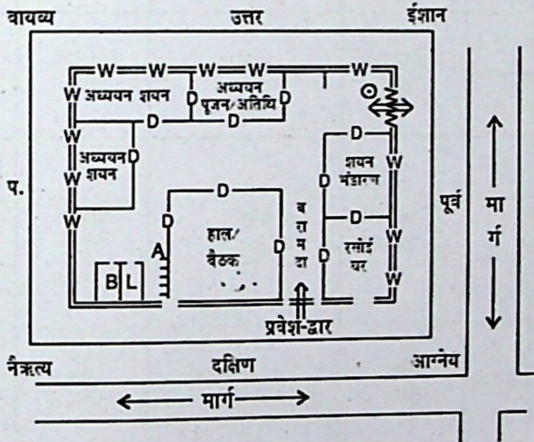
(iii) दोनों भवनों में यत्नपूर्वक रसोई घर आग्नेय में तथा जल स्थान ईशान में बना रहे, ऐसा चित्रानुसार प्रयास करें।

3. बड़ा भवन—संभावित आकार (फीट में) (40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40×60) वर्ग फीट मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट दक्षिण-आग्नेय में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं सीढ़ियां सुविधानुसार दक्षिण-नैऋत्य परिसर में ही क्रम-परिवर्तन कर बनाई जा सकती हैं। ☐☐☐

पूर्व-दिशा मुखी आवास विशेष

वास्तुशास्त्र के अनुसार पूर्व दिशा मुखी आवास में पंच तत्त्वों के रूप में उनसे संबंधित पदार्थों का समायोजन निम्नानुसार किया जाता है। हमें पूर्व-दिशा मुखी आवास के निर्माण के समय निर्दिष्ट मानचित्र के साथ-साथ इन बातों का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए—

नैॠत्य — पश्चिम — वायव्य

1	2	3	2	1	3	3	2	1
2	अपवित्र तत्त्व		हल्के तत्त्व			वायवीय तत्त्व		2
3								3
2								2
1	भारी तत्त्व		ब्रह्म क्षेत्र			पवित्र तत्त्व		1
3								3
3								3
2	अग्नि तत्व		जल या अग्नि हल्के तत्त्व			जल तत्त्व		2
1	2	3	2	1	3	3	2	1

दक्षिण (बाएँ) — उत्तर (दाएँ)

आग्नेय — ईशान

पूर्व

← मार्ग →

(i) पूर्व-दिशा मुखी आवास में पूर्वी-आग्नेय की अपेक्षा पूर्वी-ईशान में प्रवेश-द्वार उत्तम होता है किंतु, यह ध्यान रखें कि हमारे प्रवेश-द्वार के सम्मुख यदि कोई पेड़, बिजली का खंभा, अन्य भवन का कोई खंभा, गड्ढा पहाड़ी, (टीला) आदि इस प्रकार हो जो द्वार और मार्ग के बीच अवरोध उत्पन्न करता हो अथवा उसकी छाया प्रवेश-द्वार पर पड़ती हो तब या तो उक्त अवरोधादि को हटायें, अथवा प्रवेश-द्वार पूर्वी-आग्नेय दिशा में बनवाएं। आवासीय भवन में प्रवेश-द्वार मध्य में नहीं होते।

(ii) पूर्वी दिशा की ओर प्रवेश मार्गी भवन बनाते समय यह ध्यान रखें कि भले ही आपके पास भूखंड कितना ही छोटा क्यों न हो, आगे की ओर जितनी रिक्त भूमि होगी (हम छोड़ेंगे) उतना ही शुभत्व उत्पन्न होगा।

विशेष ध्यान देने योग्य

(i) पूर्व मुखी आवास में प्रवेश-द्वार पूर्वी-ईशान दिशा की ओर होने पर अति श्रेष्ठ माना जाता है। इसके अलावा यदि किसी कारण से आग्नेय-पूर्व दिशा की ओर प्रवेश-द्वार बनवाया जाता है तो भवन की शेष सभी आंतरिक व्यवस्थाओं और निर्माणों को यथावत रहने देना चाहिए।

(ii) रसोई घर की स्थिति और शौचालय आदि का निर्माण प्रवेश-द्वार के सामने होने से कुछ असुविधाजनक प्रतीत हो सकता है। अतः इन्हें अधिक-से-अधिक पश्चिम-वायव्य दिशा की ओर कुछ हद तक आगे या पीछे किया जा सकता है। यद्यपि मानचित्र के अनुरूप रहने देना सुखद होगा।

(iii) यथा संभव शौचालय में सीटिंग (बैठक) उत्तर-दक्षिण मुखी होना शुभ रहता है। मानचित्र में दर्शित स्थान पर निर्मित शौचालय में बैठक इसी प्रकार से येन-केन-प्रकारेण संभव बना लेने से वास्तु ऊर्जा का लाभ होगा।

(iv) सैप्टिक टैंक को दक्षिण-नैऋत्य दिशा में ही भवन के बाहरी ओर अथवा अंदर बनवाया जा सकता है। यथासंभव शौचालय को भवन के बाहरी परिसर में बनवाना व्यावहारिक एवं वास्तु दोनों ही प्रकार से शुभ होगा।

(v) जल स्थान जहां तक संभव हो अंडर ग्राउंड रहे, ईशान की ओर मानचित्र में दर्शित स्थान पर भवन के अंदर या बाहर की ओर भी बनवाया जा सकता है। किसी विशेष मजबूरी के चलते यदि आगे-पीछे करना आवश्यक हो तो उत्तर दिशा की ओर रखना अधिक शुभ होगा, जबकि पूर्व की ओर ले जाना मध्यम शुभ होगा।

(vi) यदि भवन के प्रवेश-द्वार के अलावा शेष तीनों ओर अन्य भवन सटकर बने हों, चहारदीवारी या खुली जगह भी न हो, तब प्रकाश एवं वायु के प्रबंध के लिए नैऋत्य भाग के ऊपर की छत को खुला न रखें। यह प्रबल वास्तु विकृति होगी। इस हेतु पश्चिमी या वायव्यी छत खुली रहे।

(vii) सीढ़ियों का निर्माण यदि मानचित्र में दर्शित स्थान पर न करवाया जा रहा हो तो यह ध्यान रखें पश्चिम की ओर चढ़ना सर्वाधिक शुभ, दक्षिण-नैऋत्य उत्तम, पूर्व-उत्तर शुभ होता है। ईशान में सीढ़ियां न बनाएं।

(viii) यदि चहारदीवारी का निर्माण किया गया है, अथवा बागवानी की सुविधा हो तो भवन में प्रवेश-द्वार की ओर हल्के, बेल या कमजोर तने वाले पुष्पादि भवन के पिछले भाग नैऋत्य-पश्चिम में अशोक या ऐसे ही ऊंचे पेड़ तथा दाहिनी ओर नैऋत्य-दक्षिण दिशा में फलदार भारी वृक्ष आदि तथा बायीं ओर स्थित उत्तर-वायव्य के आसपास सुगंधित पुष्पों के पेड़ आदि का लगाना शुभ होगा।

ढाल और उसका निर्माण

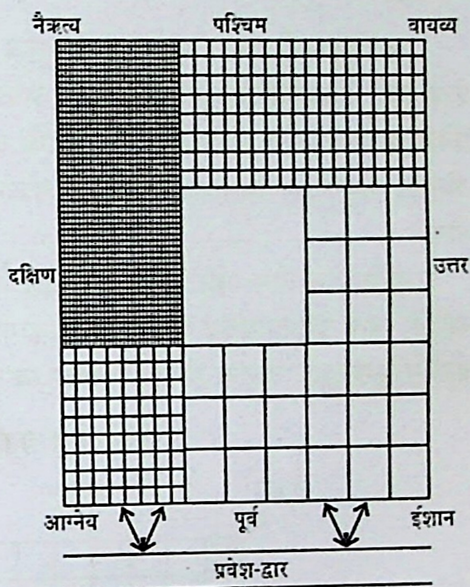
हम जिस भूमि पर भवन बनाने जा रहे हैं, प्रकृति ने उसे किसी भी प्रकार का स्वरूप प्रदान किया हो उसे हमें अपने अनुकूल बनाकर ही प्रयोग करना चाहिए। अतः इस दिशा मुखी आवास हेतु हमें संपूर्ण भवन का ढाल

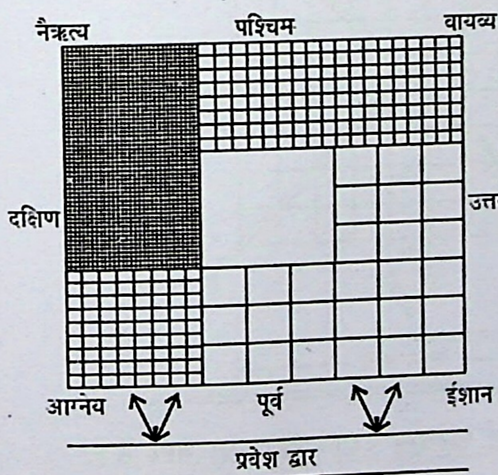
इस प्रकार निर्मित कराना (कृत्रिम रूप से) अधिक शुभत्व उत्पन्न करने वाला होगा। आवास चाहे अत्यंत छोटा हो, मध्यमाकार हो या बड़ा हो संपूर्ण निर्मित भूतल को दिशानुरूप निम्न चित्र के अनुरूप ढाल का निर्माण करावें।

(i) लंबाई और चौड़ाई में स्थित कुल दूरी को 9-9 भागों में विभाजित किया।

(ii) निर्दिष्ट रूप से दिशानुरूप—

(A) सर्वोच्च भूमि को कम से कम 6 इंच तथा अधिक से अधिक 10-12 इंच तक ऊंचा करें।





जहां—

(A) सर्वोच्च भूमि (दक्षिण, नैऋत्य)

(B) सामान्य उच्च (आग्नेय, पश्चिम वायव्य)

(C) निम्न तल (उत्तर, ईशान, पूर्व)

(B) सामान्य उच्च भूमि को कम से कम 4 इंच और अधिक से अधिक 6-8 इंच तक ऊंचा करें।

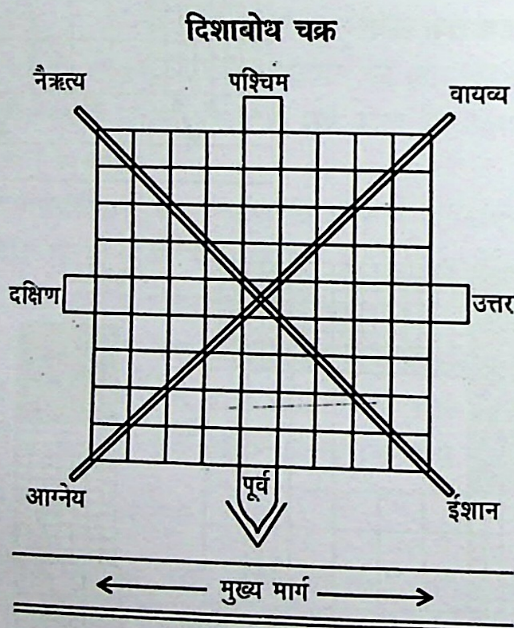
(C) निम्न भूमि को समतल ही बना रहने दें।

आवासीय मानचित्र

जब एक ही दिशा मात्र पूर्व में मुख्य मार्ग या सड़क हो, तथा अन्य शेष सभी दिशाओं में मार्ग आदि का अभाव हो तो हमें अपने भवन का प्रवेश-द्वार भी उसी दिशा में बनाना होगा तथा वास्तु-शास्त्र के निर्देशों के अनुरूप भवन का निर्माण निम्नांकित नक्शे के अनुसार करना शुभदायक होगा।

चूंकि हमें तीन ओर से हवा, प्रकाश एवं निकासी की पर्याप्त सुविधा नहीं है, अतः इसका प्रबंध भी हमें करना होगा। अर्थात् छत का ऊपरी हिस्सा कुछ न कुछ खुला छोड़ना होगा। जिसका ध्यान नक्शे में पर्याप्त रखा गया है।

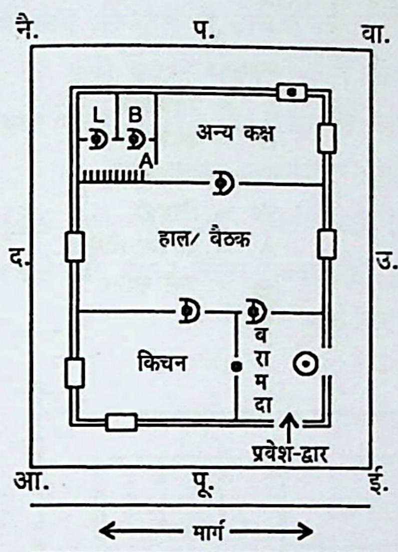
दिशाबोध चक्र



निम्न नक्शों की आदर्श संरचना (15× 22/1/2) माप है।

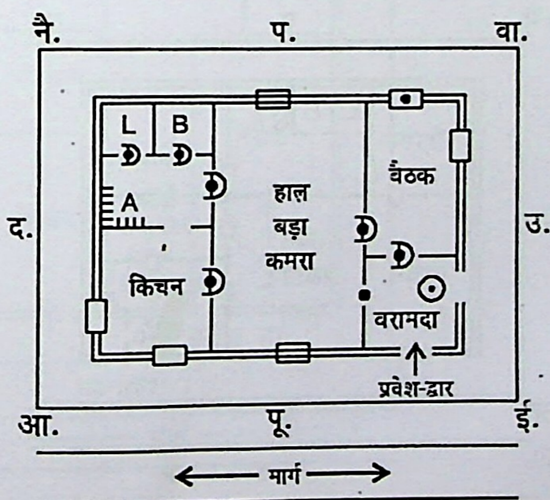
1. छोटा भवन—संभावित आकार (फीट में)—(12× 18), (12× 20), (12× 24), (15× 20), (15× 25), (15× 30) अथवा इसके आसपास।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



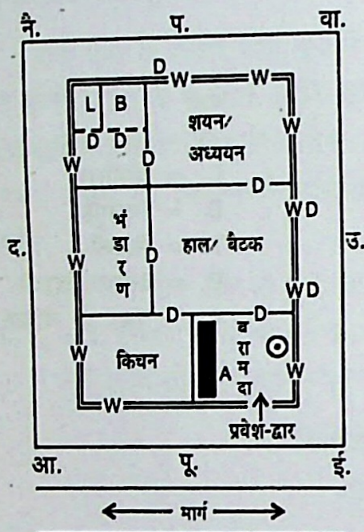
जहां :-
⊙ = जल स्थान
L = शौचालय
B = स्नानगृह
W = खिड़की
D = दरवाजा/खिड़की
A = चढ़ाव या सीढ़ियां

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



2. मध्यमाकार भवन—संभावित आकार (फीट में)—(20× 25), (20× 30), (20× 35), (20× 40), (25× 35), (25× 40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शे की संरचना (20× 40) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

L = शौचालय

B = स्नानगृह

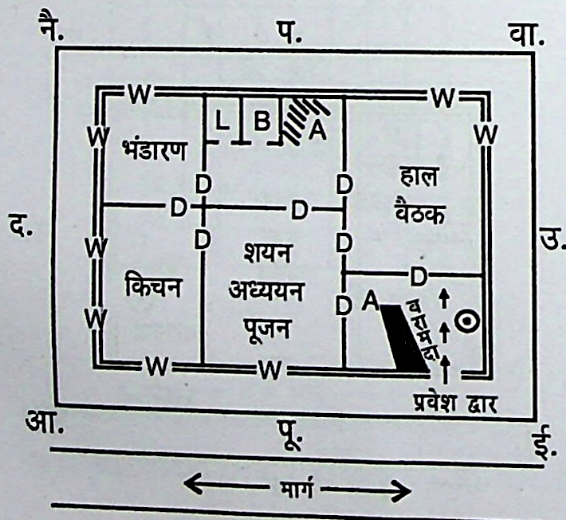
D = दरवाजा

W = खिड़की

A = पार्किंग/सीढ़ियां

⊙ = जल स्थान

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



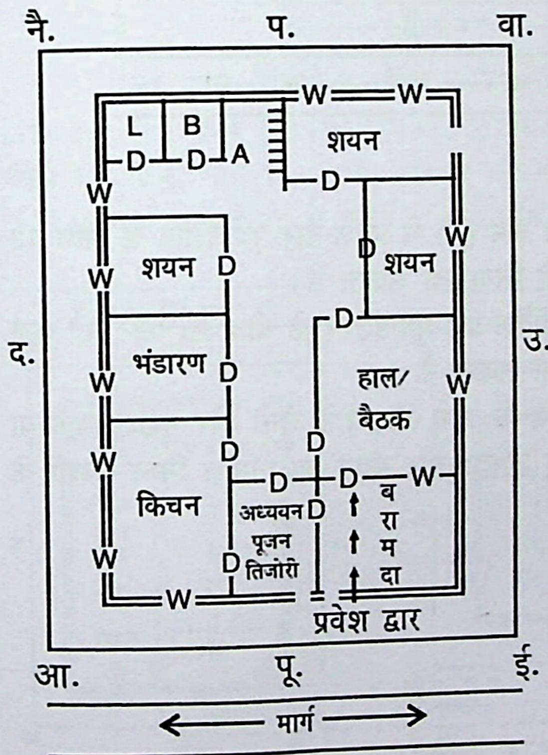
विशेष

भवन में मुख्य प्रवेश-द्वार के अलावा बाहर की ओर अन्य द्वार रखना हो तो भवन (A) में दक्षिण-नैऋत्य में शौचालय व भंडार गृह के बीच, पश्चिम के कक्ष में अथवा ठीक उत्तर में लेना श्रेष्ठ होगा।

इसी प्रकार भवन (B) में ठीक पश्चिम में, दक्षिण में रसोई घर से, तथा उत्तर में हाल या बैठक में अन्य प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

3. बड़ा भवन–संभावित आकार (फीट में)–(40× 40), (40× 50), (40× 60), (40× 80), (45× 50), (45× 60), (45× 65), (50× 75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40× 60) मानकर की गई है।

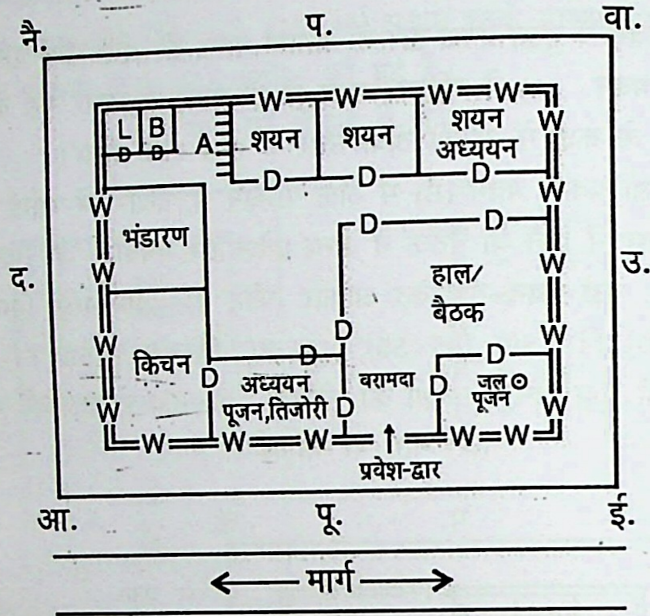
(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़कियां
D = दरवाजा
⊙ = जल स्थान

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

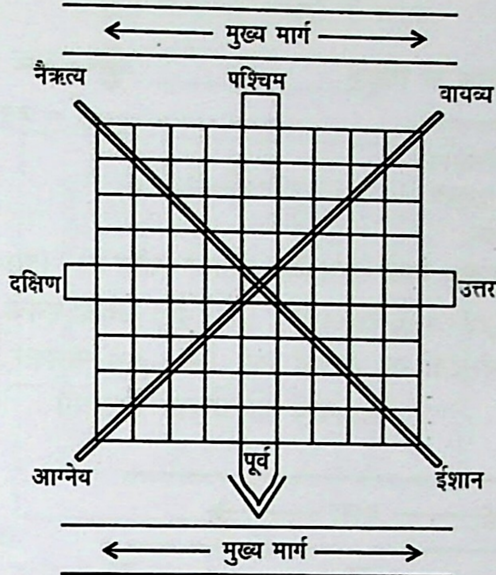


विशेष

(40× 60) के भवन क्रम (A) में प्रवेश-द्वार पूर्व-ईशान के बीच 13 फीट की दूरी में कहीं भी लिया जा सकता है।

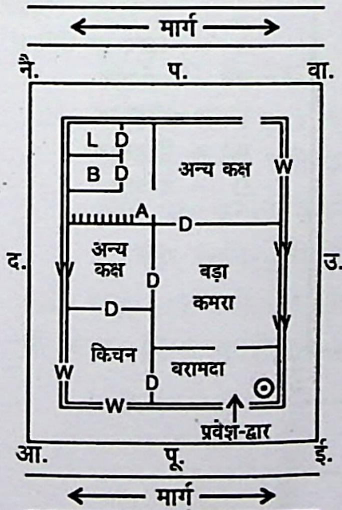
भवन क्रम (B) में प्रवेश-द्वार पूर्व-ईशान के बीच 20 फीट की कुल दूरी में कहीं भी लिया जा सकता है।

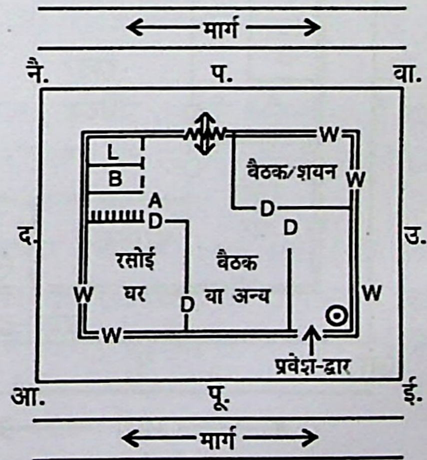
जब आवासीय भूखंड के आगे और पीछे दोनों ओर मुख्य सड़क या आम रास्ते हों, तब वास्तु शास्त्रानुसार भवन का निर्माण निम्न नक्शों के अनुरूप करना शुभ होगा।



1. छोटा भवन—संभावित आकार (फीट में)—(12× 18), (12× 20), (12× 24), (15× 20), (15× 25), (15× 30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शे की रचना माप 15× 22$\frac{1}{2}$ मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन (B) मार्ग पर लंबाई में भवन





जहां–

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

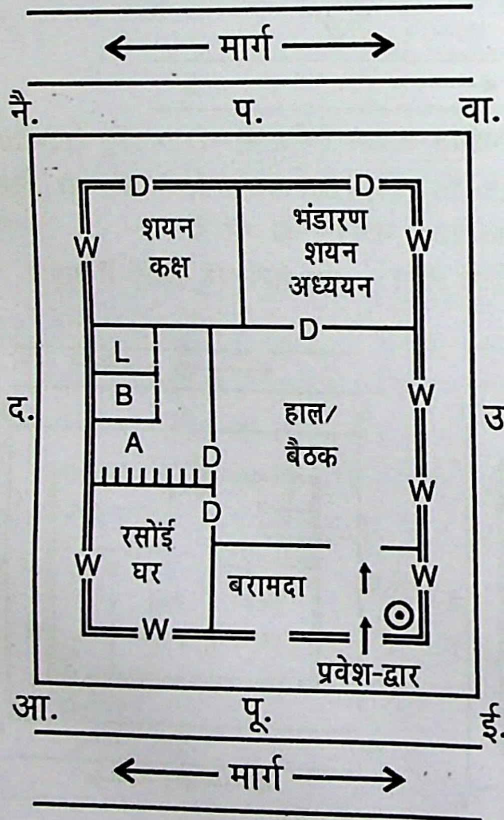
D = द्वार

= अन्य द्वार

⊙ = जल स्थान

2. मध्यमाकार भवन–संभावित आकार (फीट में)–(20× 25), (20× 30), (20× 35), (20× 40), (25× 35), (25× 40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना का आदर्श नाप (20× 40) मानकर किया गया है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

⊙ = जल स्थान

= शटर (चैनल गेट) या अन्य बड़ा दरवाज़ा

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

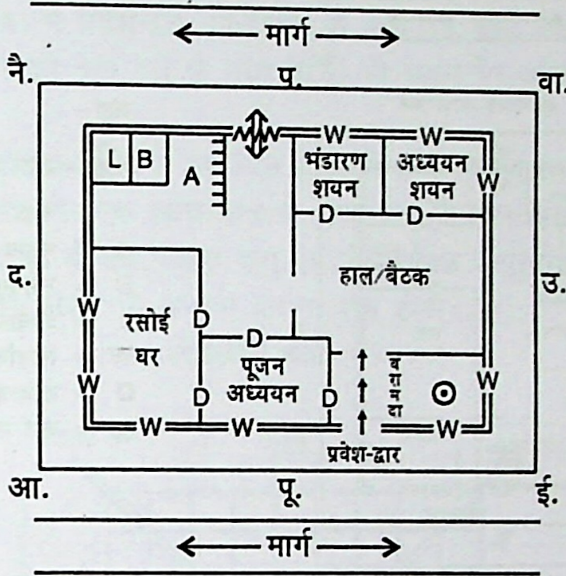
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़कियां

D = दरवाजे

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



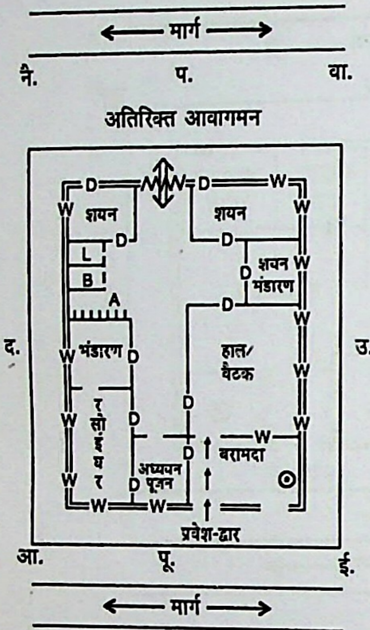
विशेष

1. यदि भवन (20× 40) वर्ग फीट या इससे अधिक में निर्मित हो रहा है, तो क्रम (A) की स्थिति में प्रवेश-द्वार पूर्व-ईशान में मात्र 7 फीट की चौड़ाई में तथा भवन (B) में 13 फीट की लंबाई में कहीं भी लिया जा सकता है।

(2) सीढ़ियां भवन (A) के समान (B) और (B) के समान (A) में रखी जा सकती हैं। इसी प्रकार शौचालय एवं स्नानगृह का स्थान भी (A) और (B) समान स्थान पर बदला जा सकता है।

3. बड़ा भवन–संभावित आकार (फीट में) (40× 40), (40× 50), (40× 60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शे की संरचना माप (40× 60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= शटर या जालीदार बड़ा दरवाजा

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

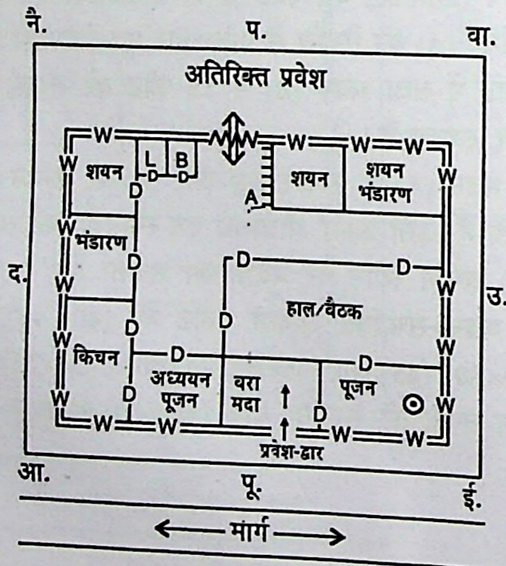
L = शौचालय

W = खिड़कियां

D = दरवाजा

⊙ = जल स्थान

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

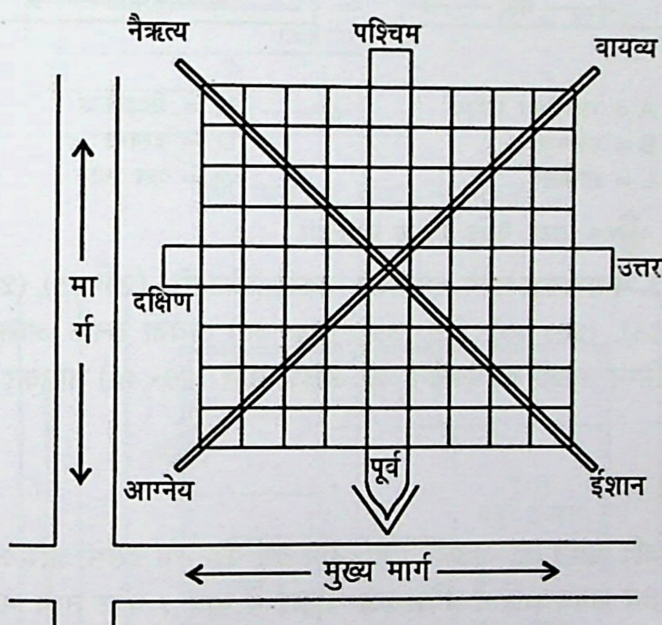


विशेष

भवन (A) में प्रवेश-द्वार पूर्व-ईशान के मध्य 13 फीट तथा भवन (B) में 20 फीट की कुल दूरी के मध्य किसी भी स्थान पर बनवाया जा सकता है।

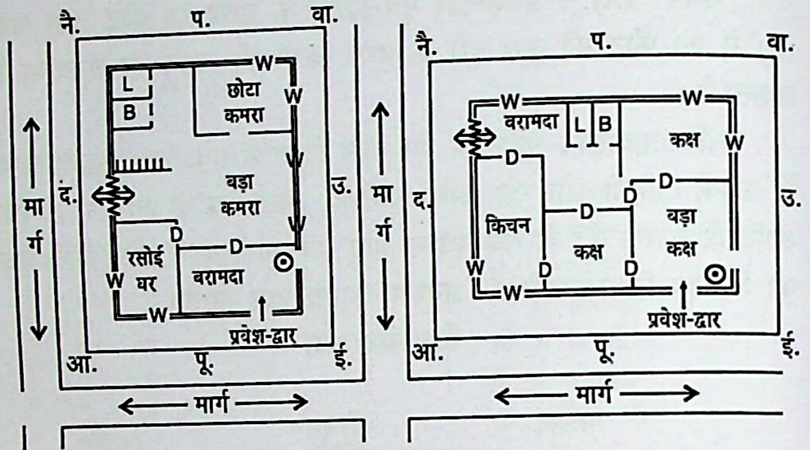
यदि आवासीय भूखंड में हम जिस दिशा में प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं, उसके दाहिनी ओर एक अन्य मार्ग हो, तथा शेष दो ओर अन्य भवन आदि के कारण बंद हो तब पर्याप्त वायु एवं प्रकाशयुक्त वास्तुसंगत भवन का निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप कराना शुभ होगा।

दिशाबोध चक्र



1. छोटा भवन–संभावित आकार (फीट में)–(12× 18), (12× 20), (12× 24), (15× 20), (15× 25), (15× 30) अथवा इसके आसपास निम्न नक्शों की संरचना ($15\times 22\frac{1}{2}$) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन (B) मार्ग पर लंबाई में भवन



जहां— A = चढ़ाव या सीढ़ियां W = खिड़कियां
B = स्नानगृह D = दरवाजे
L = शौचालय ⊙ = जल स्थान
⇕ = शटर, चैनल गेट या प्रवेश-द्वार

2. मध्यमाकार भवन—संभावित आकार (फीट में)—(20× 25), (20× 30), (20× 35), (20× 40), (25× 35), (25× 40) अथवा इनके आसपास।

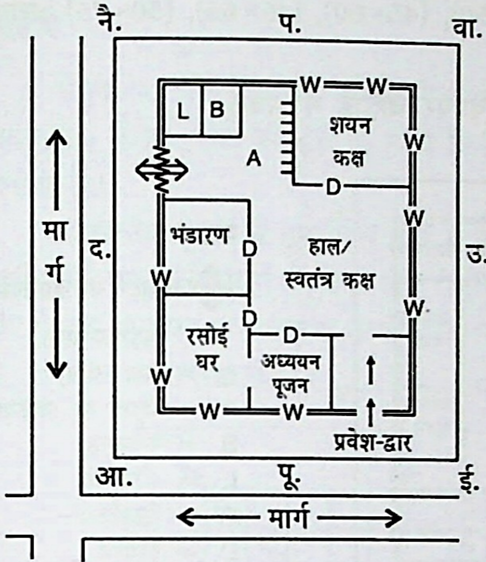
निम्न नक्शों की संरचना की आदर्श नाम (20× 40) मानकर की गई है।

विशेष

(i) यदि भवन का आकार (20× 40) वर्ग फीट या इससे अधिक का हो तब भवन (A) में प्रवेश-द्वार चौड़ाई में मात्र 7 फीट तथा भवन (B) में 13 फीट की लंबाई में लिया जा सकता है।

(ii) भवन (B) में सीढ़ियां नैऋत्य-पश्चिम में न लेना हों तो दक्षिण-नैऋत्य में रसोई घर से सटाकर भी ली जा सकती है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

L = शौचालय

B = स्नानगृह

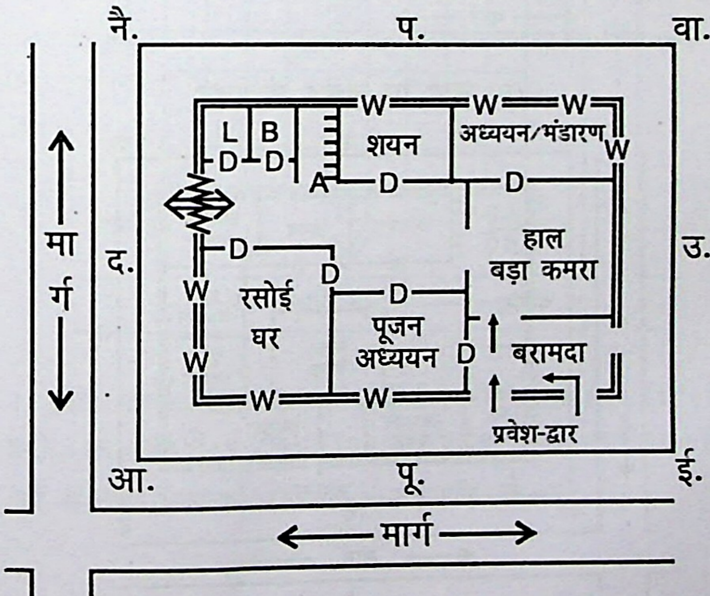
⊙ = जल स्थान

= अतिरिक्त बाहरी प्रवेश-द्वार

W = खिड़कियां

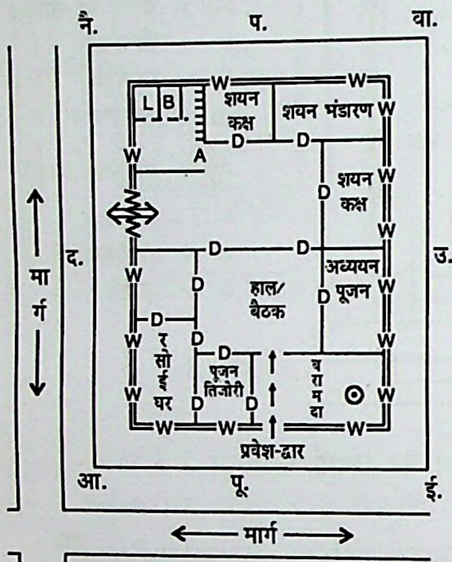
D = दरवाजे

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



3. बड़ा भवन–संभावित आकार (फीट में)–(40× 40), (40× 50), (40× 60), (40× 80), (45× 50), (45× 60), (45× 65), (50× 75) अथवा इससे भी बड़ा।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= शटर या जालीदार बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

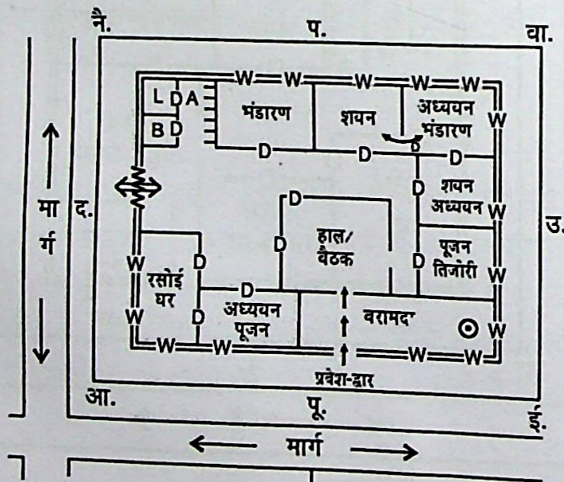
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़कियां

D = दरवाजे

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

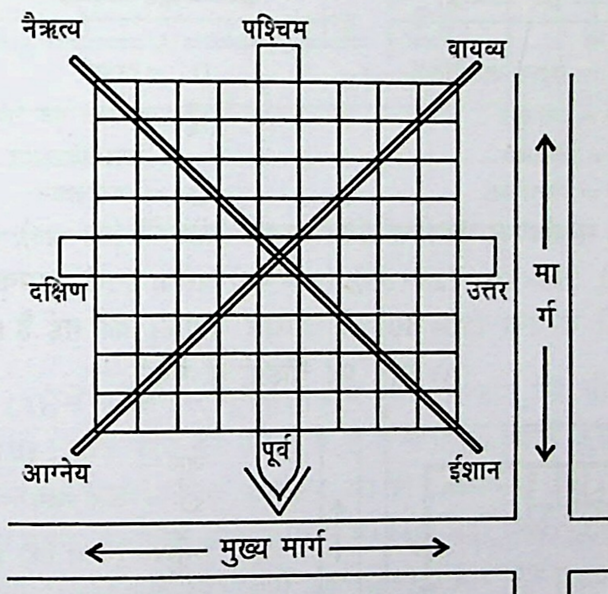


निम्न नक्शों की संरचना (40× 60) मानकर की गई है।

विशेष

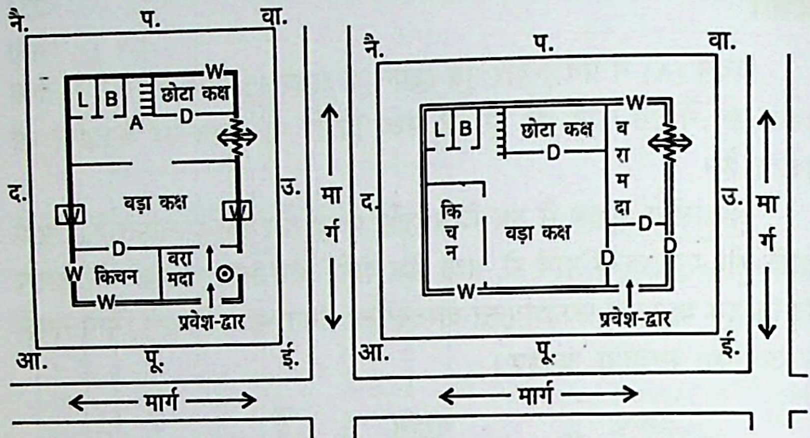
भवन (A) में प्रवेश-द्वार पूर्व-ईशान के मध्य 13 फीट की दूरी में तथा भवन (B) में 20 फीट की दूरी के मध्य किसी भी स्थान पर बनवाया जा सकता है।

आवासीय भूखंड में हम जिस ओर प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं, उसके बायीं ओर एक अन्य मार्ग हो, तथा शेष दोनों ओर अन्य भवनादि के कारण बंद हो तब वायु एवं प्रकाशयुक्त वास्तुशास्त्र संगत भवन निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप करवाना चाहिए।



1. छोटा भवन—संभावित आकार (फीट में)—(12× 18), (12× 20), (12× 24), (15× 20), (15× 25), (15× 30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शे की संरचना (मानक) 15× 22$\frac{1}{2}$ वर्ग फीट है।

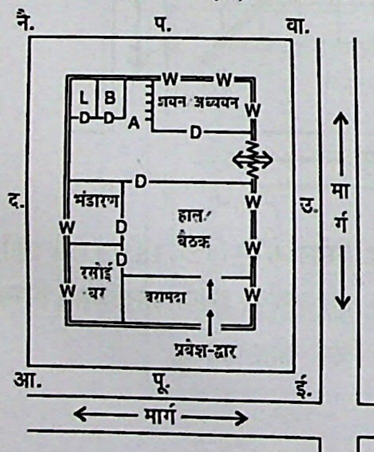
(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन   (B) मार्ग पर लंबाई में भवन



जहां– A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़कियां
D = दरवाजे
⇔ = चैनल गेट (शटर) या अन्य प्रवेश-द्वार
⊙ = जल स्थान

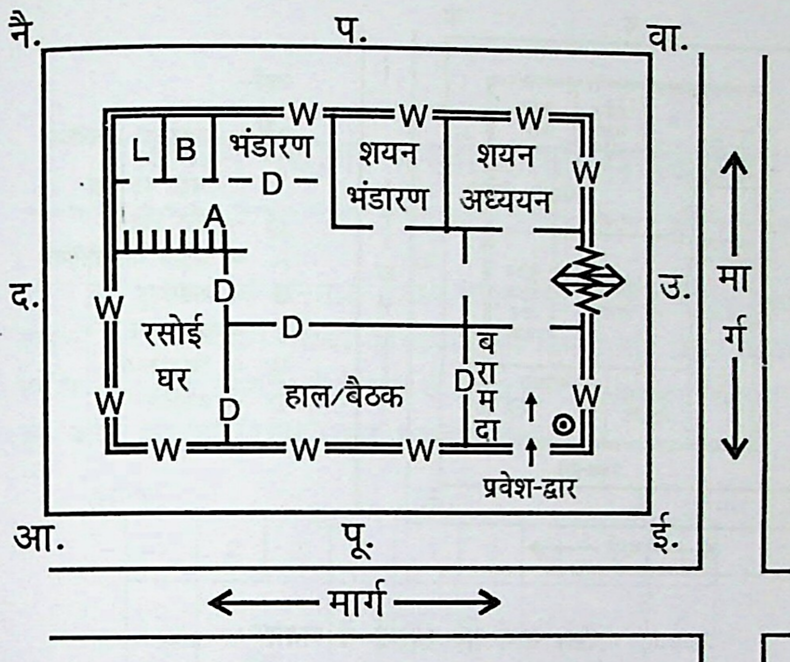
2. मध्यमाकार भवन–संभावित आकार (फीट में) (20× 25), (20× 30), (20× 35), (20× 40), (25× 35), (25× 40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना (20× 40) को आधार बनाकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–
⊙ = जल स्थान
⇔ = (चैनल गेट) शटर अथवा अन्य वड़ा दरवाजा
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़कियां
D = दरवाजे

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

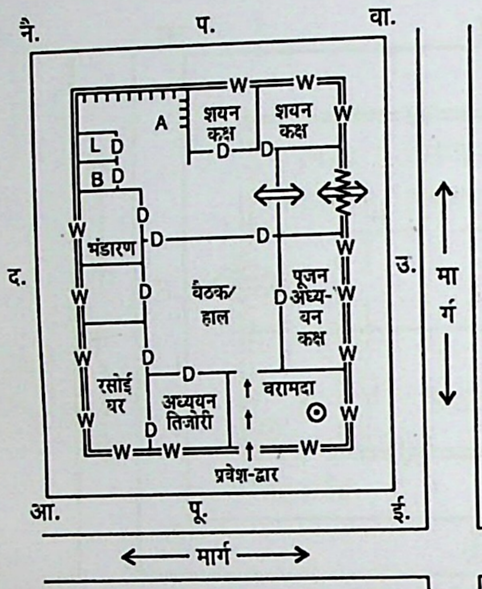


विशेष

भवन (A) में प्रवेश-द्वार पूर्व-ईशान में मात्र 7 फीट की चौड़ाई में तथा भवन (B) में 13 फीट की लंबाई में लेना चाहिए। बशर्ते कुल प्लाट (20× 40) अथवा इससे अधिक क्षेत्रफल का हो।

3. बड़ा भवन—संभावित आकार (फीट में) (40× 40), (40× 50), (40× 60), (40× 80), (45× 50), (45× 60), (45× 65), (50× 75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40× 60), वर्ग फीट मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

= शटर या जालीदार बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

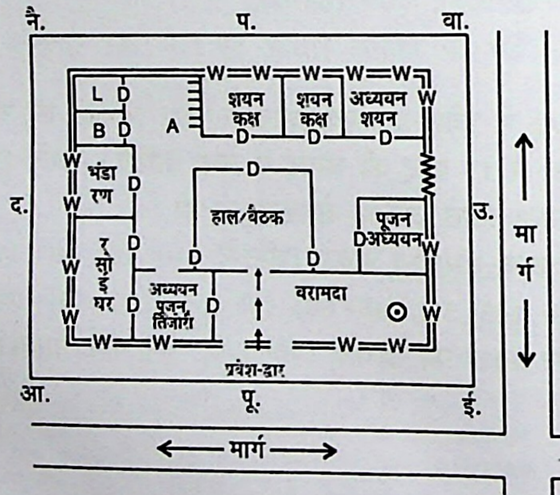
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़कियां

D = दरवाजे

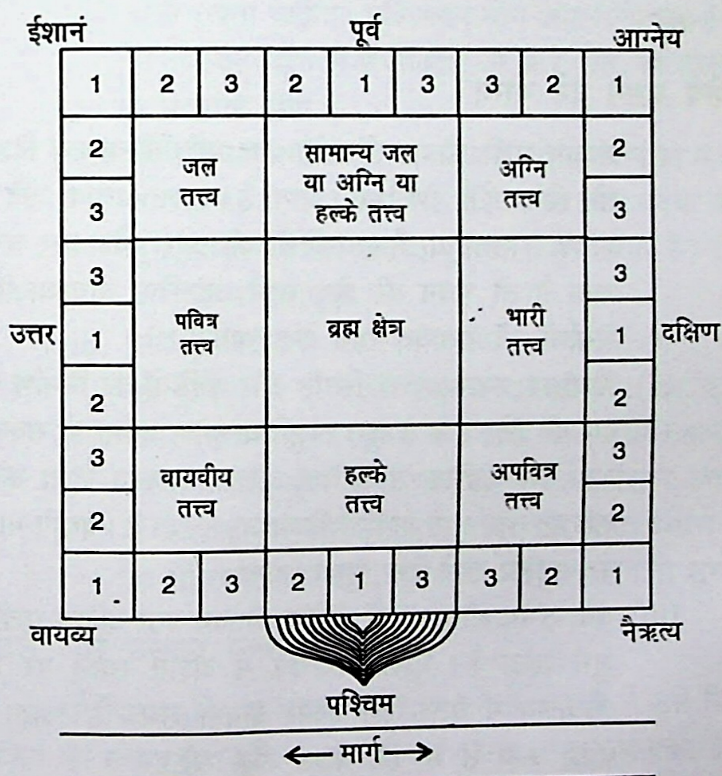
(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



□□

पश्चिम-दिशा मुखी आवास विशेष

वास्तु-शास्त्र के अनुसार पश्चिम-दिशा मुखी आवास में पंच तत्त्वों के रूप में उनसे संबंधित पदार्थों का समायोजन निम्नानुसार किया जाता है। हमें पश्चिम-मुखी आवास के निर्माण के समय निर्दिष्ट मानचित्र के साथ-साथ इन बातों का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए–



(i) पश्चिम-दिशा मुखी आवास में पश्चिम-नैऋत्य की अपेक्षा पश्चिमी-वायव्य में प्रवेश-द्वार उत्तम होता है। किंतु यह ध्यान रखें कि यदि हमारे प्रवेश-द्वार के सम्मुख यदि कोई पेड़, बिजली का खंभा, अन्य भवन का कोई खंभा, गड्ढा, पहाड़ी (टीला) आदि इस प्रकार हो जो द्वार और मार्ग के बीच अवरोध उत्पन्न करता हो अथवा उसकी छाया प्रवेश-द्वार पर पड़ती हो तब या तो उक्त अवरोधादि को हटायें, अथवा प्रवेश-द्वार पश्चिमी नैऋत्य दिशा में बनवायें आवासीय भवन में प्रवेश-द्वार मध्य में नहीं होते।

(ii) ऊपरी मंजिलों पर वास्तु सक्रियता गौण होती है। अतः उसका निर्माण तल मंजिल के समान यथावत अथवा अपनी सुविधानुसार करवाया जा सकता है। किंतु दक्षिण नैऋत्य सर्वाधिक ऊंचा रहे, यह ध्यान रखें।

विशेष ध्यान देने योग्य

(i) पश्चिम मुखी आवास में प्रवेश-द्वार पश्चिमी-वायव्य दिशा की ओर होने पर ही श्रेष्ठ माना जाता है। इसके अलावा यदि किसी कारण से उत्तर या नैऋत्य दिशा की ओर प्रवेश-द्वार बनवाया जाता है तो भवन की शेष सभी आंतरिक व्यवस्थाओं और निर्माणों को यथावत रहने देना चाहिए।

(ii) शौचालय, स्नानगृह की स्थिति और सीढ़ियों का निर्माण प्रवेश-द्वार की ओर होने से कुछ असुविधाजनक प्रतीत हो सकता है। अतः इन्हें अधिक से अधिक दक्षिण, आग्नेय दिशा की ओर कुछ हद तक आगे या पीछे किया जा सकता है। यद्यपि मानचित्र के अनुरूप रहने देना सुखद होगा।

(iii) यथा संभव शौचालय में सीटिंग (बैठक) उत्तर-दक्षिणं मुखी होना शुभ रहता है। चूंकि मानचित्र में दर्शित स्थान पर निर्मित शौचालय में बैठक इस प्रकार बनाना संभद है। अतः उसमें प्रवेश कहीं से भी हो, बैठक ठीक रखें।

(iv) सैप्टिक टैंक को दक्षिण-नैऋत्य दिशा में ही भवन के बाहरी ओर अथवा अंदर बनवाया जा सकता है। यथा संभव शौचालय को भवन के बाहरी परिसर में बनवाना व्यावहारिक एवं वास्तु दोनों ही प्रकार से शुभ होगा।

(v) जल स्थान जहां तक संभव हो अंडर ग्राउंड रहे, ईशान की ओर मानचित्र में दर्शित स्थान पर भवन के अंदर या बाहर की ओर भी बनवाया जा सकता है। किसी विशेष मजबूरी के चलते यदि आगे-पीछे करना आवश्यक हो तो उत्तर दिशा की ओर रखना अधिक शुभ होगा, जबकि पूर्व की ओर ले जाना मध्यम शुभ होगा।

(vi) पीछे की ओर अर्थात् उत्तर, ईशान, पूर्व की छतें झुकी हुई तथा खुली रखना चाहिए। यदि भवन तीन ओर अन्य भवनों से घिरा हो तो उक्त दिशाओं मे आकाश की ओर (छत) को खुला छोड़ना लाभदायक होगा।

(vii) सीढ़ियों का निर्माण यदि मानचित्र में दर्शित स्थान पर न करवाया जा रहा हो तो यह ध्यान रखें पश्चिम की ओर चढ़ना सर्वाधिक शुभ, दक्षिण नैऋत्य उत्तम, पूर्व-उत्तर शुभ होता है। ईशान में सीढ़ियां न बनाएं।

(viii) यदि चहारदीवारी का निर्माण किया गया है अथवा बागवानी की सुविधा हो तो भवन में प्रवेश-द्वार की ओर अशोक के वृक्ष सम संख्या में तथा भवन के पिछले भाग उत्तर-ईशान पूर्व में महकने वाले सुंदर पुष्प तथा दाहिनी ओर ईशान उत्तर दिशा में बेल, कोमल पत्ते वाले तथा बायीं ओर स्थित दक्षिण आग्नेय के आसपास बड़े, ऊंचे, मोटे वृक्ष आदि का लगाना शुभ होगा।

ढाल और उसका निर्माण

हम जिस भूमि पर भवन बनाने जा रहे हैं, प्रकृति ने उसे किसी भी प्रकार का स्वरूप प्रदान किया हो, उसे हमें अपने अनुकूल बनाकर ही प्रयोग

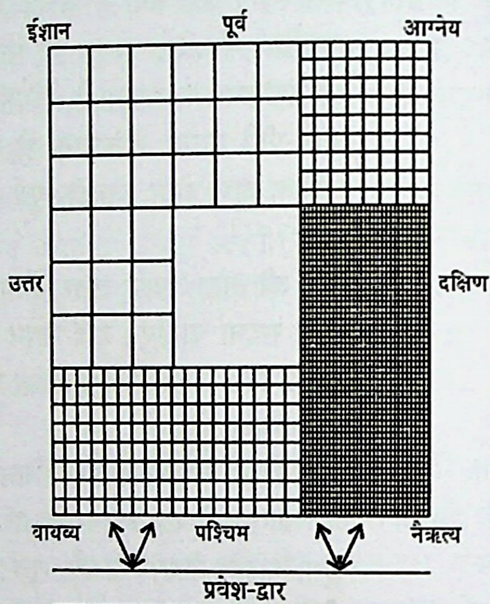
करना चाहिए। अतः इस दिशा-मुखी आवास हेतु हमें संपूर्ण भवन का ढाल इस प्रकार निर्मित कराना (कृत्रिम रूप से) अधिक शुभत्व उत्पन्न करने वाला होगा। आवास चाहे अत्यंत छोटा हो, मध्यमाकार हो या बड़ा हो संपूर्ण निर्मित भूतल को दिशानुरूप निम्न चित्र के अनुरूप ढाल का निर्माण करावें–

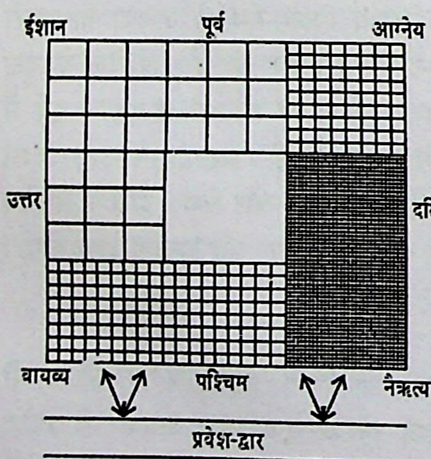
(i) लंबाई और चौड़ाई में स्थित कुल दूरी को 9-9 भागों में विभाजित किया।

(ii) निर्दिष्ट रूप से दिशानुरूप–

(A) सर्वोच्च भूमि को कम से कम 6 इंच तथा अधिक से अधिक 10-12 इंच तक ऊंचा करें।

(B) सामान्य उच्च भूमि को कम से कम 4





(A) सर्वोच्च भूमि (दक्षिण, नैऋत्य)

(B) सामान्य उच्च (आग्नेय, पश्चिम वायव्य)

(C) निम्न तल (उत्तर, ईशान, पूर्व)

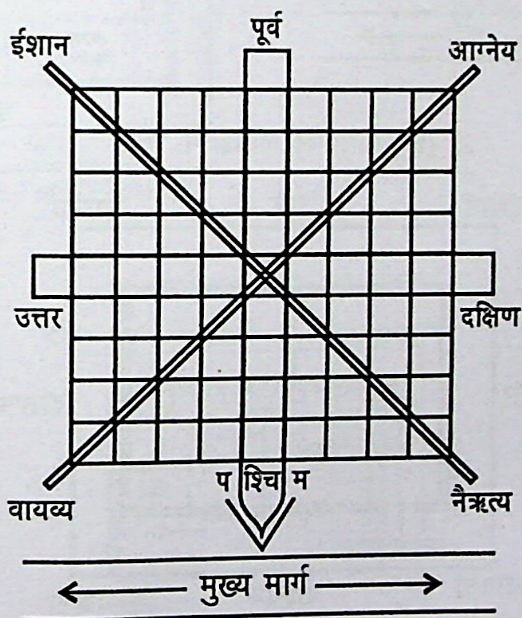
इंच और अधिक से अधिक 6-8 इंच तक ऊंचा करें।
(C) निम्न भूमि को समतल ही बना रहने दें।

आवासीय मानचित्र

जब एक ही दिशा पश्चिम में मुख्य मार्ग या सड़क हो तथा अन्य शेष सभी दिशाओं में मार्ग आदि का अभाव हो तो हमें अपने भवन का प्रवेश-द्वार भी उसी दिशा में बनाना होगा तथा वास्तुशास्त्र के निर्देशों के अनुरूप भवन का निर्माण निम्नांकित नक्शे के अनुसार करना शुभदायक होगा।

चूंकि हमें तीन ओर से हवा, प्रकाश एवं निकासी की पर्याप्त सुविधा नहीं है, अत इसका प्रबंध भी हमें करना होगा। अर्थात् छत का ऊपरी हिस्सा कुछ-न-कुछ खुला छोड़ना होगा। जिसका ध्यान नक्शे में पर्याप्त रखा गया है।

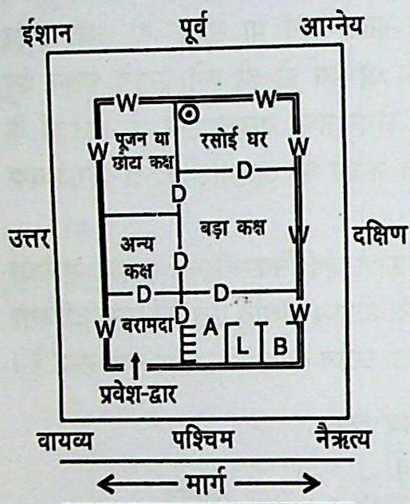
दिशाबोध चक्र



निम्न नक्शों की आदर्श संरचना $(15 \times 22\frac{1}{2})$ माप है।

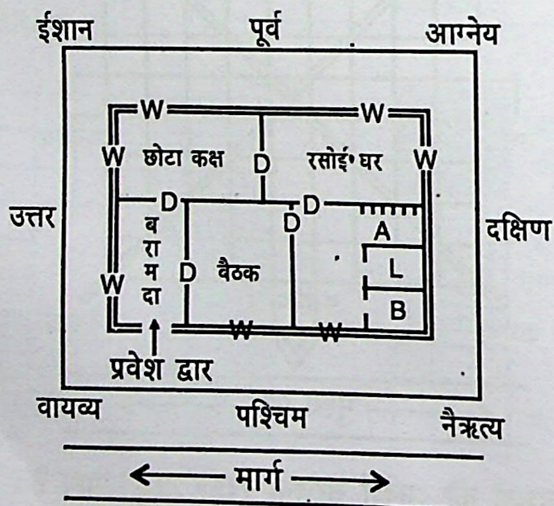
1. छोटा भवन–संभावित आकार (फीट में)–(12× 18), (12× 20), (12× 24), (15× 20), (15× 25), (15× 30) अथवा इसके आसपास।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा
⊙ = जल स्थान

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

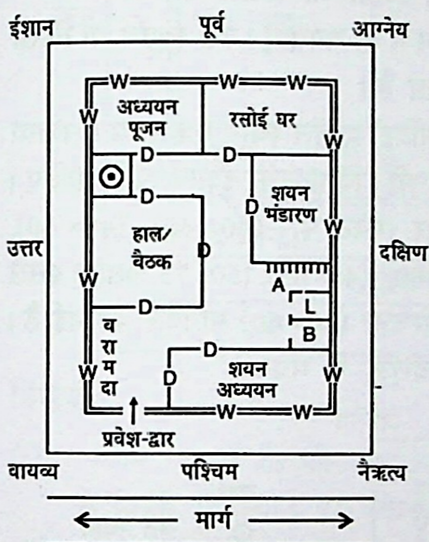


विशेष

छोटे भवन में जल स्थान रसोई घर के ईशान कोण में (भवन A के अनुसार) अथवा उत्तर में रखा जा सकता है।

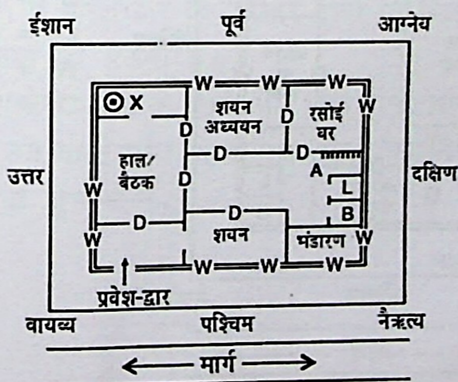
2. मध्यमाकार भवन–संभावित आकार (फीट में)–(20× 25), (20× 30), (20× 35), (20× 40), (25× 35), (25× 40) अथवा इनके आसपास।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–
⊙ = जल स्थान
X = पूजा स्थान
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



निम्न नक्शे की संरचना (20× 40) मानकर की गई है।

विशेष

(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट पश्चिम-वायव्य में किसी भी स्थान पर प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

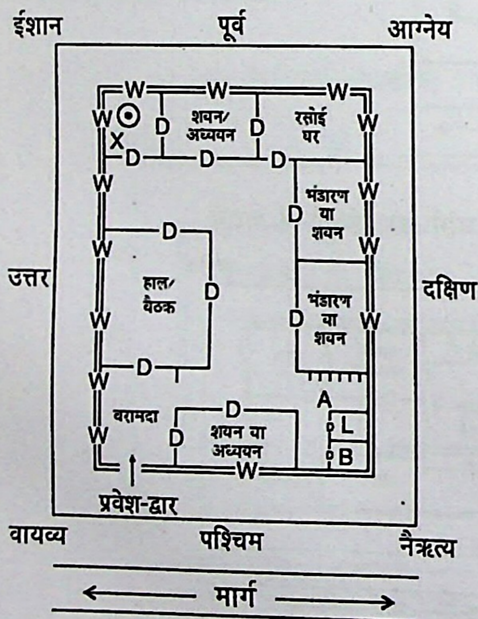
(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं चढ़ाव आदि को सुविधानुसार किंतु दक्षिण-नैऋत्य परिसर में ही परिवर्तित किया जा सकता है।

(iii) जल स्थान यत्नपूर्वक उत्तर-ईशान में ही बनवाएं। उसे स्वतंत्र या किसी कक्ष में भी बनवाया जा सकता है।

(iv) भवन (B) के समान पूजा गृह (मंदिर) व जल स्थान एक साथ बनवाया जा सकता है, और पृथक्-पृथक् भी। दिशा उत्तर-ईशान होना चाहिए।

3. **बड़ा भवन**–संभावित आकार (फीट में)–(40× 40), (40× 50), (40× 60), (40× 80), (45× 50), (45× 60), (45× 65), (50× 75) अथवा इससे भी बड़ा। आग्नेय निम्न नक्शों की संरचना (40× 60) मानकर की गई है।

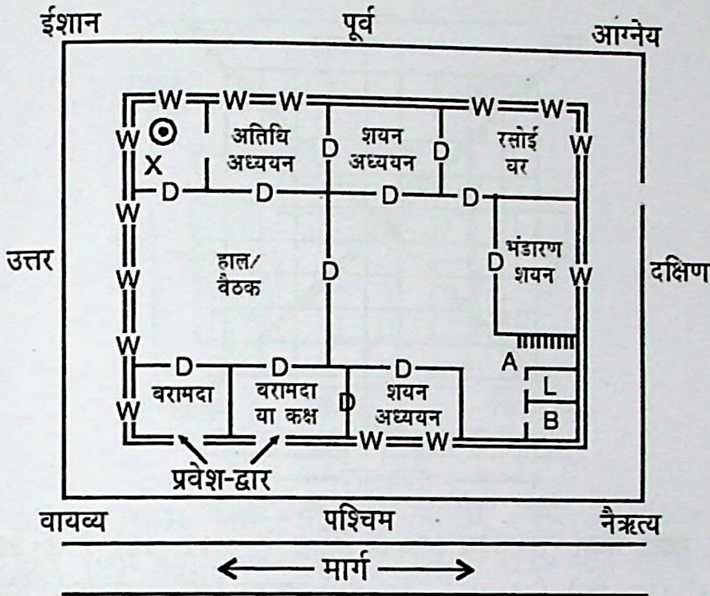
(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

⊙ = जल स्थान
X = पूजा स्थान
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



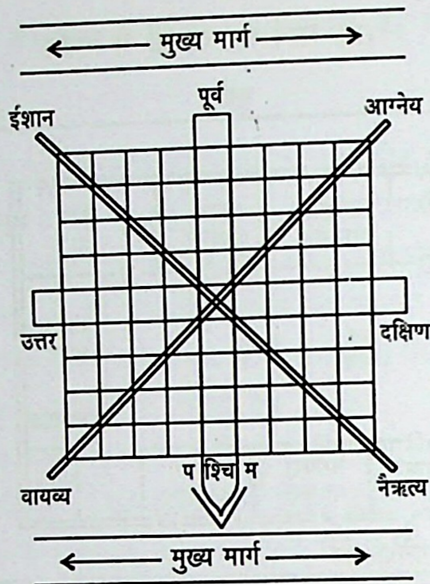
विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट पश्चिम-वायव्य में किसी भी स्थान पर प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय स्नानगृह एवं चढ़ाव या सीढ़ियों का क्रम सुविधानुसार दक्षिण-नैऋत्य में ही किया जाना चाहिए।

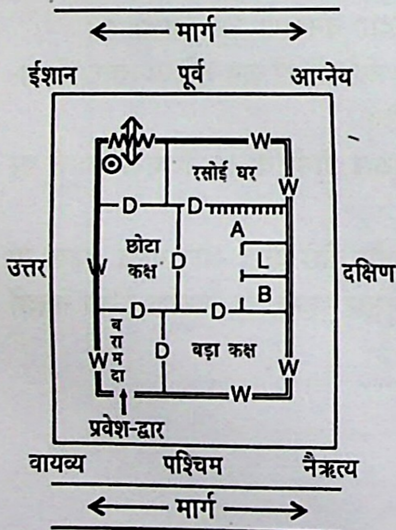
(iii) भवन (B) में प्रवेश-द्वार चित्रानुसार दोनों या किसी एक स्थान पर भी बनवाया जा सकता है।

जब आवासीय भूखंड के आगे और पीछे दोनों ओर मुख्य सड़क या आम रास्ते हों, तब वास्तुशास्त्र के अनुसार भवन का निर्माण निम्न नक्शों के अनुरूप करना शुभ होगा।



1. **छोटा भवन**—संभावित आकार (फीट में)—(12× 18), (12× 20), (12× 24), (15× 20), (15× 25), (15× 30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शे की रचना माप 15× 22/1/2 मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

= चैनल गेट शटर या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = सीढ़ियां, चढ़ाव

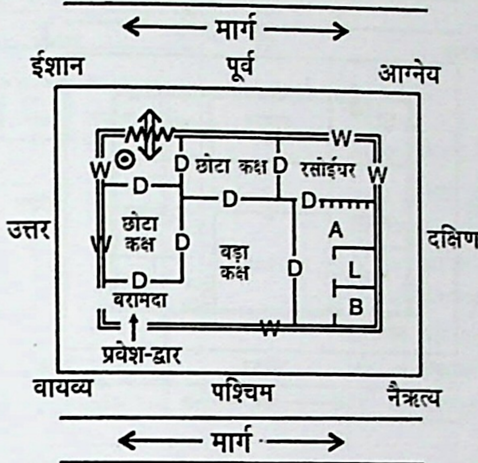
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

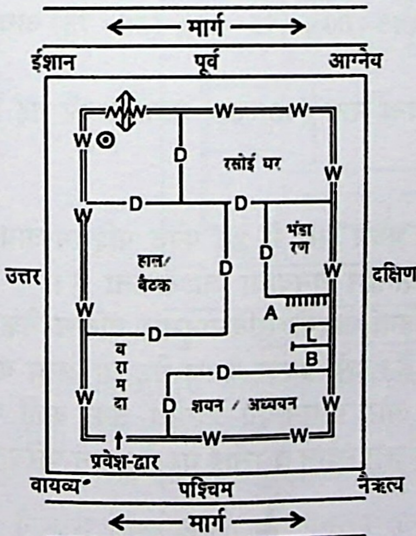
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



2. **मध्यमाकार भवन**—संभावित आकार (फीट में)—(20× 25), (20× 30), (20× 35), (20× 40), (25× 35), (25× 40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना का आदर्श नाप (20× 40) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

= शटर, चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

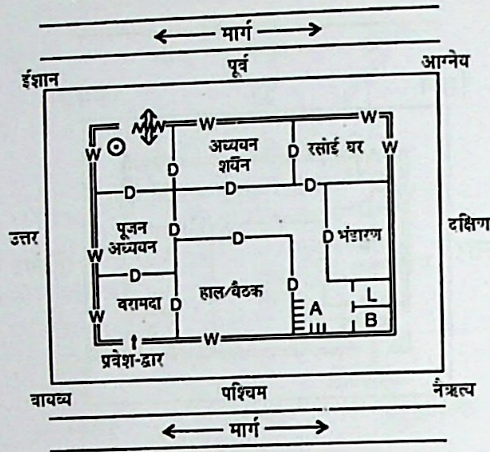
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट वायव्य-पश्चिम में प्रवेश-द्वार कहीं भी रखा जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं चढ़ाव को सुविधानुसार क्रम या स्थान पर दक्षिण-नैऋत्य परिसर में कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(iii) जल स्थान को यत्नपूर्वक ईशान में रखना शुभ होगा।

3. बड़ा भवन–संभावित आकार (फीट में) (40× 40), (40× 50), (40× 60), (40× 80), (45× 50), (45× 60), (45× 65), (50× 75) अथवा इससे भी बड़ा।

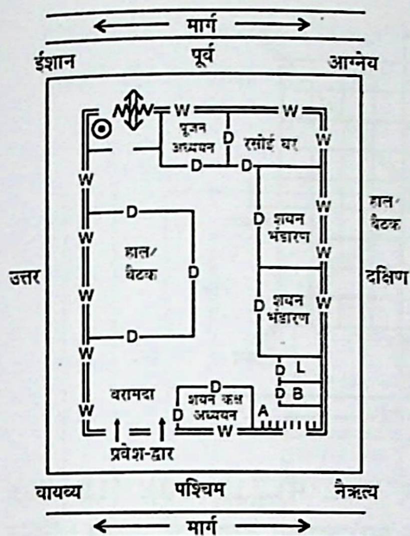
आग्नेय निम्न नक्शे की संरचना माप (40× 60) मानकर की गई है।

विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट पश्चिम-वायव्य में किसी भी स्थान पर प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं सीढ़ियां अपनी सुविधानुसार दक्षिण नैऋत्य में व्यवस्थित की जा सकती हैं। इसी प्रकार चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा विपरीत मार्ग की ओर ईशान-पूर्व-आग्नेय तक कहीं भी बनवाया जा सकता है। बशर्ते जल स्थान व रसोई घर में स्नान परिवर्तन न हो।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

= शटर, चैनल गेट या बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

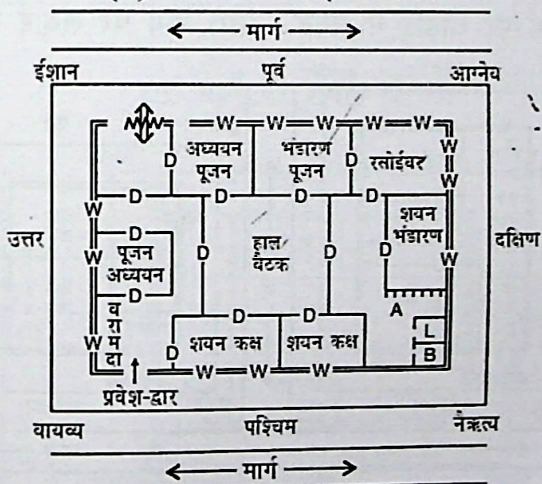
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

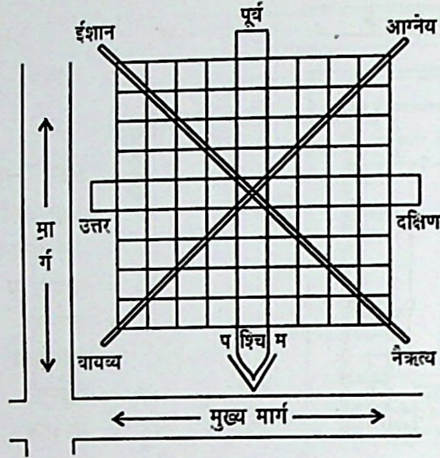
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



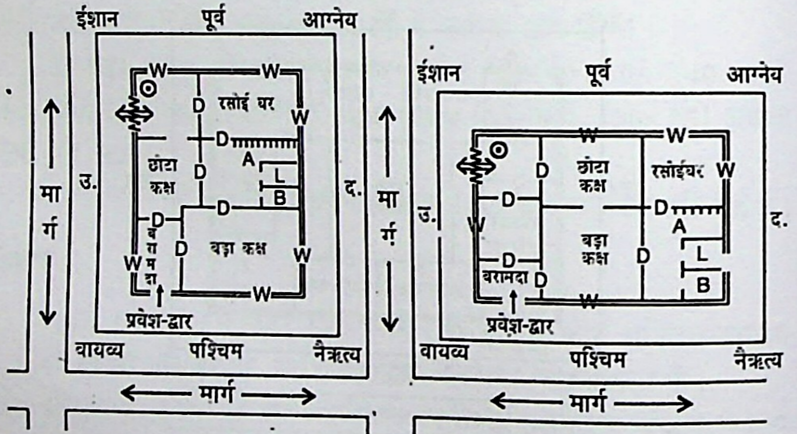
यदि आवासीय भूखंड में हम जिस दिशा में प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं, उसके दाहिने ओर एक अन्य मार्ग हो, तथा शेष दो ओर अन्य भवन आदि के कारण बंद हो तब पर्याप्त वायु एवं प्रकाशयुक्त वास्तु संगत भवन का निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप कराना शुभ होगा।

दिशाबोध चक्र



1. **छोटा भवन**–संभावित आकार (फीट में) (12× 18), (12× 20), (12× 24), (15× 20), (15× 25), (15× 30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना ($15\times 22\frac{1}{2}$) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन (B) मार्ग पर लंबाई में भवन



जहां– = शटर, चैनल गेट या अन्य दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

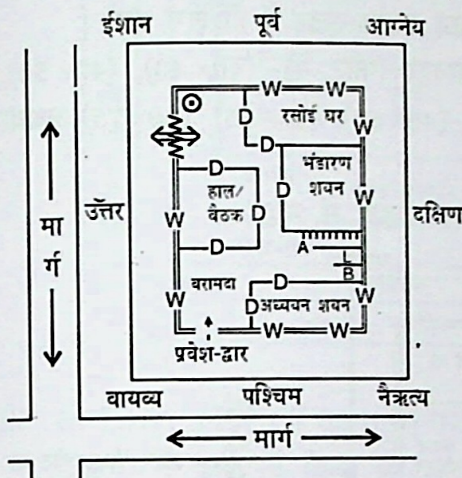
L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

2. मध्यमाकार भवन–संभावित आकार (फीट में) (20× 25), (20×30), (20× 35), (20× 40), (25× 35), (25× 40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना की आदर्श नाम (20× 40) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= शटर, चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

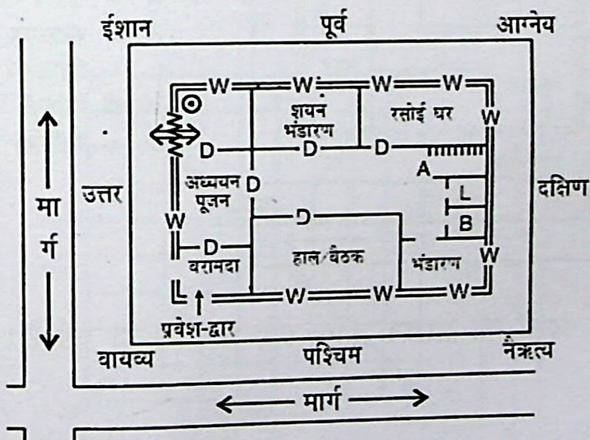
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

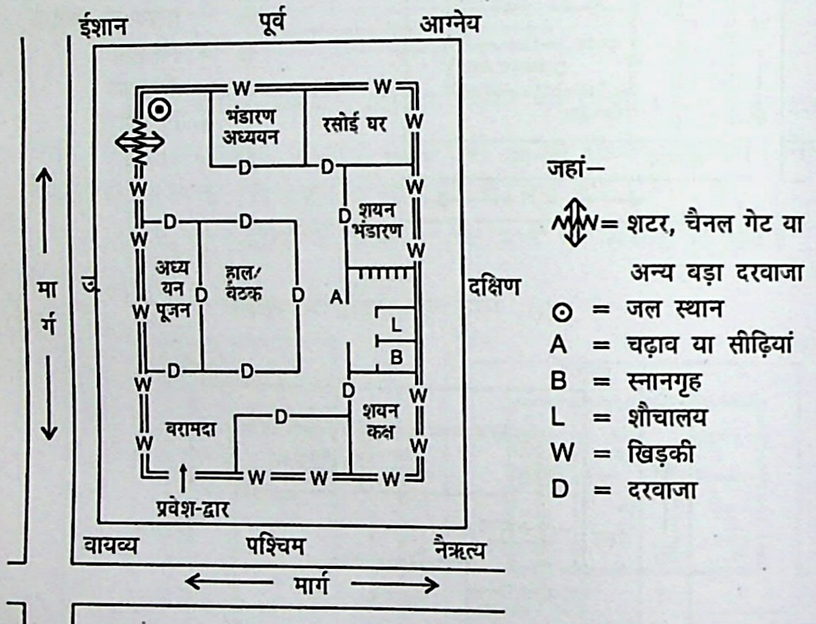
(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट पश्चिम-वायव्य में

किसी भी स्थान पर प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह और सीढ़ियों को सुविधानुसार दक्षिण-नैऋत्य परिसर में कहीं भी बनवाया जा सकता है। इसी प्रकार शटर, चैनल गेट या अन्य दरवाजा उत्तर-ईशान की बजाय उत्तर-वायव्य में भी बनाया जा सकता है। जबकि जल स्थान ईशान-उत्तर में ही शुभ होगा।

3. बड़ा भवन–संभावित आकार (फीट में)–(40× 40), (40× 50), (40× 60), (40× 80), (45× 50), (45× 60), (45× 65), (50× 75) अथवा इससे भी बड़ा।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन

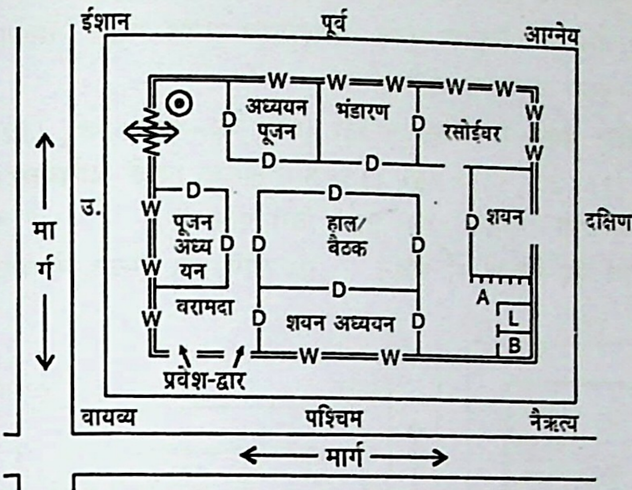


निम्न नक्शों की संरचना (40× 60) मानकर की गई है।

विशेष

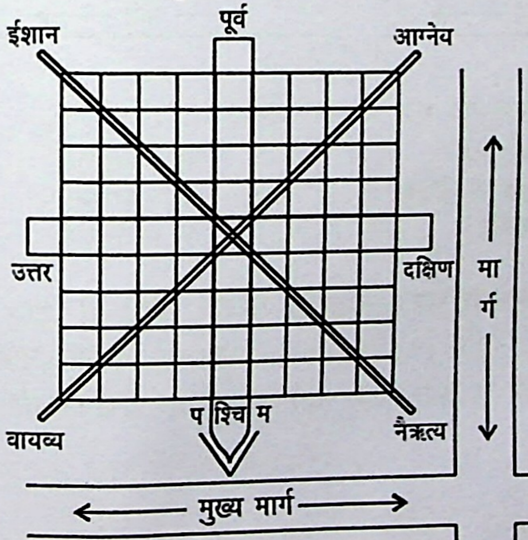
(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन B में 20 फीट दूरी के पश्चिम-वायव्य में कहीं भी प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



(ii) शौचालय स्नानगृह एवं चढ़ाव का स्थान परिवर्तन उसी परिसर (दक्षिण नैऋत्य) में कहीं भी किया जा सकता है।

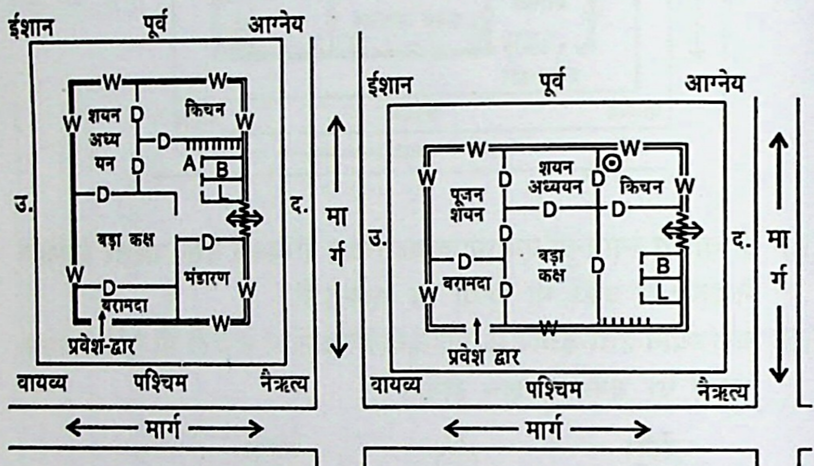
(iii) जल स्थान उत्तर-ईशान में चिह्नित दोनों स्थानों में से कहीं भी सुविधाजनक स्थान पर बनवाना शुभ होगा।



आवासीय भूखंड में हम जिस ओर प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं, उसके बायीं ओर एक अन्य मार्ग हो, तथा शेष दोनों ओर अन्य भवनादि के कारण बंद हो तब वायु एवं प्रकाश युक्त वास्तुशास्त्र संगत भवन निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप करवाना चाहिए।

1. छोटा भवन–संभावित आकार (फीट में)–(12× 18), (12× 20), (12× 24), (15× 20), (15× 25), (15× 30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शे की संरचना (मानक) 15× 22½ वर्ग फीट है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन (B) मार्ग पर लम्बाई में भवन



जहां– = चैनल गेट, शटर या अन्य दरवाजा

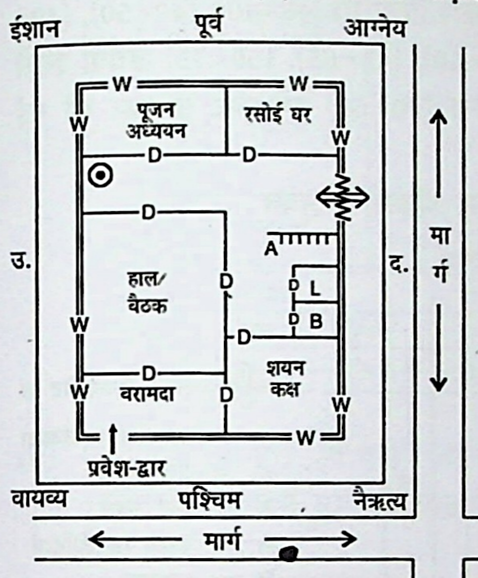
⊙ = जल स्थान
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
L = शौचालय
B = स्नानगृह
D = दरवाजा
W = खिड़की

2. मध्यमाकार भवन–संभावित आकार (फीट में) (20× 25), (20× 30), (20× 35), (20× 40), (25× 35), (25× 40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना (20× 40) को आधार बनाकर की गई है।

विशेष

(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट पश्चिम-वायव्य में प्रवेश- द्वार बनवाया जा सकता है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

= शटर, चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

X = पूजा का स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

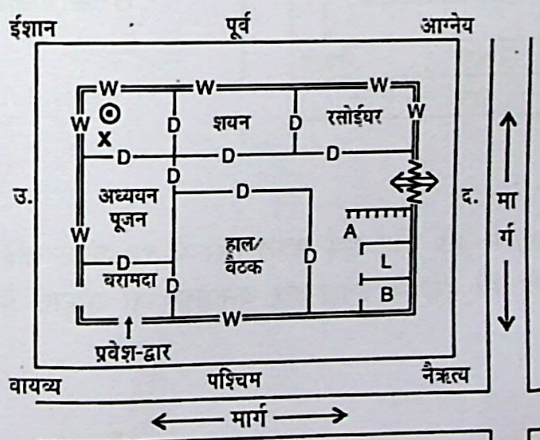
B = स्नानगृह

L = शौचालय

D = दरवाजा

W = खिड़की

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

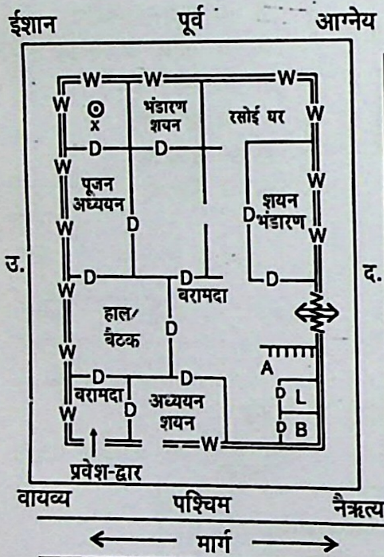


(ii) जल स्थान यत्नपूर्वक ईशान-उत्तर में ही रखें, भले ही वह स्वतंत्र स्थान हो अथवा किसी कक्ष में।

(iii) शौचालय, स्नानगृह एवं सीढ़ियों में परस्पर स्थान-परिवर्तन दक्षिण-नैऋत्य परिसर में कहीं भी किया जा सकता है।

3. बड़ा भवन–संभावित आकार (फीट में) (40× 40), (40× 50), (40× 60), (40× 80), (45× 50), (45× 60), (45× 65), (50× 75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40× 60) वर्ग फीट मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= शटर, चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

X = पूजा स्थल

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

L = शौचालय

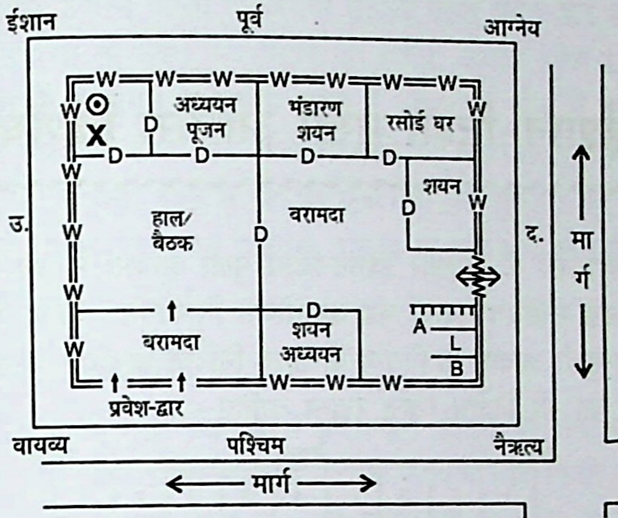
W = खिड़की

D = दरवाजा

विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट पश्चिम-वायव्य की किसी भी दूरी में प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

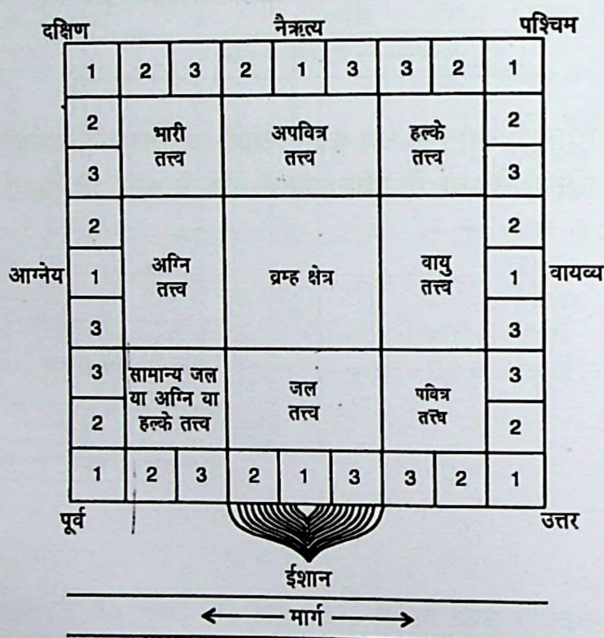


(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं चढ़ाव आदि का स्थान-परिवर्तन उसी परिसर (दक्षिण) नैऋत्य में सुविधाजनक ढंग से कहीं भी किया जा सकता है।

□□

ईशान-दिशा मुखी आवास विशेष

वास्तुशास्त्र के अनुसार ईशान-दिशा मुखी आवास में पंच तत्त्वों के रूप में उनसे संबंधित पदार्थों का समायोजन निम्नानुसार किया जाता है। हमें ईशान-मुखी आवास के निर्माण के समय निर्दिष्ट मानचित्र के साथ-साथ इन बातों का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए–



(i) ईशान-दिशा मुखी आवास में ईशान-पूर्व और ईशान-उत्तर दोनों में प्रवेश- द्वार उत्तम होता है। यह ध्यान रखें कि हमारे प्रवेश-द्वार के सम्मुख यदि कोई पेड़, बिजली का खंभा, अन्य भवन का कोई खंभा,

गड्ढा, पहाड़ी (टीला) आदि इस प्रकार हो जो द्वार और मार्ग के बीच अवरोध उत्पन्न करता हो अथवा उसकी छाया प्रवेश-द्वार पर पड़ती हो तब या तो उक्त अवरोधादि को हटायें, अथवा प्रवेश-द्वार दूसरी दिशा में बनवाएं। आवासीय भवन में प्रवेश-द्वार मध्य में नहीं होते।

(ii) यदि भवन के तीन ओर अन्य भवनादि हों, चहारदीवारी की सुविधा भी न हो, ऐसी दशा में प्रकाश एवं वायु की सुविधा हेतु छत को खुला रखना होगा। तब पश्चिम, वायव्य या ब्रह्म क्षेत्र को खुला छोड़ें। दक्षिण-नैऋत्य नहीं।

विशेष ध्यान देने योग्य

(i) ईशान मुखी आवास में प्रवेश-द्वार ईशान के दोनों ओर होने पर श्रेष्ठ माना जाता है। इसके अलावा यदि किसी कारण से पूर्व-आग्नेय दिशा की ओर प्रवेश-द्वार बनवाया जाता है, तो भवन की शेष सभी आंतरिक व्यवस्थाओं और निर्माणों को यथावत रहने देना चाहिए।

(ii) प्रवेश-द्वार की स्थिति और रसोईघर का निर्माण एक ही ओर पास-पास होने से कुछ असुविधाजनक प्रतीत हो सकता है। अतः अधिक से अधिक किचन, दक्षिण दिशा की ओर कुछ हद तक आगे या पीछे किया जा सकता है। यद्यपि मानचित्र के अनुरूप रहने देना सुखद होगा।

(iii) यथा संभव शौचालय में सीटिंग (बैठक) उत्तर-दक्षिण मुखी होना शुभ रहता है। चूंकि मानचित्र में दर्शित स्थान पर निर्मित शौचालय में बैठक इस प्रकार संभव है। अतः बिना किसी शंका के शौचालय इसी क्षेत्र में बनवाएं।

(iv) सैप्टिक टैंक को दक्षिण-नैऋत्य दिशा में ही भवन के बाहरी ओर अथवा अंदर बनवाया जा सकता है। यथासंभव शौचालय को भवन के बाहरी परिसर में बनवाना व्यावहारिक एवं वास्तु दोनों ही प्रकार से शुभ होगा।

(v) जल स्थान जहां तक संभव हो अंडर ग्राउंड रहे, ईशान की ओर मानचित्र में दर्शित स्थान पर भवन के अंदर या बाहर की ओर भी बनवाया जा सकता है। किसी विशेष मजबूरी के चलते यदि आगे-पीछे करना आवश्यक हो तो उत्तर दिशा की ओर रखना अधिक शुभ होगा, जबकि पूर्व की ओर ले जाना मध्यम शुभ होगा।

(vi) ऊपरी मंजिलों के लिए वास्तु सक्रियता गौण होती है। इस हेतु मात्र यह ध्यान रखना चाहिए कि ऊपरी प्रत्येक मंजिल की ऊंचाई नीचे की मंजिल से कम ऊंची (भले ही यह कमी 4-6 इंच की क्यों न हो) हो, तथा दक्षिण-नैऋत्य दिशा के निर्माण सर्वाधिक ऊंचाई तक हो।

(vii) सीढ़ियों का निर्माण यदि मानचित्र में दर्शित स्थान पर न करवाया जा रहा हो तो यह ध्यान रखें पश्चिम की ओर चढ़ना सर्वाधिक शुभ, दक्षिण-नैऋत्य उत्तम, पूर्व-उत्तर शुभ होता है। ईशान में सीढ़ियां न बनाएं।

(viii) यदि चहारदीवारी का निर्माण किया गया है अथवा बागवानी की सुविधा हो तो भवन में प्रवेश-द्वार की ओर हल्के, सुगंधित, कोमल पत्तों और पुष्प वाले, भवन के पिछले भाग दक्षिण, नैऋत्य में भारी पेड़ या फलदार वृक्ष तथा दाहिनी ओर दक्षिण-आग्नेय दिशा में सामान्य चौड़े पत्ते वाले पेड़ आदि तथा बायीं ओर स्थित पश्चिम-वायव्य के आसपास अशोक या ऐसे ही ऊंचे पेड़ का लगाना शुभ होगा।

ढाल और उसका निर्माण

हम जिस भूमि पर भवन बनाने जा रहे हैं, प्रकृति ने उसे किसी भी प्रकार का स्वरूप प्रदान किया हो, उसे हमें अपने अनुकूल बनाकर ही प्रयोग करना चाहिए। अतः इस दिशा-मुखी आवास हेतु हमें संपूर्ण भवन का ढाल इस प्रकार निर्मित कराना (कृत्रिम रूप से) अधिक शुभत्व उत्पन्न करने वाला होगा। आवास चाहे अत्यंत छोटा हो, मध्यमाकार हो या बड़ा हो संपूर्ण निर्मित भूतल को दिशानुरूप निम्न चित्र के अनुरूप ढाल का निर्माण

करावें।

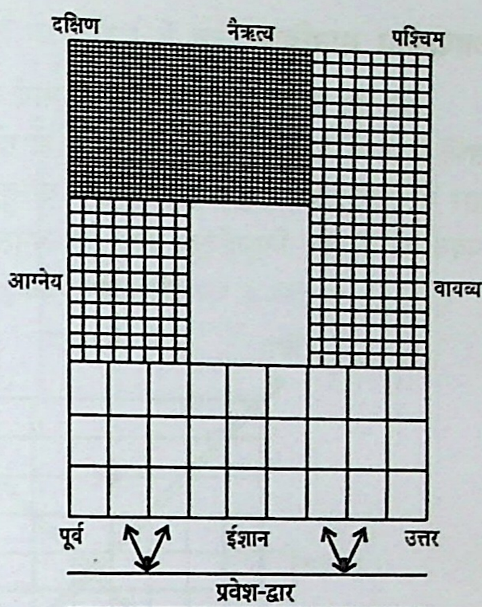
(i) लंबाई और चौड़ाई में स्थित कुल दूरी को 9-9 भागों में विभाजित किया।

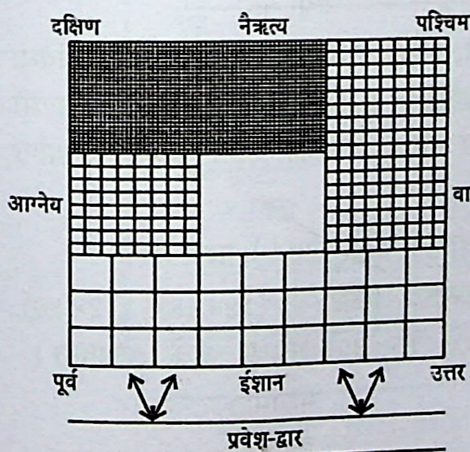
(ii) निर्दिष्ट रूप से दिशानुरूप—

(A) सर्वोच्च भूमि को कम-से-कम 6 इंच तथा अधिक-से-अधिक 10-12 इंच तक ऊंचा करें।

(B) सामान्य उच्च भूमि को कम-से-कम 4 इंच और अधिक-से-अधिक 6-8 इंच तक ऊंचा करें।

(C) निम्न भूमि को समतल ही बना रहने दें।

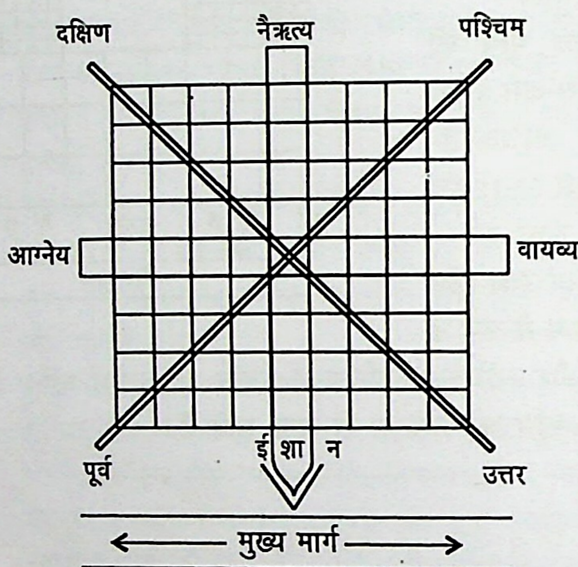




आवासीय मानचित्र

जब एक ही दिशा ईशान में मुख्य मार्ग या सड़क हो, तथा अन्य शेष सभी दिशाओं में मार्ग आदि का अभाव हो तो हमें अपने भवन का प्रवेश द्वार भी उसी दिशा में बनाना होगा तथा वास्तु-शास्त्र के निर्देशों के अनुरूप भवन का निर्माण निम्नांकित नक्शे के अनुसार करना शुभदायक होगा।

दिशाबोध चक्र

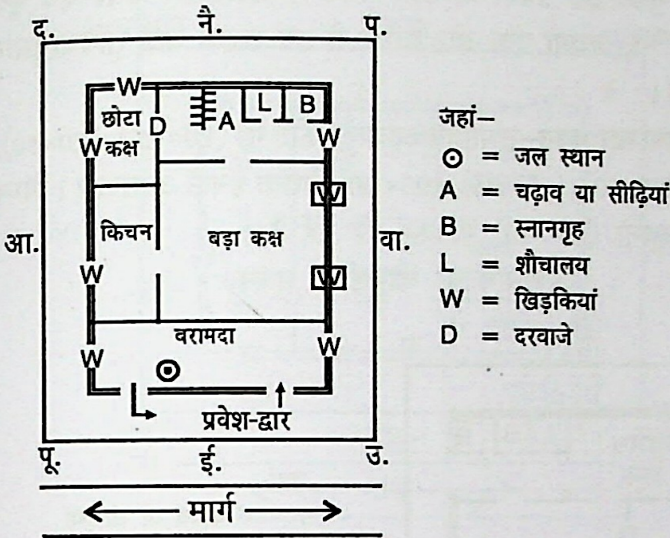


चूंकि हमें तीन ओर से हवा, प्रकाश एवं निकासी की पर्याप्त सुविधा नहीं है, अतः इसका प्रबंध भी हमें करना होगा। अर्थात् छत का ऊपरी हिस्सा कुछ न कुछ खुला छोड़ना होगा। जिसका ध्यान नक्शे में पर्याप्त रखा गया है।

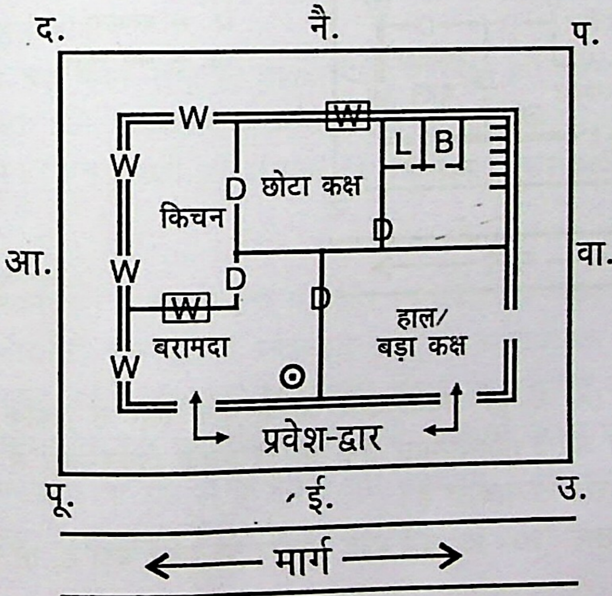
निम्न नक्शों की आदर्श संरचना ($15\times 22\frac{1}{2}$) माप है।

1. छोटा भवन–संभावित आकार (फीट में) (12× 18), (12× 20), (12× 24), (15× 20), (15× 25), (15× 30) अथवा इसके आसपास।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

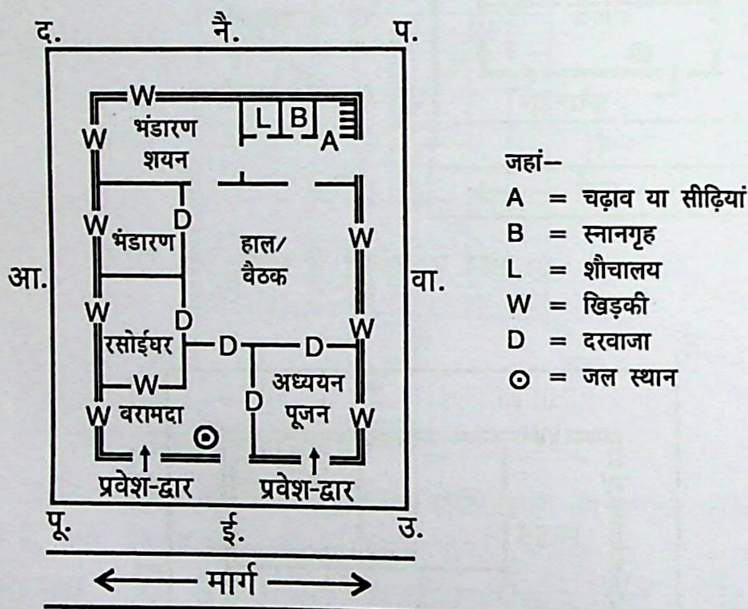


विशेष

ईशान मुखी इस प्रकार के छोटे भवन में प्रवेश-द्वार उत्तर एवं पूर्व दोनों ओर से भी, अथवा एक ओर जिधर से हम रखना चाहें सुविधानुसार रख सकते हैं।

2. मध्यमाकार भवन—संभावित आकार (फीट में) (20× 25), (20×30), (20× 35), (20× 40), (25× 35), (25× 40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शे की संरचना (20× 40) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



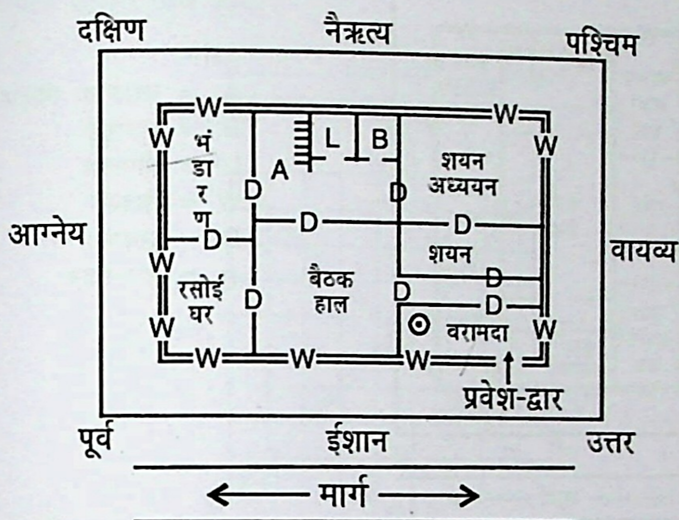
विशेष

(i) भवन (A) में पूर्व अथवा उत्तर अथवा दोनों ओर से जबकि भवन (B) में अपनी सुविधानुसार दोनों ओर से अथवा ईशान-उत्तर से प्रवेश-द्वार रखा जा सकता है।

(ii) यदि प्लाट (20× 40) वर्ग फीट आकार या इससे बड़ा है, तो प्रवेश-

द्वार पूर्व-ईशान, अथवा ईशान-उत्तर दिशा में भवन (A) में मात्र 7

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



फीट की तथा भवन (B) में 13 फीट की दूरी में कहीं भी रखा जा सकता है। प्रवेश-द्वार के समीप ही अंडर ग्राउंड जल संग्रहण अति शुभ होगा।

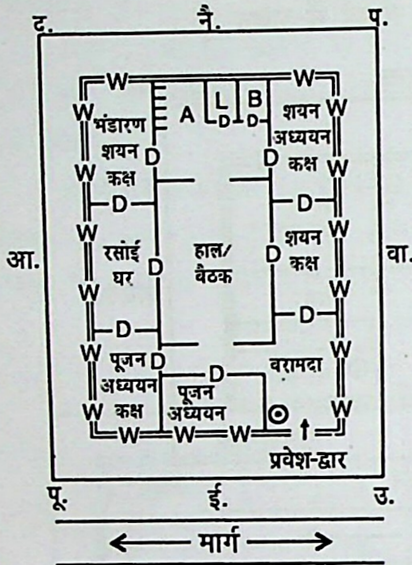
3. बड़ा भवन—संभावित आकार (फीट में) (40× 40), (40× 50), (40× 60), (40× 80), (45× 50), (45× 60), (45× 65), (50× 75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40× 60) मानकर की गई है।

विशेष

(i) भवन (A) में ईशान-उत्तर की ओर 13 फीट तथा भवन (B) में 20 फीट की कुल दूरी में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) भवन (B) में प्रवेश-द्वार उत्तर-ईशान अथवा ईशान-पूर्व में अथवा दोनों ओर प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है। यदि प्रवेश-द्वार एक ही ओर बनवाया जा रहा हो तो दूसरी ओर अध्ययन, पूजन, शयन कक्ष के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

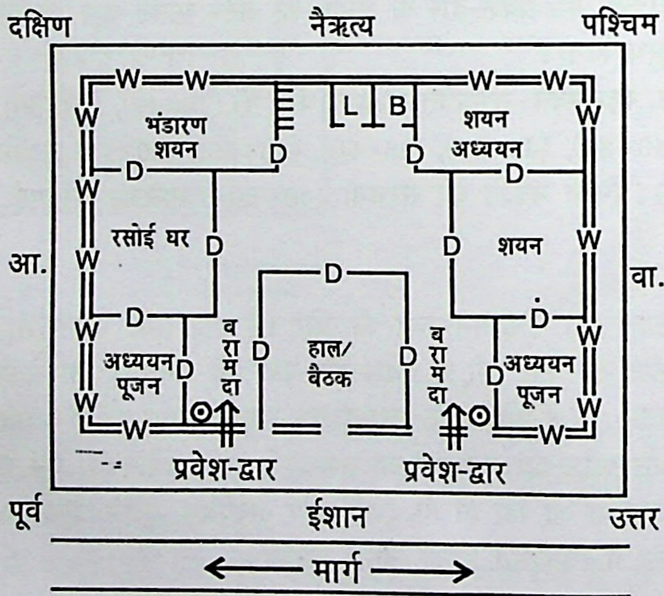
L = शौचालय

W = खिड़की

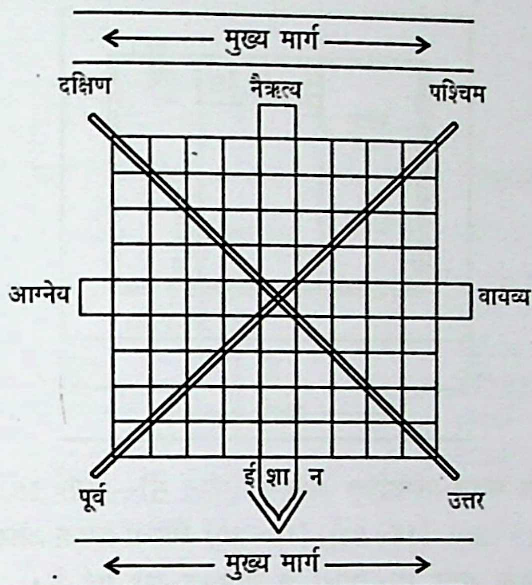
D = दरवाजा

⊙ = जल स्थान

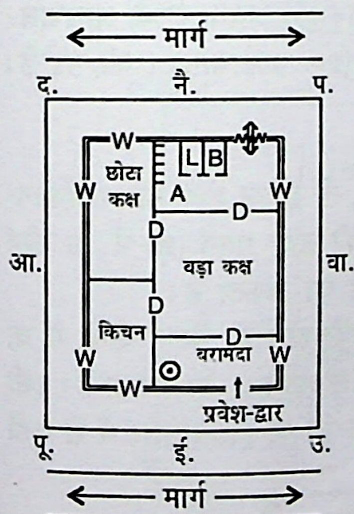
(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



जब आवासीय भूखंड के आगे और पीछे दोनों ओर मुख्य सड़क या आम रास्ते हों, तब वास्तुशास्त्रानुसार भवन का निर्माण निम्न नक्शों के अनुरूप करना शुभ होगा।



(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

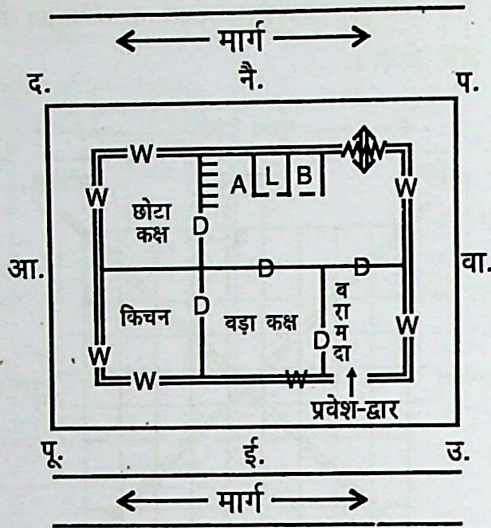
L = शौचालय

W = खिड़कियां

D = दरवाजे

= चैनल गेट, शटर या अन्य जालीदार दरवाजा।

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



1. छोटा भवन–संभावित आकार (फीट में)–(12× 18), (12× 20), (12× 24), (15× 20), (15× 25), (15× 30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शों की रचना माप 15× 22/1/2 मानकर की गई है।

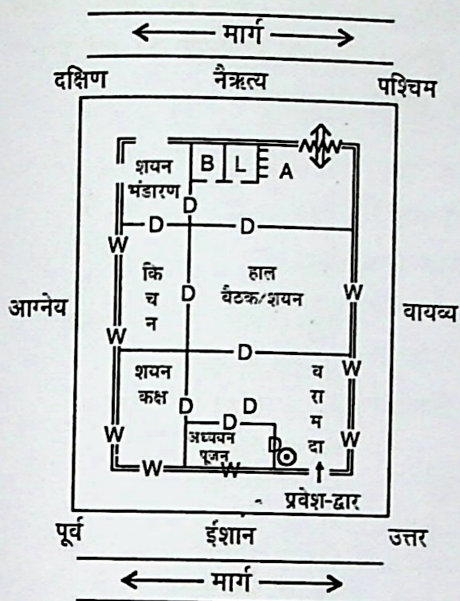
2. मध्यमाकार भवन–संभावित आकार (फीट में)–(20× 25), (20× 30), (20× 35), (20× 40), (25× 35), (25× 40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना का आदर्श नाप (20× 40) मानकर की गई है।

विशेष

(i) यदि प्लाट (20× 40) वर्ग फीट का है, तो ईशान उत्तर अथवा ईशान-पूर्व की ओर भवन (A) में 9 फीट की तथा भवन (B) में 13 फीट की दूरी में प्रवेश-द्वार कहीं भी रखा जा सकता है।

(ii) भवन (B) में प्रवेश-द्वार बरामदे अथवा हाल या बैठक दोनों में या दोनों में से कहीं भी अपनी सुविधानुसार लगवाया जा सकता है। इसी प्रकार जल स्थान (संग्रहण) भी ईशान-पूर्व या ईशान-उत्तर में से कहीं भी किया जा सकता है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

⊙ = जल स्थान

(चैनल गेट चिह्न) = चैनल गेट, शटर या अन्य वड़ा दरवाजा

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

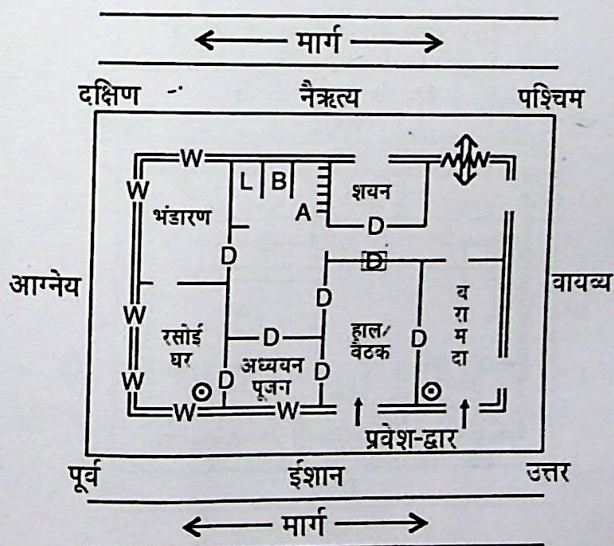
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

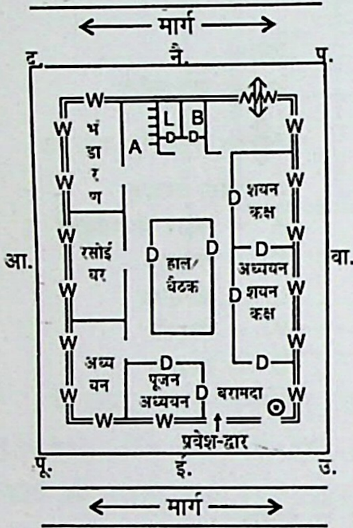
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



3. बड़ा भवन–संभावित आकार (फीट में) (40× 40), (40× 50), (40× 60), (40× 80), (45× 50), (45× 60), (45× 65), (50× 75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शे की संरचना माप (40× 60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= शटर, जालीदार अथवा अन्य किसी प्रकार द्वार

A = चढ़ाव व सीढ़ियां

B = स्नानगृह

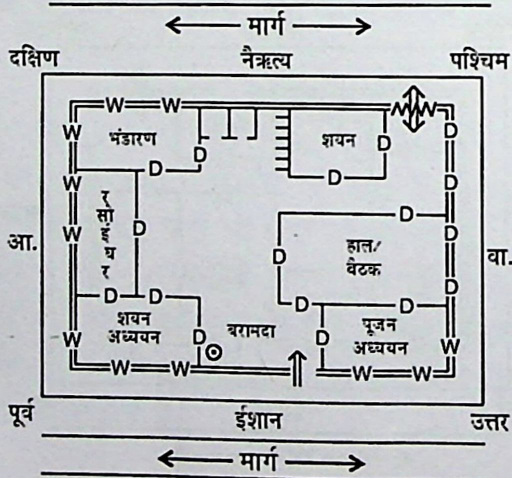
L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

⊙ = जल स्थान

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



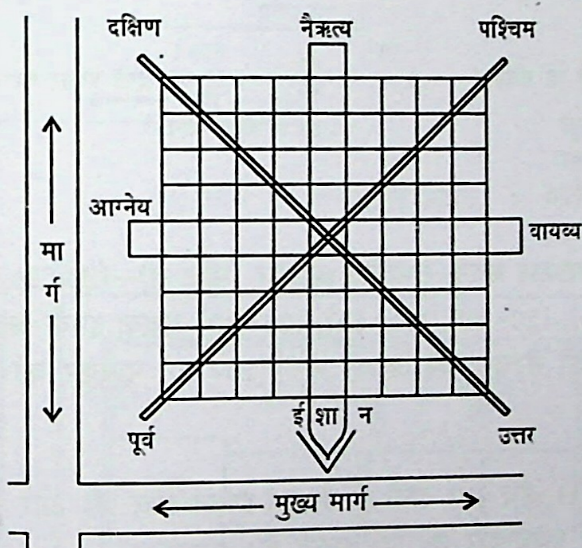
विशेष

(i) भवन (A) में प्रवेश-द्वार उत्तर-ईशान के बीच 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट की कुल दूरी में कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) दोनों प्रकार के भवनों में सीढ़ियों का स्थान सुविधानुसार शौचालय बाथरूम के दायें-बायें रखा जा सकता है।

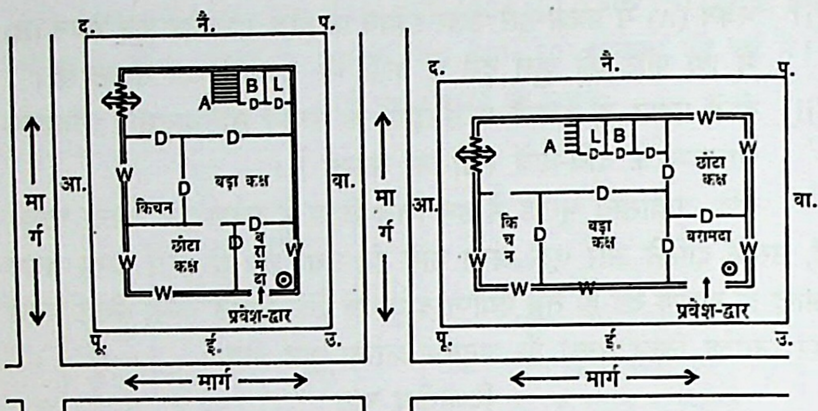
यदि आवासीय भूखंड में हम जिस दिशा में प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं, उसके दाहिने ओर एक अन्य मार्ग हो, तथा शेष दो ओर अन्य भवन आदि के कारण बंद हो तब पर्याप्त वायु एवं प्रकाशयुक्त वास्तु संगत भवन का निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप कराना शुभ होगा।

दिशाबोध चक्र



1. छोटा भवन–संभावित आकार फीट में–(12× 18), (12× 20), (12× 24), (15× 20), (15× 25), (15× 30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना (15× $22\frac{1}{2}$) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन , (B) मार्ग पर लंबाई में भवन



जहां–

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़कियां

D = दरवाजा

(शटर चिह्न) = शटर या इसी प्रकार का अन्य द्वार

⊙ = जल स्थान

2. मध्यमाकार भवन–संभावित आकार (फीट में)–(20× 25), (20× 30), (20× 35), (20× 40), (25× 35), (25× 40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना की आदर्श नाप (20× 40) मानकर की गई है।

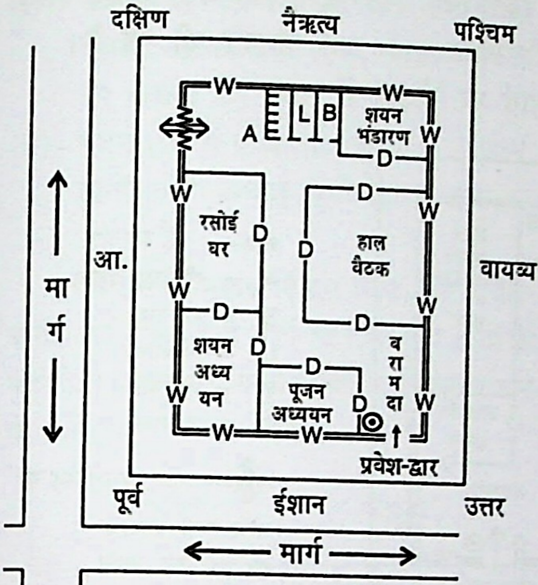
विशेष

(i) भवन (A) और (B) दोनों में ही पूर्व-ईशान-उत्तर की ओर में दोनों ओर से प्रवेश-द्वार रखे जा सकते हैं।

(ii) भवन (A) में प्रवेश-द्वार 7 फीट की दूरी में तथा भवन (B) में 13 फीट की दूरी में ईशान-उत्तर या ईशान-पूर्व में बनवाया जाना चाहिए।

(iii) भवन (B) में नैऋत्य-पश्चिम दिशा में भंडारण शयन कक्ष और शौचालय, स्नानगृह, सीढ़ियां आदि के स्थानों में परस्पर परिवर्तन किया जा सकता है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

⊙ = जल स्थान

W = शटर चैनल गेट अथवा अन्य दरवाजा

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

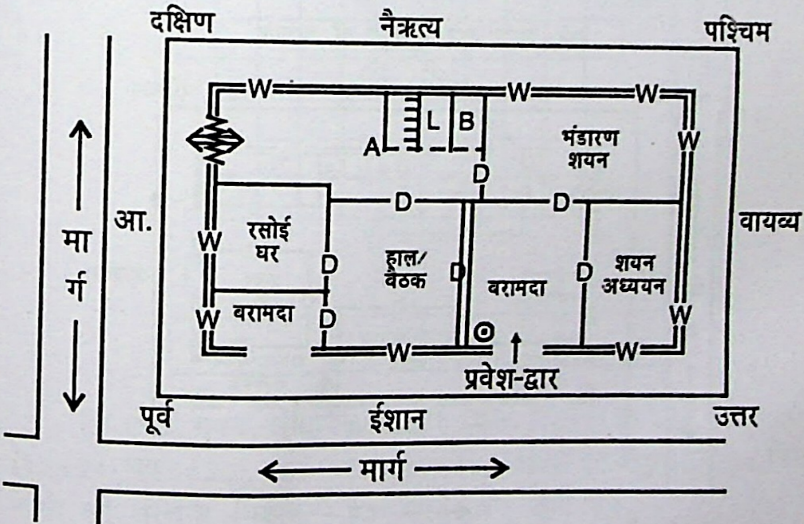
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

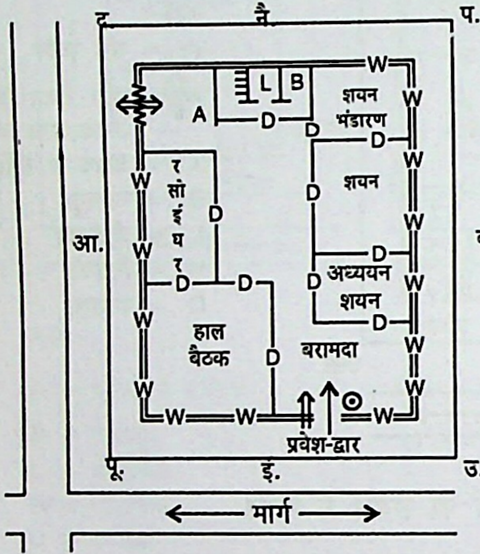
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



3. बड़ा भवन—संभावित आकार (फीट में) (40× 40), (40× 50), (40× 60), (40× 80), (45× 50), (45× 60), (45× 65), (50× 75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक़्शों की संरचना (40× 60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

A = सीढ़ियां चढ़ाव

B = स्नानगृह

L = शौचालय

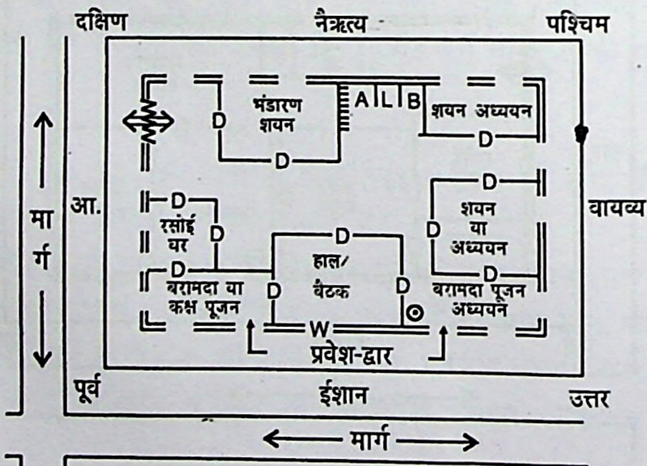
W = खिड़की

D = दरवाजा

= शटर, चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

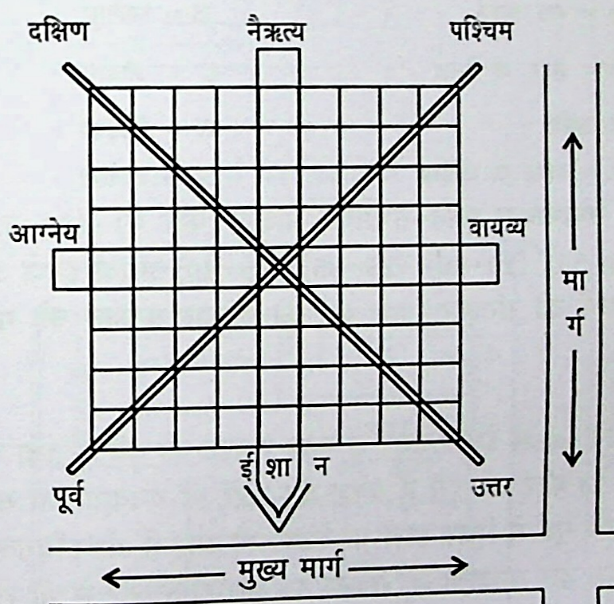


विशेष

(i) भवन (A) में प्रवेश-द्वार उत्तर-ईशान की 13 फीट की दूरी में तथा भवन (B) की इसी दिशा में 20 फीट की दूरी में कहीं भी बनवाया जा सकता है।

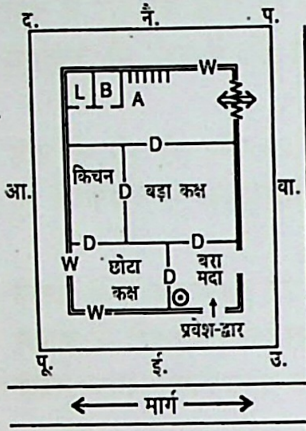
(ii) भवन (B) में प्रवेश-द्वार मध्य के (ईशान) 20 फीट की दूरी को छोड़ दोनों ओर अर्थात् पूर्वी-ईशान तथा उत्तरी-ईशान में बनवाया जा सकता है।

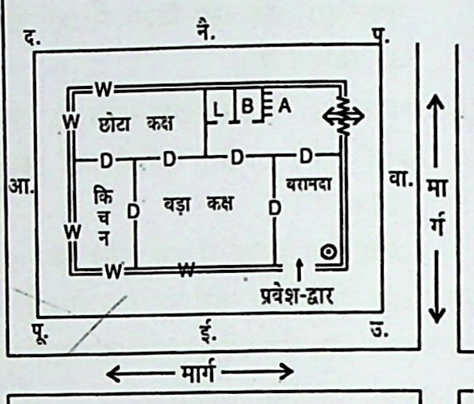
आवासीय भूखंड में हम जिस ओर प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं, उसके बायीं ओर एक अन्य मार्ग हो तथा शेष दोनों ओर अन्य भवनादि के कारण बंद हो तब वायु एवं प्रकाशयुक्त वास्तुशास्त्र संगत भवन निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप करवाना चाहिए—



(i) छोटा भवन—संभावित आकार (फीट में)—(12× 18), (12× 20), (12× 24), (15× 20), (15× 25), (15× 30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शे की संरचना (मानकर) $15 \times 22\frac{1}{2}$ वर्ग फीट है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन (B) मार्ग पर लंबाई में भवन





जहां– ⊙ = जल स्थान

W = शटर, या चैनल गेट आदि

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

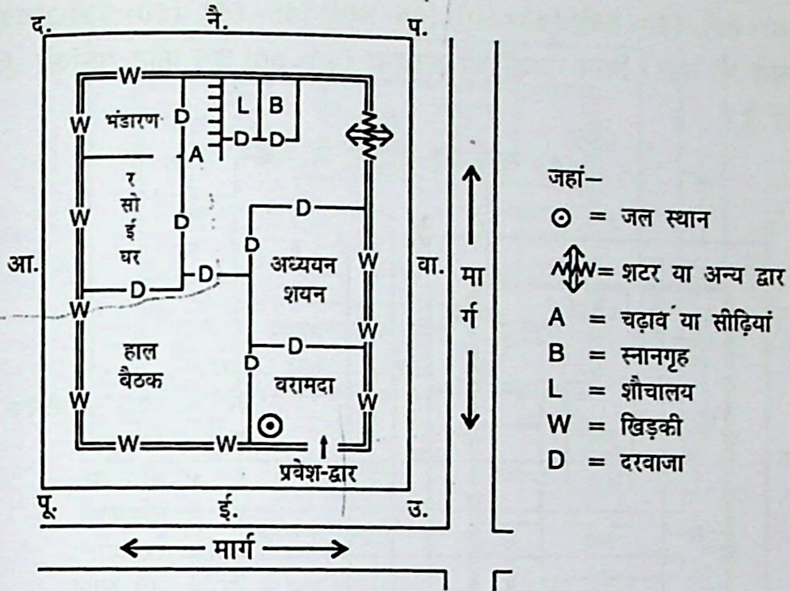
2. मध्यमाकार भवन–संभावित आकार (फीट में)–(20× 25), (20× 30), (20× 35), (20× 40), (25× 35), (25× 40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना (20× 40) को आधार बनाकर की गई है।

विशेष

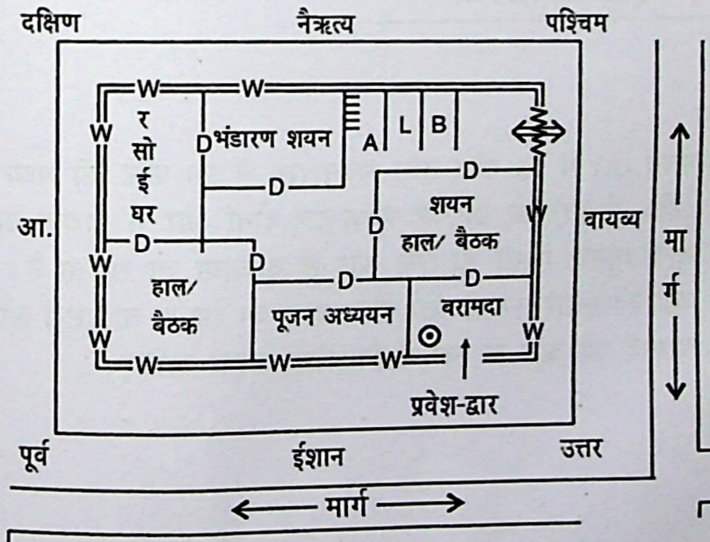
(i) भवन (A) में ईशान-उत्तर के मध्य 7 फीट की दूरी में तथा भवन (B) में 13 फीट की दूरी में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) ईशान-पूर्व में स्थित हाल या बैठक की ओर से भी रुचिगत होने पर प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है। और दोनों ओर से भी रखना शुभ दायक होता है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन

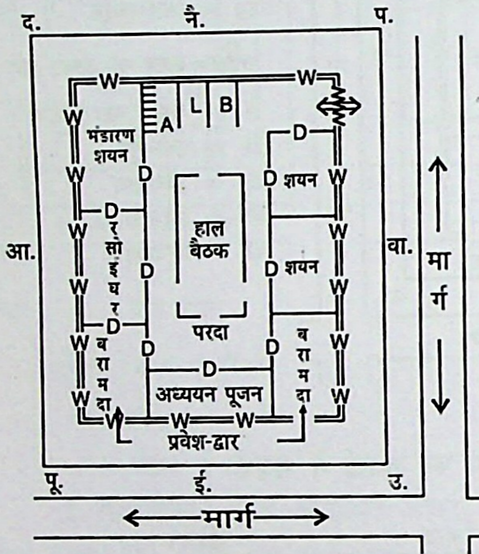


(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



3. बड़ा भवन–संभावित आकार (फीट में)–(40× 40), (40× 50), (40× 60), (40× 80), (45× 50), (45× 60), (45× 65), (50× 75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40× 60) वर्ग फीट मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



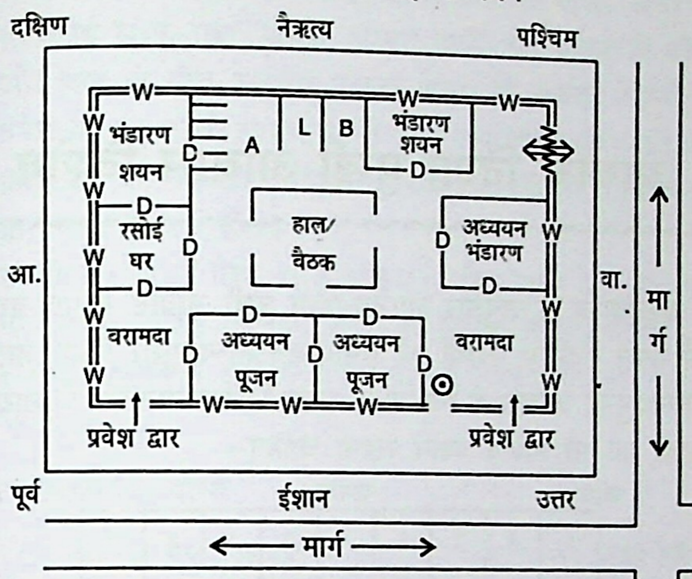
जहां–
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा
⊙ = जल स्थान
= चैनल गेट या शटर या बड़ा दरवाजा

विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट तथा भवन (B) में 20 फीट की मध्य दूरी (ठीक ईशान) को छोड़कर प्रवेश-द्वार दोनों ओर से अथवा अपनी सुविधानुसार किसी भी एक ओर से बनवाया जा सकता है।

(ii) यदि प्रवेश-द्वार एक ही ओर से बनवाया जा रहा हो तो दूसरी ओर के बरामदे को कक्ष के रूप में विकसित करना चाहिए।

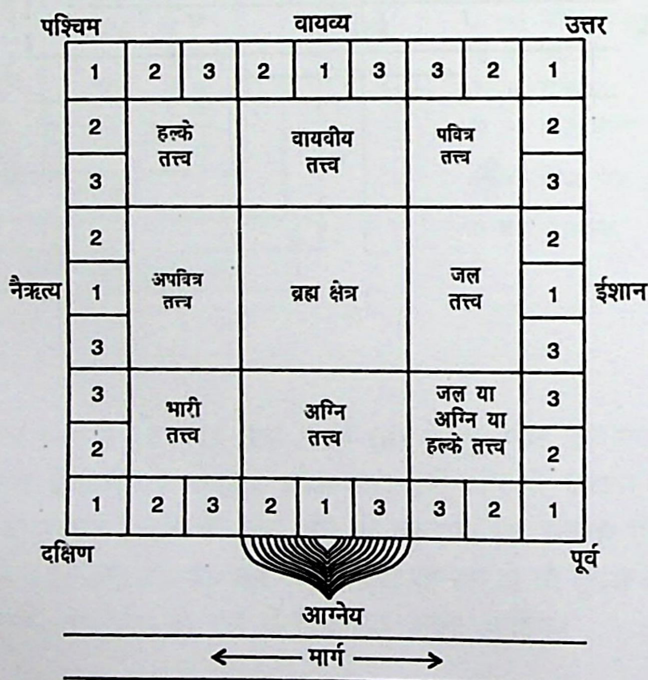
(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



□□

आग्नेय-दिशा मुखी आवास विशेष

वास्तुशास्त्र के अनुसार आग्नेय-दिशा मुखी आवास में पंच तत्त्वों के रूप में उनसे संबंधित पदार्थों का समायोजन निम्नानुसार किया जाता है। हमें आग्नेयमुखी आवास के निर्माण के समय निर्दिष्ट मानचित्र के साथ-साथ इन बातों का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए–



(i) आग्नेय दिशा मुखी आवास में आग्नेय-दक्षिण की अपेक्षा आग्नेय-पूर्व में प्रवेश द्वार उत्तम होता है। किन्तु यह ध्यान रखें कि यदि हमारे

प्रवेश-द्वार के सम्मुख यदि कोई पेड़ बिजली का खंभा, अन्य भवन का कोई खंभा, गड्ढा, पहाड़ी (टीला) आदि इस प्रकार हो जो द्वार और मार्ग के बीच अवरोध उत्पन्न करता हो अथवा उसकी छाया प्रवेश-द्वार पर पड़ती हो तब या तो उक्त अवरोधादि को हटायें अथवा प्रवेश-द्वार आग्नेय-दक्षिण दिशा में बनवायें। आवासीय भवन में प्रवेश द्वार मध्य में नहीं होते।

(ii) ऊपरी मंजिलों के लिए वास्तु सक्रियता गौण रहती है। अतः प्रत्येक मंजिल हेतु ऊंचाई को कम करते हुए निर्माण कराना चाहिए। साथ ही संपूर्ण भवन में सर्वोच्च ऊंचाई दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम में हो यह ध्यान रहे।

विशेष ध्यान देने योग्य

(i) आग्नेय मुखी आवास में प्रवेश-द्वार आग्नेय-पूर्व दिशा की ओर होने पर ही श्रेष्ठ माना जाता है। इसके अलावा यदि किसी कारण से पूर्वी-ईशान दिशा की ओर प्रवेश-द्वार बनवाया जाता है, तो भवन की शेष सभी आंतरिक व्यवस्थाओं और निर्माणों को यथावत रहने देना चाहिए।

(ii) प्रथम रसोईघर की स्थिति और सामने जलक्षेत्र का निर्माण प्रवेश-द्वार के पास होने से कुछ असुविधाजनक प्रतीत हो सकता है अतः जलस्थान अधिक से अधिक उत्तरीय दिशा की ओर कुछ हद तक आगे या पीछे किया जा सकता है। यद्यपि मानचित्र के अनुरूप रहने देना सुखद होगा।

(iii) यथासंभव शौचालय में सीटिंग (बैठक) उत्तर-दक्षिण मुखी होना शुभ रहता है। मानचित्र में दर्शित स्थान पर निर्मित शौचालय में बैठक इस प्रकार संभव बनाना होगा।

(iv) सैप्टिक टैंक को दक्षिण-नैऋत्य दिशा में ही भवन के बाहरी ओर अथवा अंदर बनवाया जा सकता है। यथासंभव शौचालय को भवन के बाहरी परिसर में बनवाना व्यावहारिक एवं वास्तु दोनों

ही प्रकार से शुभ होगा।

(v) जलस्थान जहां तक संभव हो अंडर ग्राउंड रहे, ईशान की ओर मानचित्र में दर्शित स्थान पर भवन के अंदर या बाहर की ओर भी बनवाया जा सकता है। किसी विशेष मजबूरी के चलते यदि आगे-पीछे करना आवश्यक हो तो उत्तर दिशा की ओर रखना अधिक शुभ होगा जबकि पूर्व की ओर ले जाना मध्यम शुभ होगा।

(vi) यदि भवन के तीनों ओर अन्य भवन आदि हों तो ऐसी स्थिति में प्रवेश-द्वार के अतिरिक्त पीछे पश्चिम, वायव्य या उत्तर की ओर की छत को खुला छोड़ा जा सकता है।

(vii) दक्षिण के बाहरी भाग में कूड़ा, कचरा, गंदगी हो तो भी शुभत्व बना रहेगा।

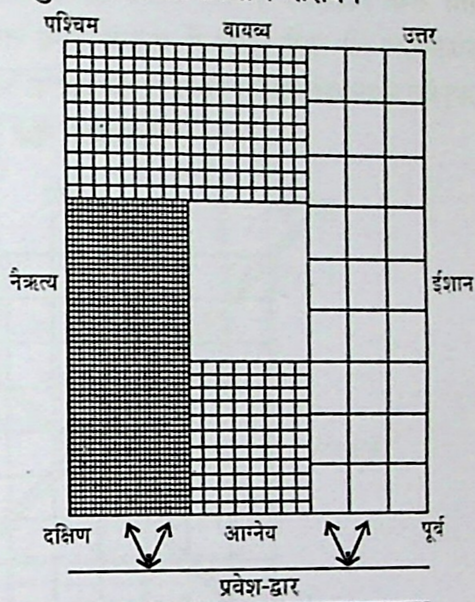
(viii) सीढ़ियों का निर्माण यदि मानचित्र में दर्शित स्थान पर न करवाया जा रहा हो तो यह ध्यान रखें पश्चिम की ओर चढ़ना सर्वाधिक शुभ, दक्षिण-नैऋत्य उत्तम, पूर्व-उत्तर अशुभ होता है। ईशान में सीढ़ियां न बनाएं।

(ix) यदि चहारदीवारी का निर्माण किया गया है। अथवा बागवानी की सुविधा हो तो भवन में प्रवेश-द्वार की ओर बादाम या ऐसे ही घने छायादार, फलदार वृक्ष, भवन के पिछले भाग पश्चिम-वायव्य में ऊंचे अशोक या ऐसे ही वृक्ष तथा दाहिनी ओर पश्चिम-नैऋत्य दिशा में छोटे-मध्यम पेड़-पौधे आदि तथा बायीं ओर स्थित उत्तर-ईशान के आसपास सुगंधित पुष्प, पौधे आदिं का लगाना शुभ होगा।

ढाल और उसका निर्माण

हम जिस भूमि पर भवन बनाने जा रहे हैं, प्रकृति ने उसे किसी भी प्रकार का स्वरूप प्रदान किया हो, उसे हमें अपने अनुकूल बनाकर ही प्रयोग करना चाहिए। अतः इस दिशा मुखी आवास हेतु हमें संपूर्ण भवन का ढाल इस प्रकार

निर्मित कराना (कृत्रिम रूप से) अधिक शुभत्व उत्पन्न करने वाला होगा। आवास चाहे अत्यंत छोटा हो, मध्यमाकार हो या बड़ा हो संपूर्ण निर्मित भूतल को दिशानुरूप निम्न चित्र के अनुरूप ढाल का निर्माण करावें।



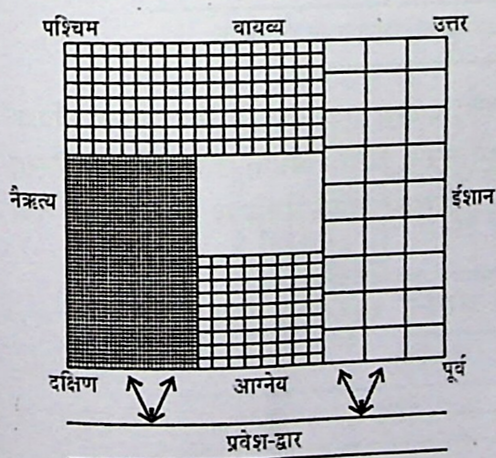
(i) लंबाई और चौड़ाई में स्थित कुल दूरी को 9-9 भागों में विभाजित किया।

(ii) निर्दिष्ट रूप से दिशा-अनुरूप—

(A) सर्वोच्च भूमि को कम से कम 6 इंच तथा अधिक-से-अधिक 10-12 इंच तक ऊंचा करें।

(B) सामान्य उच्च भूमि को कम से कम 4 इंच और अधिक से अधिक 6-8 इंच तक ऊंचा करें।

(C) निम्न भूमि को समतल ही बना रहने दें।



जहां—

(A) सर्वोच्च भूमि (दक्षिण, नैऋत्य)

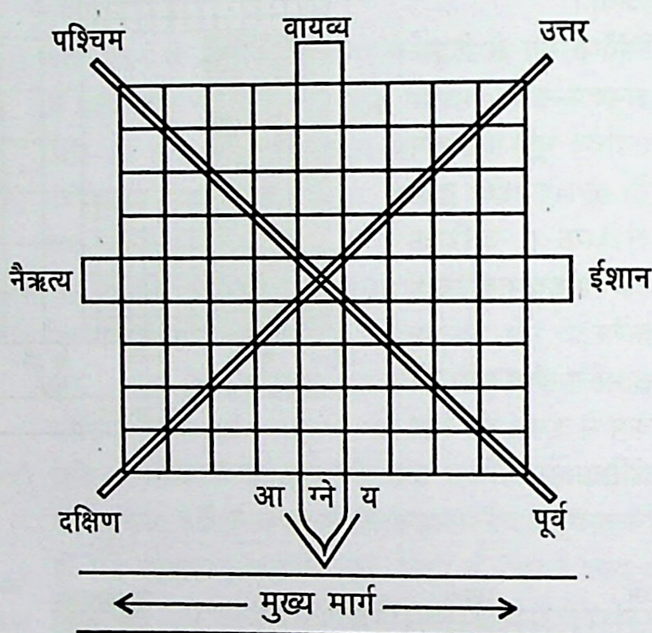
(B) सामान्य उच्च (आग्नेय, पश्चिम वायव्य)

(C) निम्न तल (उत्तर, ईशान, पूर्व)

आवासीय मानचित्र

जब एक ही दिशा आग्नेय में मुख्य मार्ग या सड़क हो तथा अन्य शेष सभी दिशाओं में मार्ग आदि का अभाव हो तो हमें अपने भवन का प्रवेश-द्वार भी उसी दिशा में बनाना होगा तथा वास्तुशास्त्र के निर्देशों के अनुरूप भवन का निर्माण निम्नांकित नक्शे के अनुसार करना शुभदायक होगा।

दिशाबोध चक्र

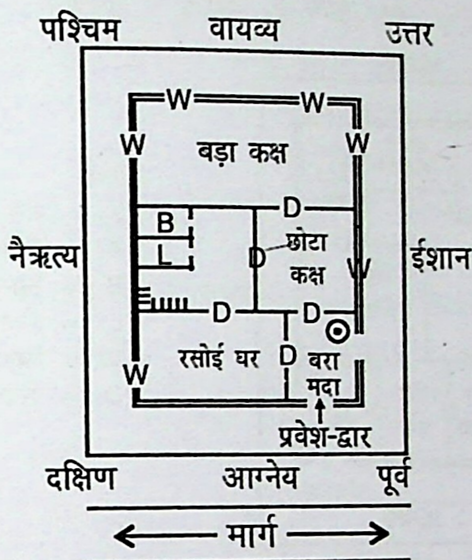


चूंकि हमें तीन ओर से हवा, प्रकाश एवं निकासी की पर्याप्त सुविधा नहीं है, अतः इसका प्रबंध भी हमें करना होगा। अर्थात् छत का उपरी हिस्सा कुछ न कुछ खुला छोड़ना होगा। जिसका ध्यान नक्शे में पर्याप्त रखा गया है।

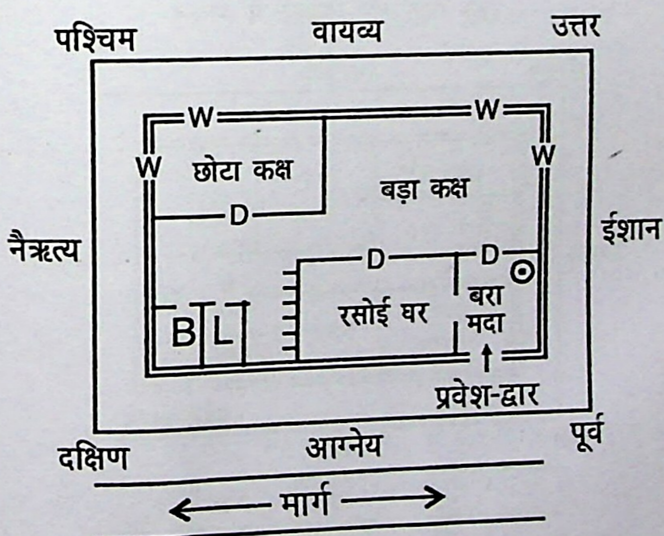
निम्न नक्शों की आदर्श संरचना $15 \times 22\frac{1}{2}$ माप है।

1. छोटा भवन–संभावित आकार (फीट में)–(12× 18), (12× 20), (12× 24), (15× 20), (15× 25), (15× 30) अथवा इसके आसपास।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन

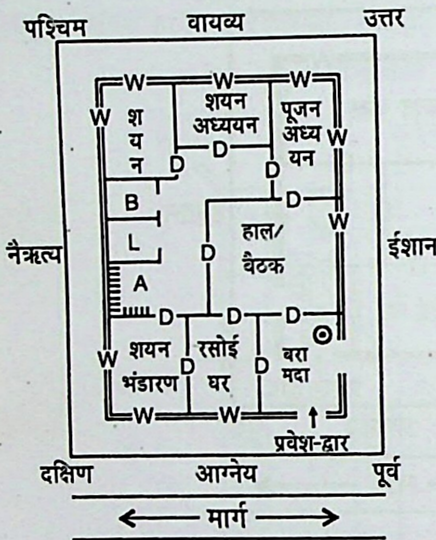


(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



2. मध्यमाकार भवन–संभावित आकार (फीट में)–(20× 25), (20× 30), (20× 35), (20× 40), (25× 35), (25× 40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शे की संरचना (20× 40) मानकर की गई है।

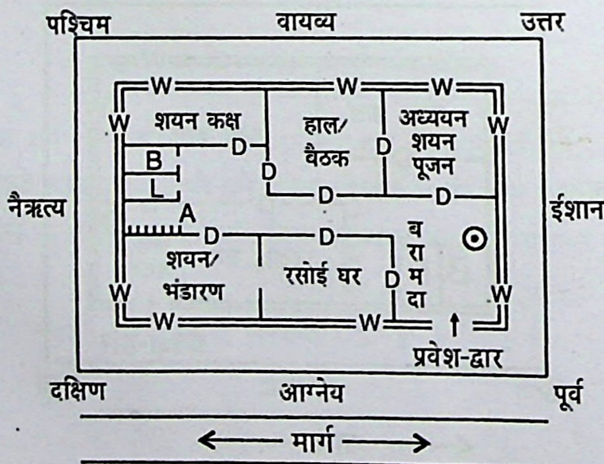
(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

⊙ = जल स्थान
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

(i) भवन (A) में 07 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट आग्नेय पूर्व में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

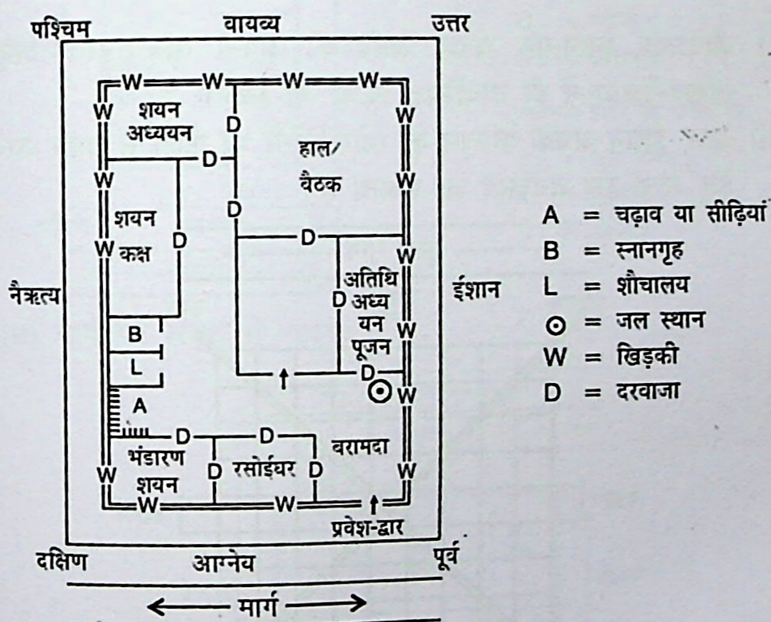
(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं चढ़ाव आदि का क्रम सुविधाजनक किंतु दक्षिण-नैऋत्य परिसर में ही किया जाना चाहिए।

(iii) जल स्थान को यथासंभव ईशान में रखना ही ठीक होगा।

(iv) प्रवेश-द्वार ठीक पूर्व में रखना ज्यादा सुखद होगा।

3. बड़ा भवन–संभावित आकार (फीट में) (40× 40)–(40× 50), (40× 60), (40× 80), (45× 50), (45× 60), (45× 65), (50× 75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40× 60) मानकर की गई है।

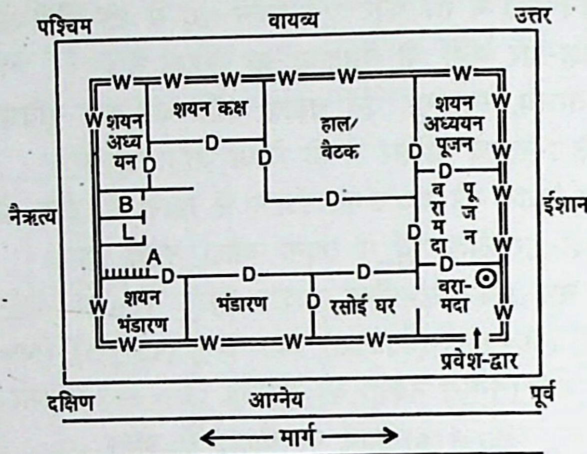
(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



विशेष

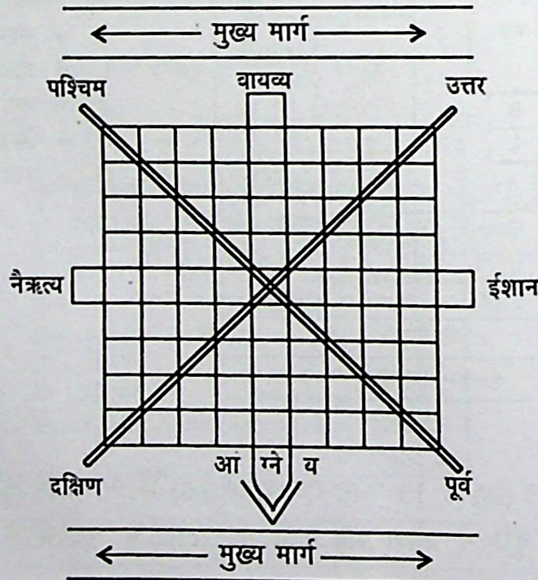
(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट की कुल आग्नेय-पूर्व दूरी में प्रवेश-द्वार कहीं भी रखा जा सकता है।

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



(ii) शौचालय, स्नान-गृह, चढ़ाव आदि को अपनी सुविधानुसार किंतु दक्षिण-नैऋत्य में ही व्यवस्थित किया जा सकता है।

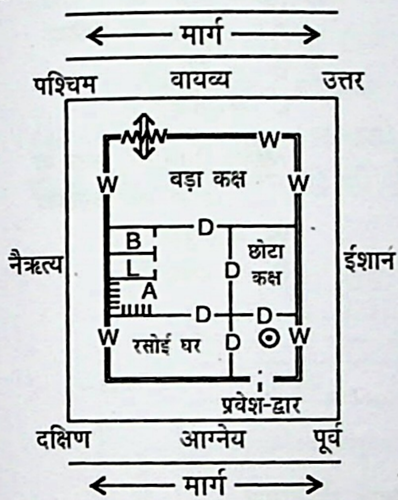
(iii) उत्तर, ईशान अथवा पश्चिम की ओर किसी भी कक्षों से बाहर जाने हेतु अन्य द्वार बनवाया जा सकता है।



जब आवासीय भूखंड के आगे और पीछे दोनों ओर मुख्य सड़क या आम रास्ते हों, तब वास्तुशास्त्र के अनुसार भवन का निर्माण निम्न नक्शों के अनुरूप करना शुभ होगा।

1. छोटा भवन–संभावित आकार (फीट में)–(12× 18), (12× 20), (12× 24), (15× 20) , (15× 25) , (15× 30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शों की रचना माप 15× $22\frac{1}{2}$ मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

L = शौचालय

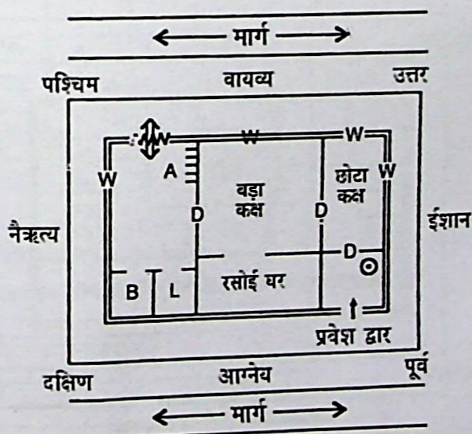
= शटर या चैनल गेट

⊙ = जल स्थान

W = खिड़की

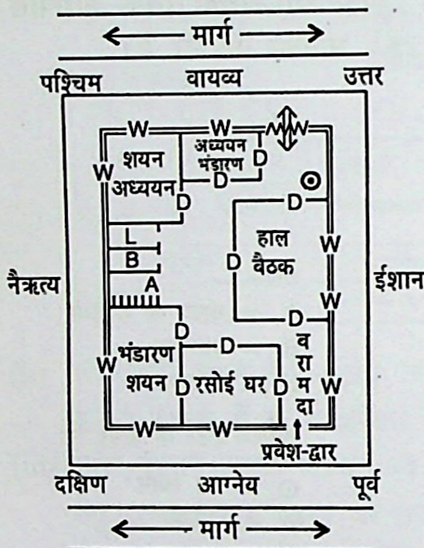
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



2. मध्यमाकार भवन– संभावित आकार (फीट में)–(20×25), (20×30) (20×35), (20×40), (25×35), (25×40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना की आदर्श नाप (20×40) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

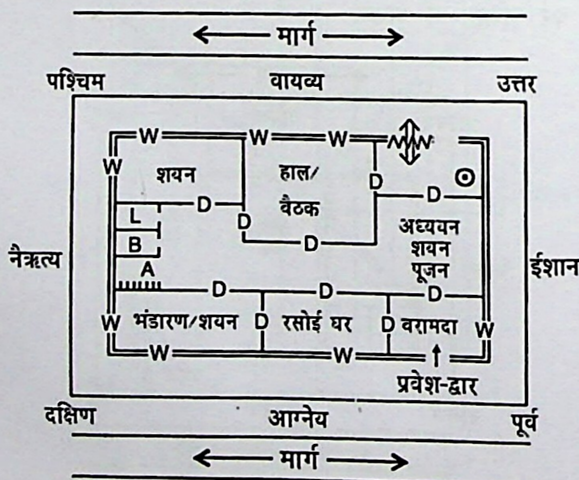
L = शौचालय

= चैनल गेट, शटर या अन्य बड़ा दरवाजा

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

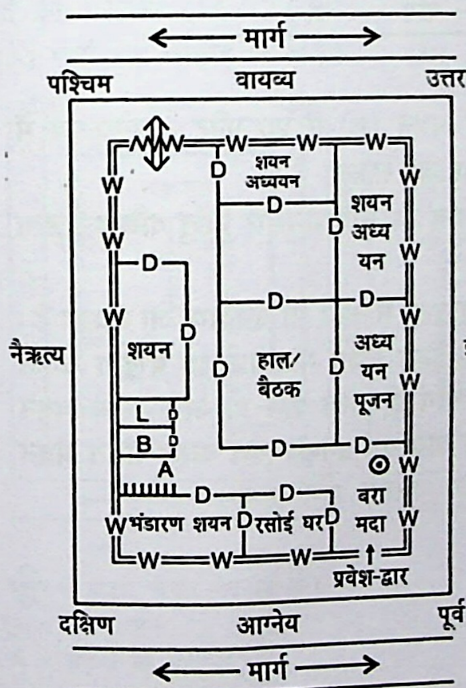
(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट की आग्नेय पूर्व दूरी में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है। किंतु जितना पूर्व की ओर हो उतना शुभ होगा।

(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं चढ़ाव आदि को सुविधानुसार क्रम में किंतु दक्षिण-नैऋत्य में ही व्यवस्थित करें।

(iii) जल स्थान को यथासंभव ईशान या ईशान-उत्तर की ओर बनावाएं। इस प्रकार रसोई घर ठीक आग्नेय में रखें, भले ही बरामदा छोटा हो।

3. **बड़ा भवन**– संभावित आकार (फीट में) –(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा निम्न नक्शे की संरचना माप (40×60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= शटर, चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

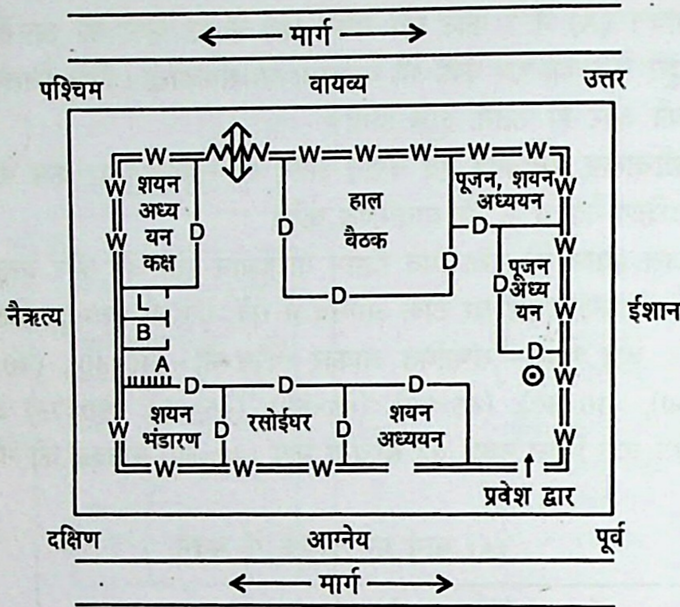
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

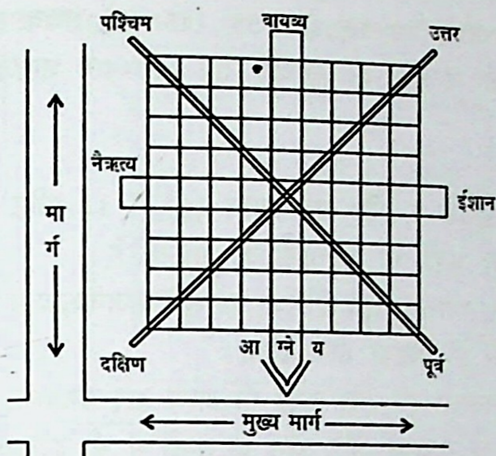
(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट आग्नेय-पूर्व में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नान गृह एवं चढ़ाव या सुविधानुसार किंतु दक्षिण-नैऋत्य में ही बनवाना चाहिए।

द्वार पश्चिम वायव्य या उत्तर में कहीं भी बनवाया जा सकता है।

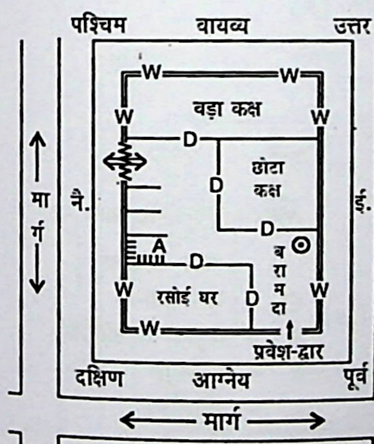
यदि आवासीय भूखंड में हम जिस दिशा में प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं उसके दाहिनी ओर एक अन्य मार्ग हो तथा शेष दो ओर अन्य भवन आदि के कारण बंद हो तब पर्याप्त वायु एवं प्रकाशयुक्त वास्तु संगत भवन का निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप कराना शुभ होगा।

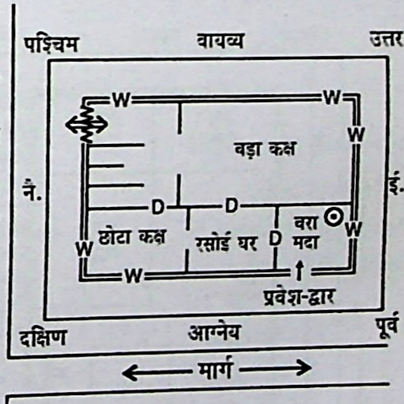
दिशाबोध चक्र



1. छोटा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30), अथवा इसके आसपास निम्न नक्शों की संरचना (15×22$\frac{1}{2}$)।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन (B) मार्ग पर लंबाई में भवन





–जहां–

W = शटर, चैनल गेट या अन्य दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

2. **मध्यमाकार भवन–** संभावित आकार (फीट में) :- (20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40), अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना की आदर्श नाप (20×40) मानकर की गई है।

विशेष

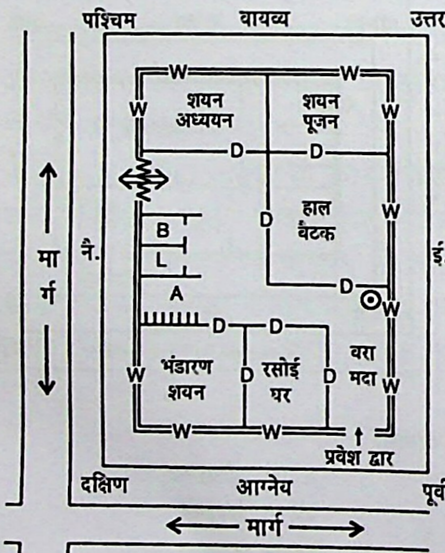
(i) भवन (A) में 7 फीट् एवं भवन (B) में 13 फीट आग्नेय-पूर्व में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं सीढ़ियों को सुविधाजनक क्रम में किंतु दक्षिण-नैऋत्य में ही रखना ठीक होगा।

(iii) नैऋत्य-पश्चिम की ओर कहीं भी अन्य द्वार बनवाया जा सकता है। इसी प्रकार वायव्य और उत्तर के कक्षों में भी दरवाजा बनवाया जा सकता है।

(iv) रसोई घर को प्रयत्नपूर्वक आग्नेय कोण में ही बनाना चाहिए तथा जल स्थान को ईशान में ही रखना शुभ होगा।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= चैनल गेट शटर या बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

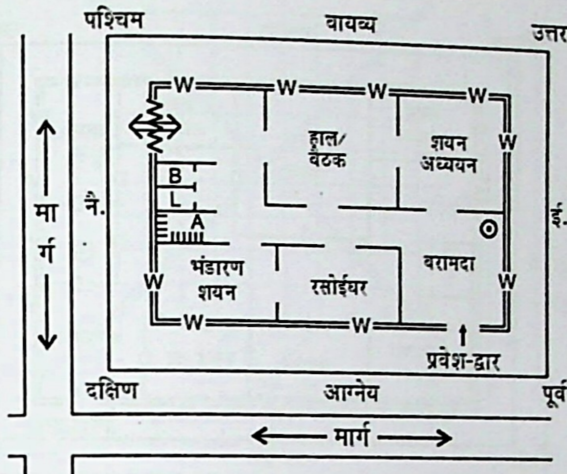
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

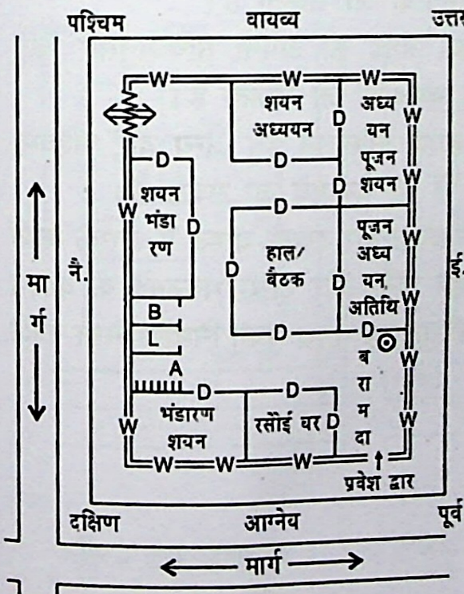
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लम्बाई में भवन



3. बड़ा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40×60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

⇕W = शटर, चैनल गेट या बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

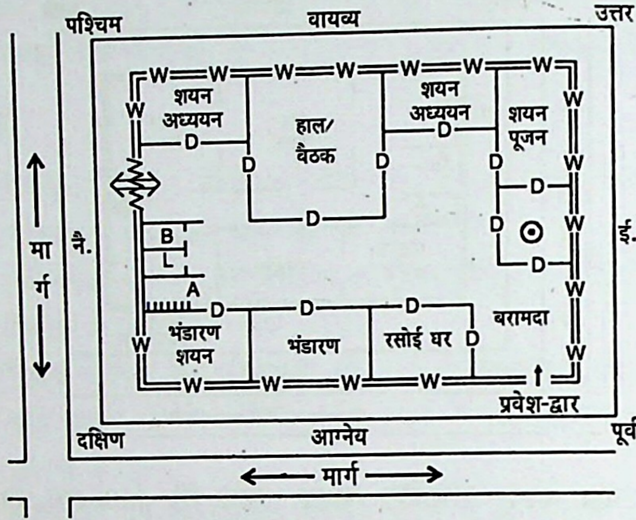
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भंवन



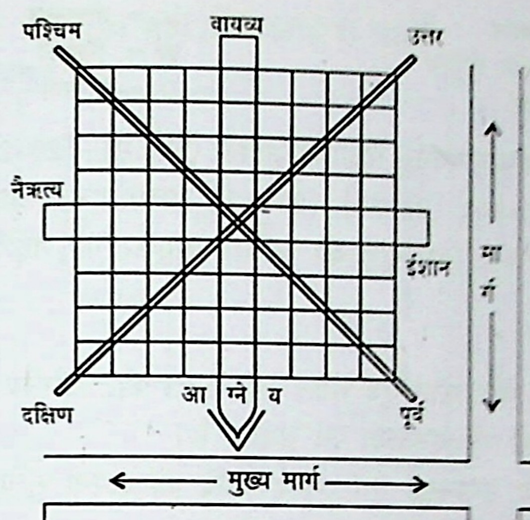
विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट की आग्नेय-पूर्वी ओर प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय-स्नानगृह एवं चढ़ाव आदि को अपनी सुविधानुसार किंतु दक्षिण-नैऋत्य परिसर में ही बनवाया जा सकता है।

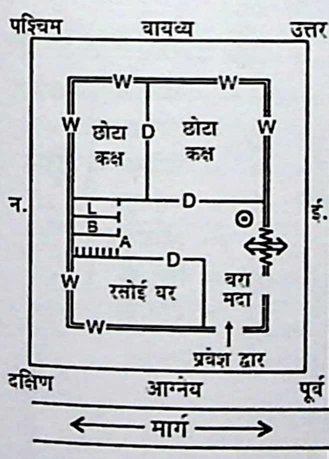
(iii) नैऋत्य-पश्चिम के अलावा बाहर निकालने हेतु अन्य द्वार पश्चिम-वायव्य एवं उत्तर के कक्षों में भी बनवाये जा सकते हैं।

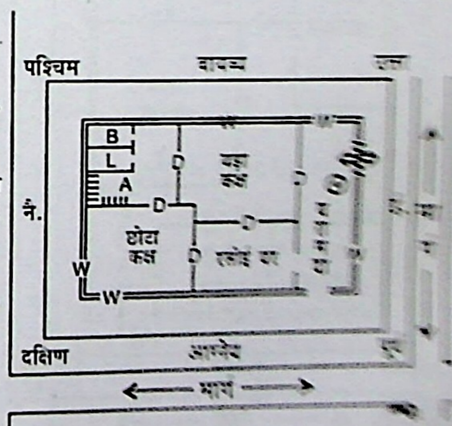
आवासीय भूखंड में हम जिस ओर प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं, उसके बायीं ओर एक अन्य मार्ग हो, तथा शेष दोनों ओर अन्य भवनादि के कारण बंद हो तब वायु एवं प्रकाशयुक्त वास्तुशास्त्र संगत भवन निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप करवाना चाहिए।



1. **छोटा भवन**– संभावित आकार (फीट में)–(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शे की संरचना (मानक) $15 \times 22\frac{1}{2}$ वर्ग फीट है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन (B) मार्ग पर लंबाई में भवन





जहां–

= शटर, चैनल गेट या अन्य दरवाजा

⊙ = जल स्थान
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

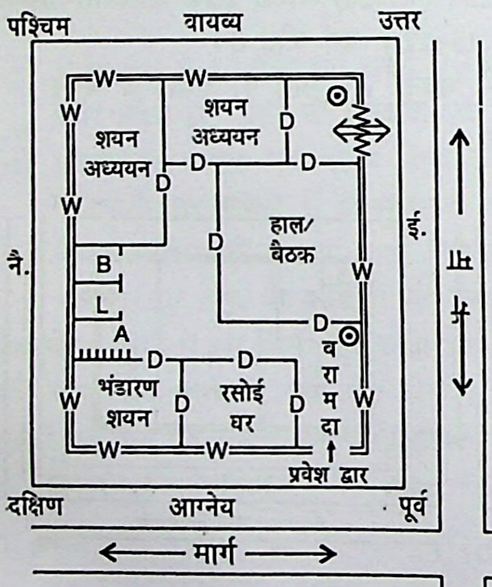
2. मध्यमाकार भवन– संभावित आकार (फीट में)–(20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40), अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना (20×40) को आधार बनाकर की गई है।

विशेष

(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट आग्नेय पूर्व में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं चढ़ाव आदि को अपनी सुविधानुसार किंतु दक्षिण-नैऋत्य में ही रखा जा सकता है।

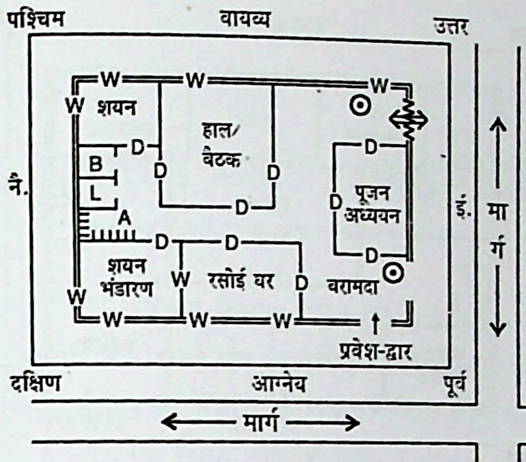
(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

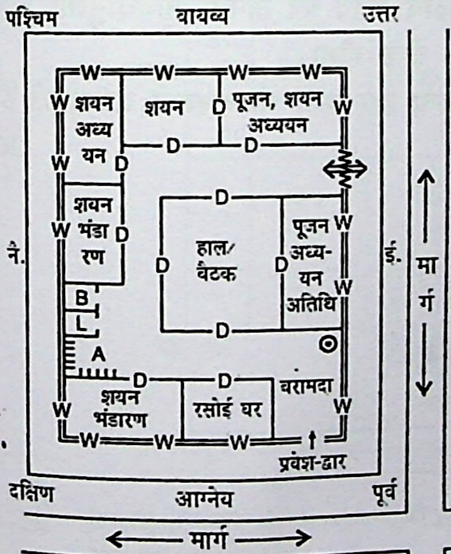
= शटर, चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा
⊙ = जल स्थान
A = सीढ़ियां या चढ़ाव
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



3. बडा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40×60) वर्ग फीट मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

W = चैनल गेट, शटर या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

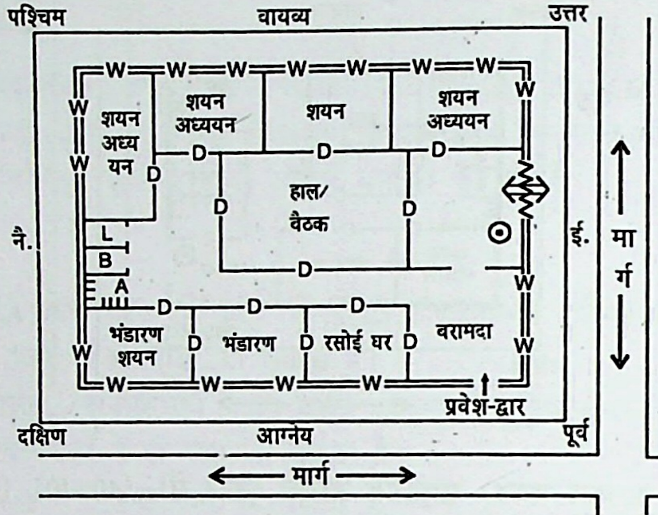
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट की आग्नेय-पूर्व की ओर कहीं भी प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

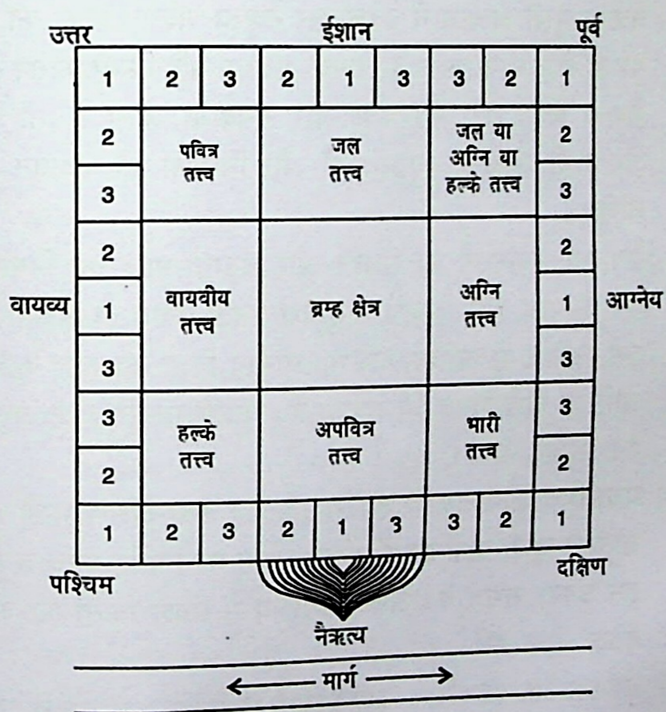
(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं चढ़ाव आदि को अपनी सुविधानुसार किंतु दक्षिण-नैऋत्य में ही रखना ठीक होगा।

(iii) ईशान-उत्तर में शटर या अन्य द्वार कहीं भी बनवाये जा सकते हैं।

□□

नैऋत्य दिशा मुखी : आवास विशेष

वास्तुशास्त्र के अनुसार नैऋत्य दिशा मुखी आवास में पंच तत्त्वों के रूप में उनसे संबंधित पदार्थों का समायोजन निम्नानुसार किया जाता है। हमें नैऋत्य मुखी आवास के निर्माण के समय निर्दिष्ट मानचित्र के साथ-साथ इन बातों का भी विशेष ध्यान रखा चाहिए–



(i) नैऋत्य दिशा मुखी आवास में नैऋत्य-दक्षिण की अपेक्षा नैऋत्य-पश्चिम में प्रवेश-द्वार उत्तम होता है। किंतु यह ध्यान रखें कि यदि हमारे

प्रवेश-द्वार के सम्मुख कोई पेड़, बिजली का खंभा, अन्य भवन का कोई खंभा, गड्ढा, पहाड़ी (टीला) आदि इस प्रकार हो जो द्वार और मार्ग के बीच अवरोध उत्पन्न करता हो अथवा उसकी छाया प्रवेश-द्वार पर पड़ती हो तब या तो उक्त अवरोधादि को हटायें अथवा प्रवेश द्वार नैऋत्य दक्षिण दिशा में बनवायें। आवासीय भवन में प्रवेश-द्वार मध्य में नहीं होते।

(ii) यदि भवन में प्रवेश मार्ग के अलावा शेष तीनों ओर अन्य भवनादि हों, चहारदीवारी हेतु स्थान भी न हो तो वायु प्रकाश आदि का प्रबंध ब्रह्म क्षेत्र को खुला (छत) रखकर करें।

विशेष ध्यान देने योग्य

(i) नैऋत्य मुखी आवास में प्रवेश-द्वार नैऋत्य-पश्चिम दिशा की ओर होने पर ही श्रेष्ठ माना जाता है। इसके अलावा यदि किसी कारण से दक्षिण-नैऋत्य दिशा की ओर प्रवेश-द्वार बनवाया जाता है, तो भवन की शेष सभी आंतरिक व्यवस्थाओं और निर्माणों को यथावत रहने देना चाहिए।

(ii) शौचालय, स्नानगृह की स्थिति और चढ़ाव आदि का निर्माण प्रवेश-द्वार के पास होने से कुछ असुविधाजनक प्रतीत हो सकता है। अतः इन्हें अधिक से अधिक दक्षिण; आग्नेय दिशा की ओर कुछ हद तक आगे या पीछे किया जा सकता है। यद्यपि मानचित्र के अनुरूप रहने देना सुखद होगा।

(iii) यथासंभव शौचालय में सीटिंग (बैठक) उत्तर-दक्षिण मुखी होना शुभ रहता है चूंकि मानचित्र में दर्शित स्थान पर निर्मित शौचालय में बैठक इस प्रकार संभव है। अतः शौचालय में प्रवेश किसी भी ओर से हो बैठक ठीक रखें।

(iv) सैप्टिक टैंक को दक्षिण-नैऋत्य दिशा में ही भवन के बाहरी ओर अथवा अंदर की बनवाया जा सकता है। यथासंभव शौचालय को भवन के

बाहरी परिसर में बनवाना व्यावहारिक एवं वास्तु दोनों ही प्रकार से शुभ होगा।

(v) जल स्थान जहां तक संभव हो अंडर ग्राउंड रहे, ईशान की ओर मानचित्र में दर्शित स्थान पर भवन के अंदर या बाहर की ओर भी बनवाया जा सकता है। किसी विशेष मजबूरी के चलते यदि आगे-पीछे करना आवश्यक हो तो उत्तर दिशा की ओर रखना अधिक शुभ होगा, जबकि पूर्व की ओर ले जाना मध्यम शुभ होगा।

(vi) चूंकि ऊपरी मंजिलों पर वास्तु सक्रियता गौण होती है। अतः ऊपरी मंजिलें तल मंजिल के समान ही, किंतु उससे न्यूनतम कम ऊंचाई की होना चाहिए। ऊंचाई में यह कमी भले ही छः इंच तक हो यथा तल मंजिल 12 फीट ऊंची हो तो ऊपरी मंजिल $11\frac{1}{2}$ फीट तक ठीक होगी।

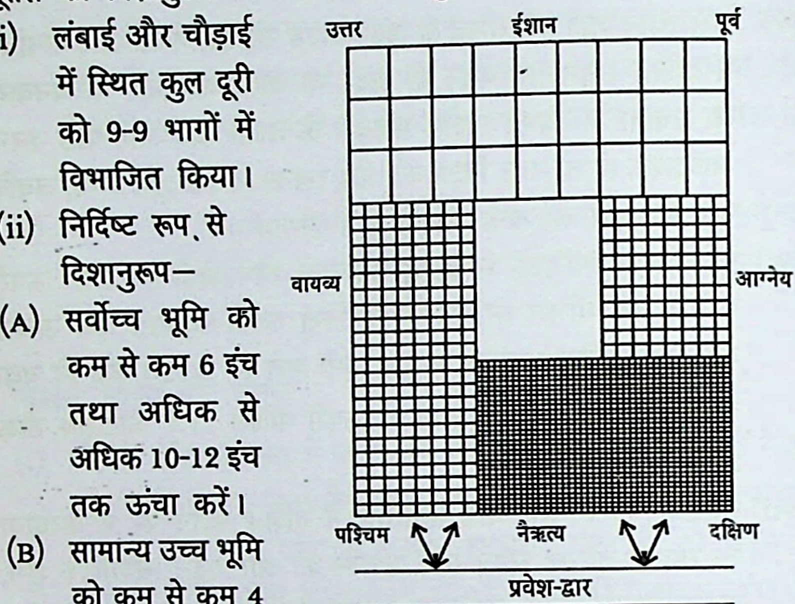
(vii) सीढ़ियों का निर्माण यदि मानचित्र में दर्शित स्थान पर न करवाया जा रहा हो तो यह ध्यान रखें, पश्चिम की ओर चढ़ना सर्वाधिक शुभ, दक्षिण-नैऋत्य उ़त्तम, पूर्व-उत्तर अशुभ होता है। ईशान में सीढ़ियां न बनाएं।

(viii) यदि चहारदीवारी का निर्माण किया गया है, अथवा बागवानी की सुविधा हो तो भवन में प्रवेश-द्वार की ओर अशोक के वृक्ष सम संख्या में तथा भवन के पिछले भाग उत्तर-ईशान-पूर्व में छोटे तथा सुगंधित पुष्प तथा दाहिनी ओर उत्तर-वायव्य दिशा में विभिन्न बेलदार पुष्प आदि तथा बाईं ओर स्थित दक्षिण-आग्नेय के आसपास फलदार छोटे वृक्ष आदि का लगाना शुभ होगा।

ढाल और उसका निर्माण

हम जिस भूमि पर भवन बनाने जा रहे हैं, प्रकृति ने उसे किसी भी प्रकार का स्वरूप प्रदान किया हो उसे हमें अपने अनुकूल बनाकर ही प्रयोग करना चाहिए। अतः इस दिशा मुखी आवास हेतु हमें संपूर्ण भवन का ढाल इस प्रकार निर्मित कराना (कृत्रिम रूप से) अधिक शुभत्व उत्पन्न करने वाला

होगा। आवास चाहे अत्यंत छोटा हो, मध्यमाकार हो या बड़ा हो संपूर्ण निर्मित भूतल को दिशानुरूप निम्न चित्र के अनुरूप ढाल का निर्माण करावें।



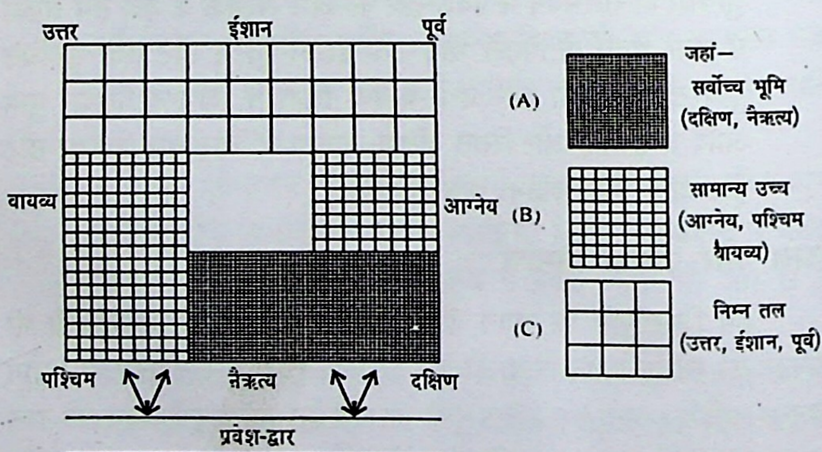
(i) लंबाई और चौड़ाई में स्थित कुल दूरी को 9-9 भागों में विभाजित किया।

(ii) निर्दिष्ट रूप से दिशानुरूप—

(A) सर्वोच्च भूमि को कम से कम 6 इंच तथा अधिक से अधिक 10-12 इंच तक ऊंचा करें।

(B) सामान्य उच्च भूमि को कम से कम 4 इंच और अधिक से अधिक 6-8 इंच तक ऊंचा करें।

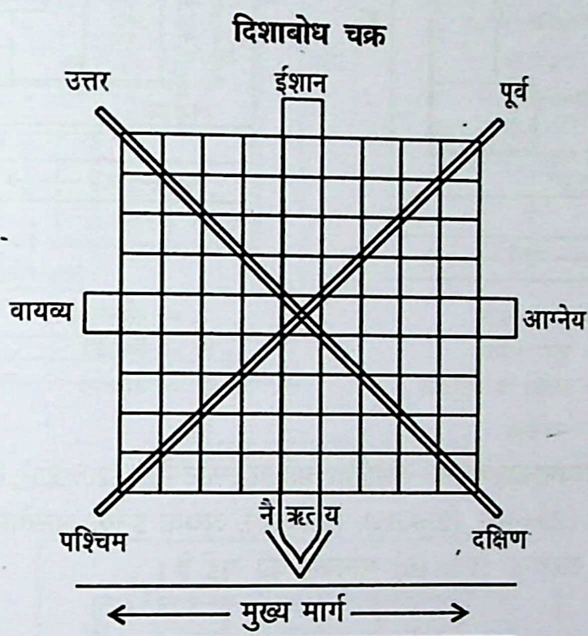
(C) निम्न भूमि को समतल ही बना रहने दें।



आवासीय मानचित्र

जब एक ही दिशा में मुख्य मार्ग या सड़क हो तथा अन्य शेष तीनों दिशाओं में मार्ग आदि का अभाव हो तो हमें अपने भवन का प्रवेश-द्वार भी उसी दिशा में बनाना होगा तथा वास्तुशास्त्र के निर्देशों के अनुरूप भवन को निर्माण निम्नांकित नक्शे के अनुसार करना शुभदायक होगा।

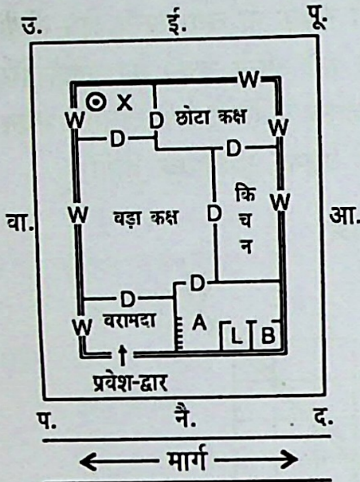
दिशाबोध चक्र

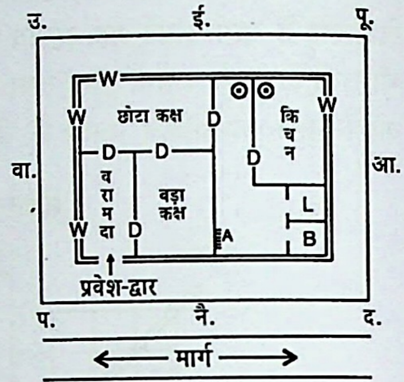


चूंकि हमें तीन ओर से हवा, प्रकाश एवं निकासी की पर्याप्त सुविधा नहीं है अतः इसका प्रबंध भी हमें करना होगा। अर्थात् छत का ऊपरी हिस्सा कुछ न कुछ खुला छोड़ना होगा। जिसका ध्यान नक्शे में पर्याप्त रखा गया है।

1. छोटा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30), अथवा इसके आसपास निम्न नक्शों की आदर्श संरचना ($15\times22\frac{1}{2}$) माप है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन (B) मार्ग पर लंबाई में भवन





जहां– ⊙ = जल स्थान
X = पूजा स्थल
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

2. मध्यमाकार भवन– संभावित आकार (फीट में)–(20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40), अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शे की संरचना (20×40) मानकर की गई है।

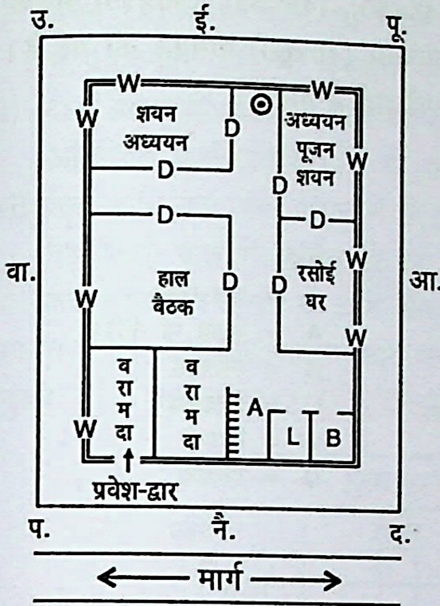
विशेष

(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट पश्चिम-वायव्य की दूरी में कहीं भी प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

(ii) जल स्थान को यत्नपूर्वक उत्तर-ईशान में ही बनाए रखें। भले ही उसकी स्थिति किसी कक्ष या स्वतंत्र रूप से खुले में जा रही हो।

(iii) शौचालय, स्नानगृह एवं चढ़ाव आदि का स्थान-परिवर्तन सुविधानुसार दक्षिण-नैऋत्य परिसर में ही किया जा सकता है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

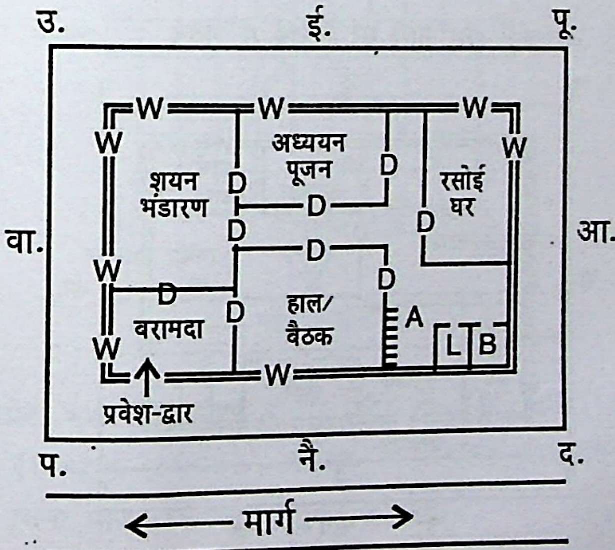
L = शौचालय

⊙ = जल स्थान

W = खिड़की

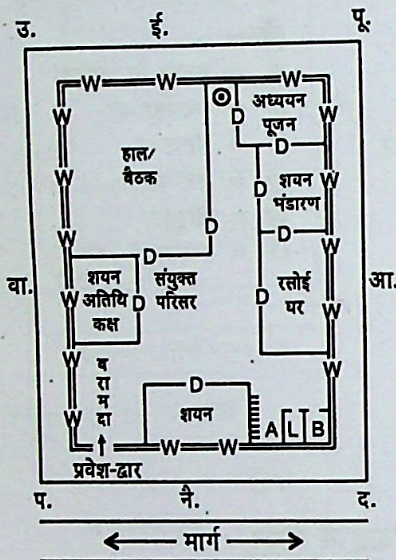
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



3. बड़ा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40×60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

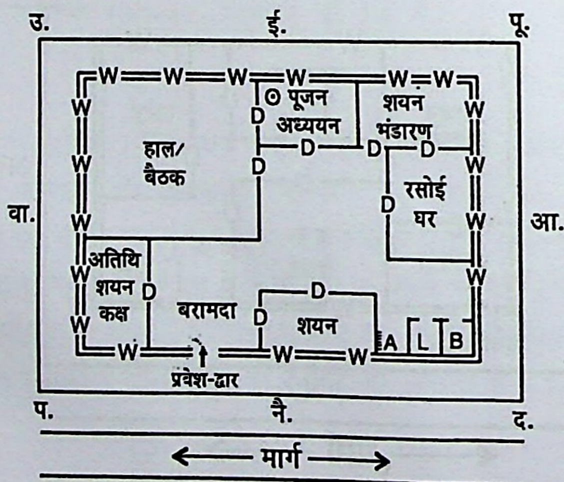
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



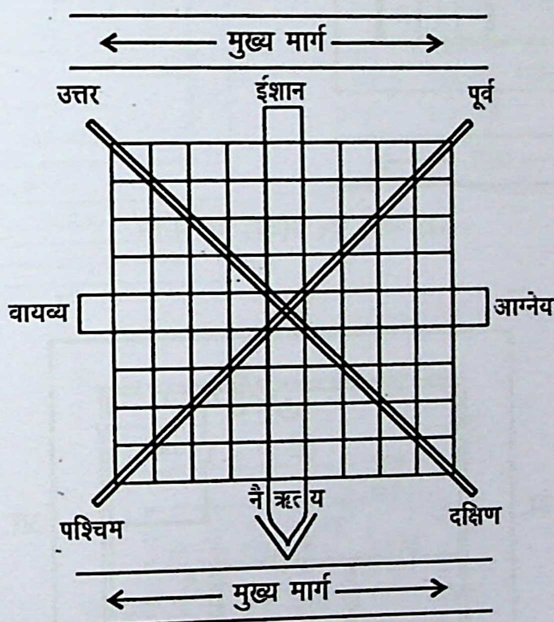
विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट पश्चिम-नैऋत्य में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) दोनों प्रकार के भवनों में हाल या बैठक का स्थान मध्य में बनवाकर अतिरिक्त कक्षों का निर्माण भी कराया जा सकता है।

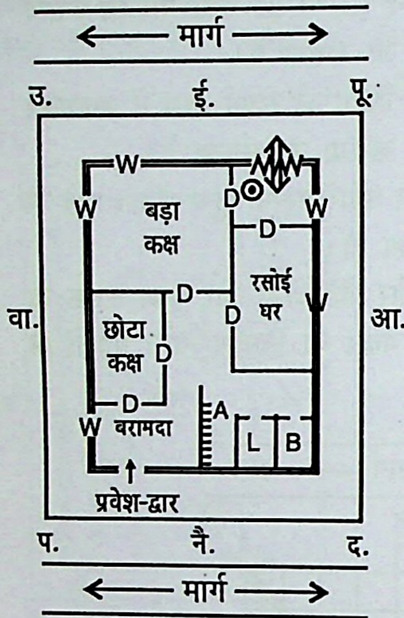
(iii) जल स्थान यत्नपूर्वक ईशान में ही बनाये रखना शुभ होगा। भले ही वह किसी कक्ष में निर्मित हो रहा हो।

जब आवासीय भूखंड के आगे और पीछे दोनों ओर मुख्य सड़क या आम रास्ते हों, तब वास्तुशास्त्रानुसार भवन का निर्माण निम्न नक्शों के अनुरूप करना शुभ होगा।



1. छोटा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शे की रचना माप 15×22$\frac{1}{2}$ मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= शटर चैनल गेट या बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = सीढ़ियां

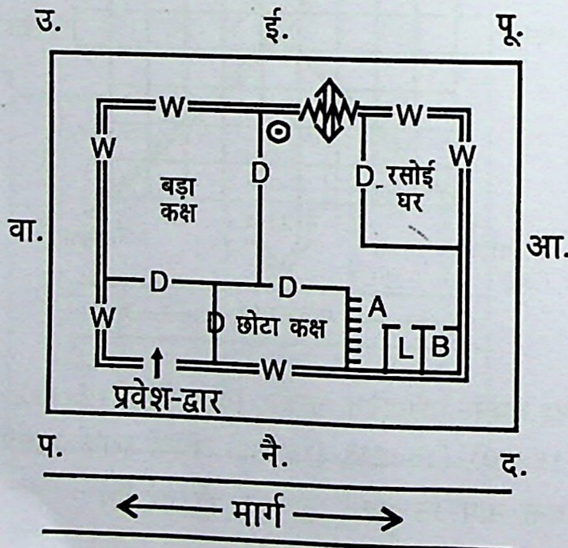
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

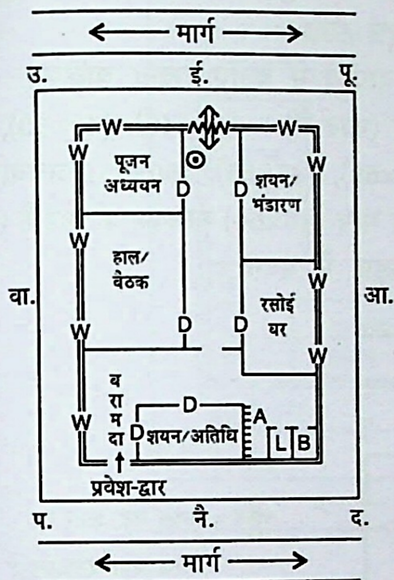
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



2. मध्यमाकार भवन– संभावित आकार (फीट में)–(20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40), अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना का आदर्श नाप (20×40) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= शटर, चैनल गेट या बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

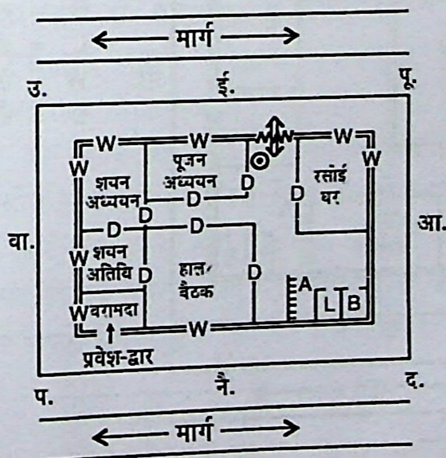
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

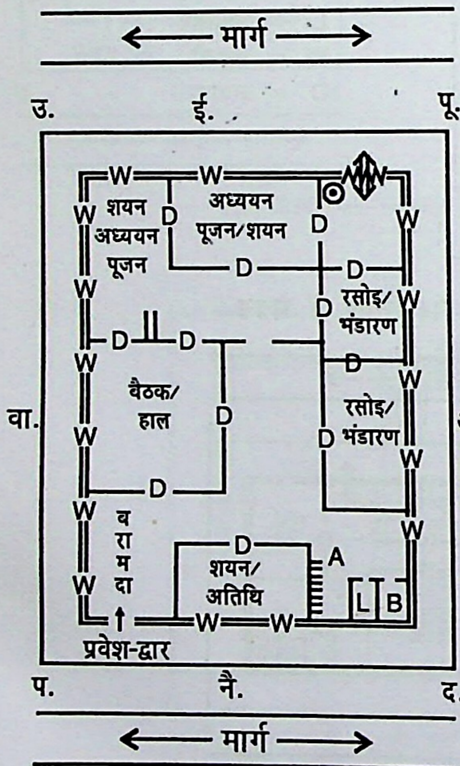
(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट पश्चिम-नैऋत्य में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) स्नानगृह, शौचालय, सीढ़ियां आदि को सुविधाजनक क्रम में किंतु दक्षिण-नैऋत्य में ही बनवाना शुभ होगा।

(iii) जल स्थान को यत्नपूर्वक उत्तर-वायव्य में बनाए रखना चाहिए।

3. बड़ा भवन– संभावित आकार (फीट में) :- (40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शे की संरचना माप (40×60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= चैनल गेट, शटर या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

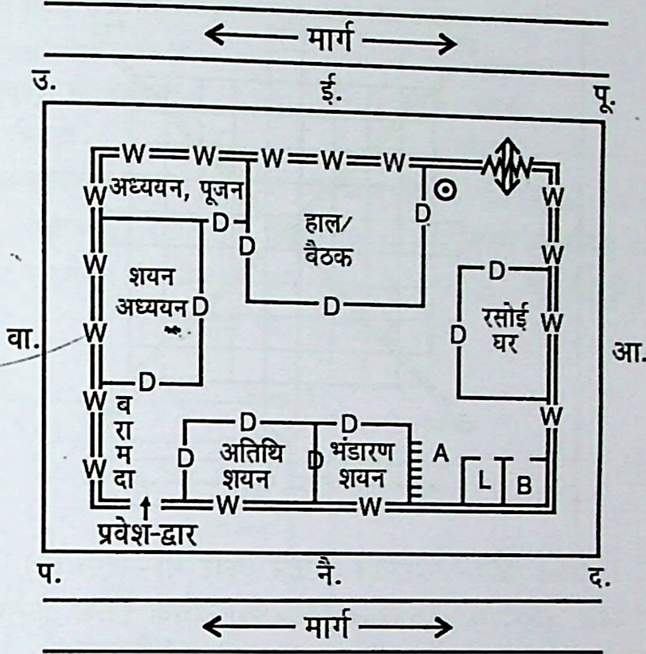
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

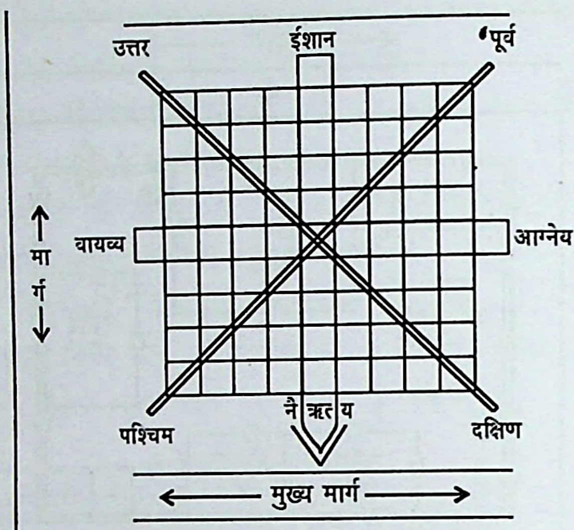
(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट पश्चिमी-नैऋत्य में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह, चढ़ाव आदि को सुविधानुसार दक्षिण-नैऋत्य में कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(iii) जल स्थान को ईशान की ओर रखें, पूर्व-आग्नेय की ओर नहीं।

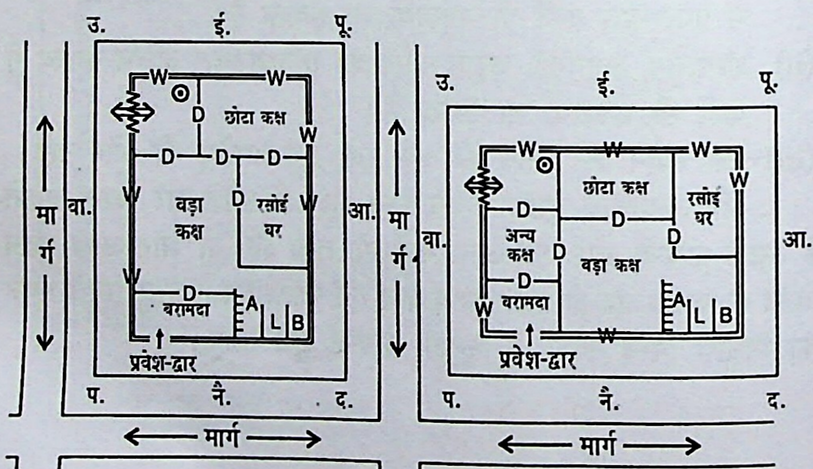
यदि आवासीय भूखंड में हम जिस दिशा में प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं उसके दाहिनी ओर एक अन्य मार्ग हो, तथा शेष दो ओर अन्य भवन आदि के कारण बंद हो तब पर्याप्त वायु एवं प्रकाशयुक्त वास्तु संगत भवन का निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप कराना शुभ होगा।

दिशाबोध चक्र



1. छोटा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास निम्न नक्शों की संरचना $(15\times22\frac{1}{2})$ मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन (B) मार्ग पर लंबाई में भवन



जहां—

= शटर, चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

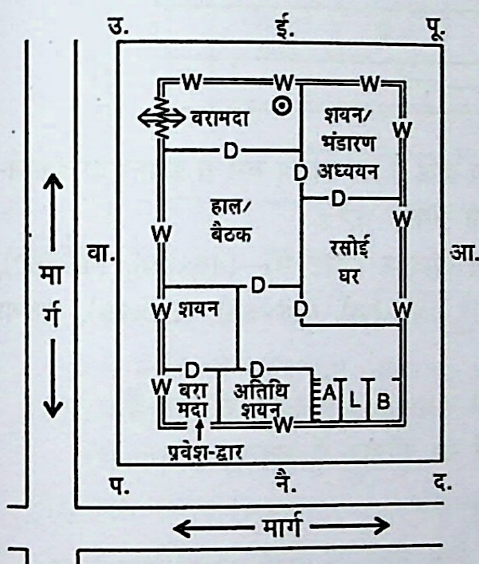
L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

2. मध्यमाकार भवन— संभावित आकार (फीट में)—(20×25), (20×30), (25×35), (20×40), (20×35), (25×40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना की आदर्श नाम (20×40) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां—

= शटर, चैनल गेट या वड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

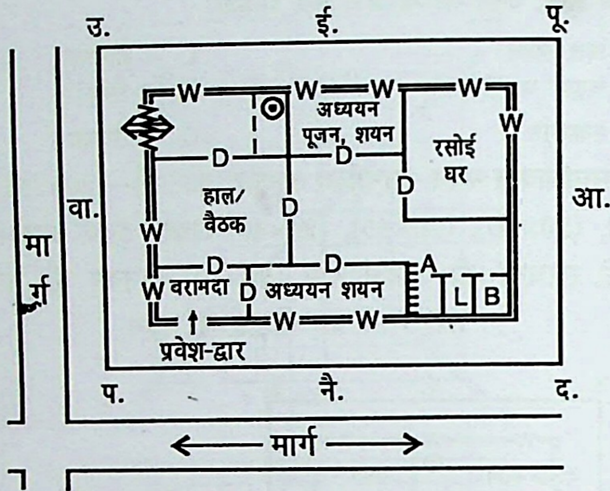
D = दरवाजा

विशेष

(i) भवन (A) में 7 फीट और भवन (B) में 13 फीट पश्चिमी-नैऋत्य में किसी भी स्थान पर प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं चढ़ाव या सीढ़ियों को अपने सुविधाजनक क्रम में किंतु दक्षिण-नैऋत्य में ही कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

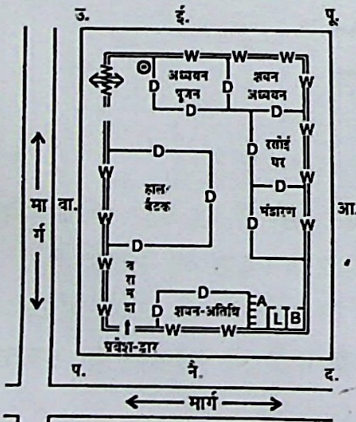


(iii) जल स्थान को यथा संभव् कक्ष में या स्वतंत्र रूप से ईशान या ईशान-उत्तर में बनाए रखने का प्रयास करें।

3. बड़ा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (46×65), (50×75), अथवा इससे भी बड़ा।

निम्न नक्शों की संरचना (40×60) मानकर की गई हैं।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= शटर, चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

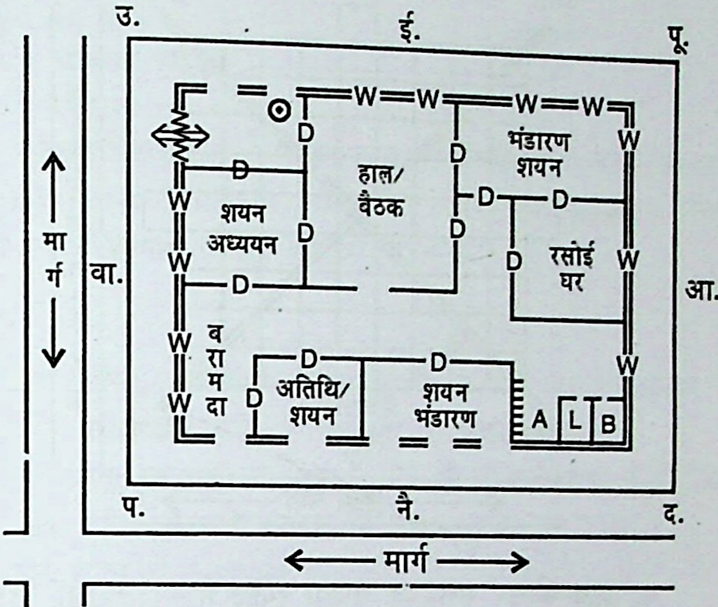
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



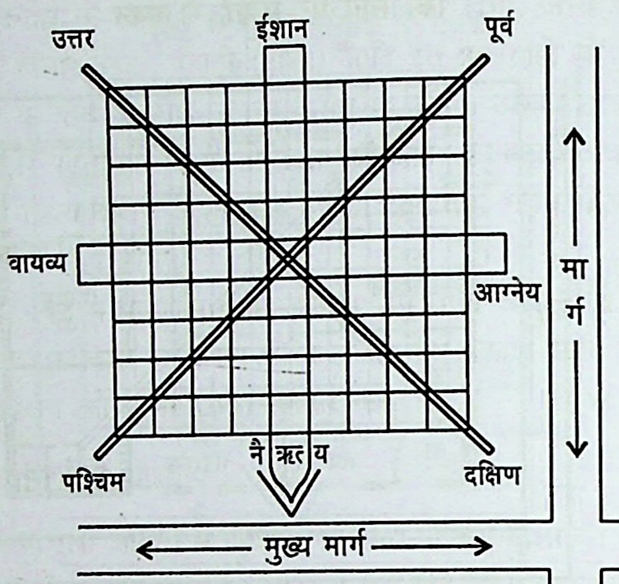
विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट की दूरी पश्चिमी-नैऋत्य में कहीं भी प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं सीढ़ियां अपनी सुविधानुसार किंतु दक्षिण-नैऋत्य में ही रखना शुभ होगा।

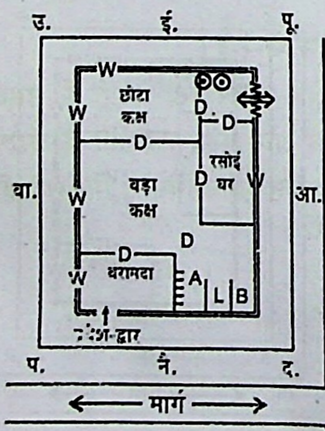
(iii) जल स्थान चित्रानुसार ही उत्तर-ईशान में रखें।

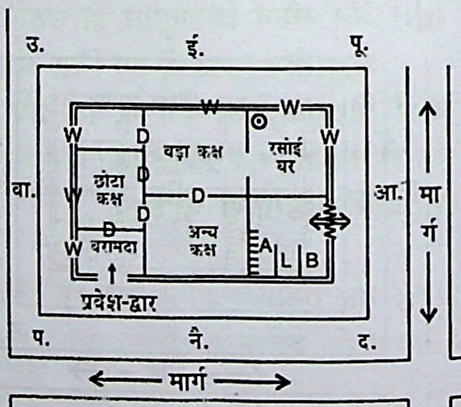
आवासीय भूखंड में हम जिस ओर प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं, उसके बायीं ओर एक अन्य मार्ग हो, तथा शेष दोनों ओर अन्य भवनादि के कारण बंद हो तब वायु एवं प्रकाशयुक्त वास्तुशास्त्र संगत भवन निर्माण निम्न नक्शों के अनुरूप करवाना चाहिए।



1. छोटा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शे की संरचना (मानक) $15 \times 22\frac{1}{2}$ वर्ग फीट है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन (B) मार्ग पर लंबाई में भवन





= चैनल गेट, शटर या बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

2. मध्यामाकार भवन– संभावित आकार (फीट में)–(20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40), अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना (20×40) को आधार बनाकर की गई है।

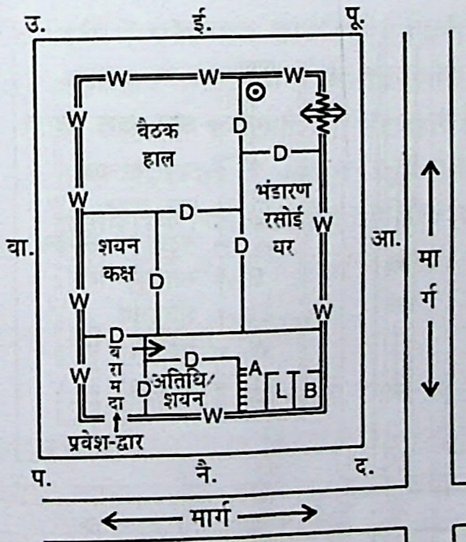
विशेष

(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट पश्चिमी-वायव्य की ओर प्रवेश द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं चढ़ाव आदि को दक्षिण-नैऋत्य में ही किसी और तरीके से सुविधाजनक रूप से बनवाया जा सकता है।

(iii) जल स्थान को प्रयत्नपूर्वक ईशान-उत्तर में बनाए रखने का प्रयास करना शुभ होगा।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= शटर, चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

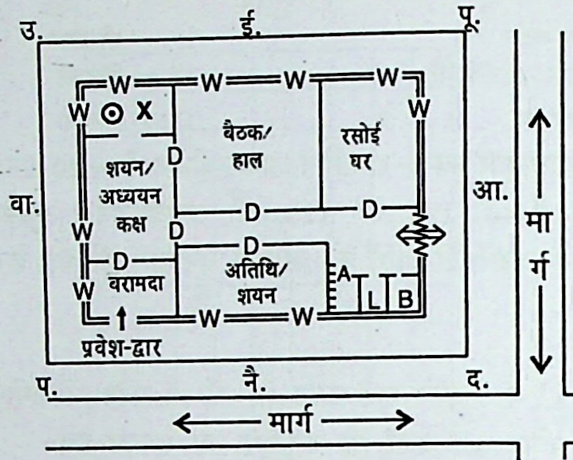
L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

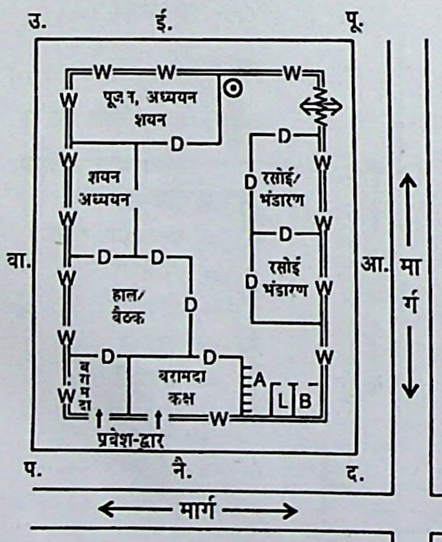
X = पूजा स्थल

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



3. बड़ा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40×60) वर्ग फीट मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= शटर, चैनल गेट या बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

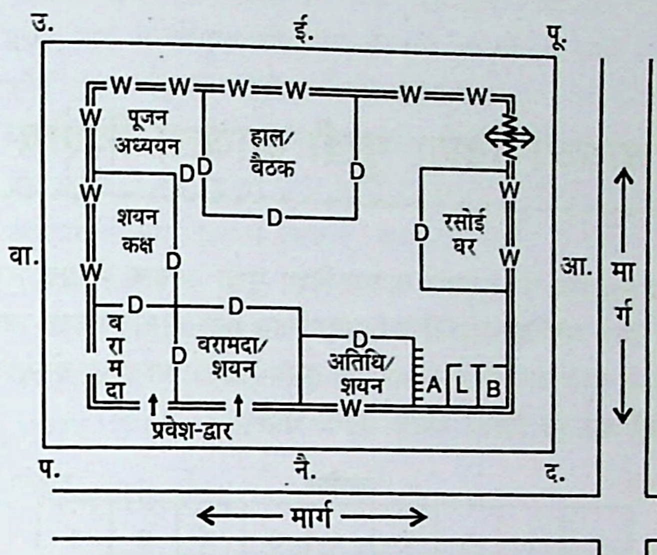
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट की पश्चिमी-वायव्य दूरी में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं चढ़ाव आदि को सुविधानुसार दक्षिण-नैऋत्य में कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(iii) जल स्थान को चित्रानुसार अधिकाधिक ईशान की ओर करने का प्रयास करें। पूर्वी-आग्नेय की ओर नहीं।

□□

वायव्य-दिशा मुखी आवास विशेष

वास्तुशास्त्र के अनुसार वायव्य-दिशा मुखी आवास में पंच तत्त्वों के रूप में उनसे संबंधित पदार्थों का समायोजन निम्नानुसार किया जाता है। हमें वायव्य मुखी आवास के निर्माण के समय निर्दिष्ट मानचित्र के साथ-साथ इन बातों का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए—

पूर्व — आग्नेय — दक्षिण

1	2	3	2	1	3	3	2	1
2	जल या अग्नि या हल्के तत्त्व		अग्नि तत्त्व			भारी तत्त्व		2
3								3
2	जल तत्त्व		ब्रह्म क्षेत्र			अपवित्र तत्त्व		2
1								1
3								3
3	पवित्र तत्त्व		वायवीय तत्त्व			हल्के तत्त्व		3
2								2
1	2	3	2	1	3	3	2	1

ईशान (बाएँ) — नैऋत्य (दाएँ)

उत्तर — पश्चिम

वायव्य

← मार्ग →

(i) वायव्य दिशा मुखी आवास में वायव्य-पश्चिम की अपेक्षा वायव्य-उत्तर में प्रवेश-द्वार उत्तम होता है। किंतु यह ध्यान रखें कि यदि हमारे प्रवेश-द्वार के सम्मुख कोई पेड़, बिजली का खंभा, अन्य भवन का कोई खंभा, गड्ढा, पहाड़ी, (टीला) आदि इस प्रकार हो जो द्वार और मार्ग के बीच अवरोध उत्पन्न करता हो अथवा उसकी छाया प्रवेश-द्वार पर पड़ती हो तब या तो उक्त अवरोधादि को हटायें अथवा प्रवेश-द्वार वायव्य-पश्चिम दिशा में बनवायें। आवासीय भवन में प्रवेश द्वार मध्य में नहीं होते।

(ii) ऊपरी मंजिलों में प्रत्येक की ऊंचाई कदापि समान न रहे, तथा दक्षिण नैऋत्य दिशा में निर्मित क्षेत्र सर्वाधिक ऊंचे रहें, इस बात का ध्यान अवश्य रखें। अर्थात् प्रत्येक मंजिल की ऊंचाई घटती जाना शुभ होगा।

विशेष ध्यान देने योग्य

(i) वायव्य मुखी आवास में प्रवेश-द्वार वायव्य-उत्तर दिशा की ओर होने पर ही श्रेष्ठ माना जाता है। इसके अलावा यदि किसी कारण से उत्तर-ईशान दिशा की ओर प्रवेश-द्वार बनवाया जाता है, तो भवन की शेष सभी आंतरिक व्यवस्थाओं और निर्माणों को यथावत रहने देना चाहिए।

(ii) एक ओर शौचालय की स्थिति और जल स्थान का निर्माण प्रवेश-द्वार के पास होने से कुछ असुविधाजनक प्रतीत हो सकता है। अतः इन्हें अधिक से अधिक भवन के पीछे स्थित दिशा की ओर कुछ हद तक आगे य पीछे किया जा सकता है। यद्यपि मानचित्र के अनुरूप रहने देना सुखद होगा।

(iii) यथा संभव शौचालय में सीटिंग (बैठक) उत्तर-दक्षिण मुखी होना शुभ रहता है। चूंकि मानचित्र में दर्शित स्थान पर निर्मित शौचालय में बैठकर इस प्रकार होना कुछ सीमा तक असुविधाजनक लगेगा, किंतु वास्तुदृष्टि से शुभ होगा।

(iv) सैप्टिक टैंक को दक्षिण-नैऋत्य दिशा में ही भवन के बाहरी ओर अथवा अंदर की ओर बनवाया जा सकता है। यथासंभव शौचालय को भवन के बाहरी परिसर में बनवाना व्यावहारिक एवं वास्तु दोनों ही प्रकार से शुभ होगा।

(v) जल स्थान जहां तक संभव हो अंडर ग्राउंड रहे, ईशान की ओर मानचित्र में दर्शित स्थान पर भवन के अंदर या बाहर की ओर भी बनवाया जा सकता है। किसी विशेष मजबूरी के चलते यदि आगे-पीछे करना आवश्यक हो तो उत्तर दिशा की ओर रखना अधिक शुभ होगा, जबकि पूर्व की ओर ले जाना मध्यम शुभ होगा।

(vi) यदि भवन के दायें, बायें और पीछे अर्थात् तीन ओर अन्य भवनादि हों अथवा किसी प्रकार से बाहरी वायु प्रकाश का प्रबंध न हो तो ऐसी स्थिति में पूर्व या आग्नेय दिशा में (दक्षिण-नैऋत्य में कदापि नहीं) छत को खुला रखना अत्यंत शुभ होगा।

(vii) सीढ़ियों का निर्माण यदि मानचित्र में दर्शित स्थान पर न करवाया जा रहा हो तो यह ध्यान रखें, पश्चिम की ओर चढ़ना सर्वाधिक शुभ, दक्षिण नैऋत्य उत्तम, पूर्व-उत्तर अशुभ होता है। ईशान में सीढ़ियां न बनाएं।

(viii) यदि चहारदीवरी का निर्माण किया गया है, अथवा बागवानी की सुविधा हो तो भवन में प्रवेश-द्वार की ओर लंबी कमजोर तने वाली पुष्पदार बेल भवन के पिछले भाग पूर्व, आग्नेय भाग में सामान्य ऊंचाई के पेड़ तथा दाहिनी ओर पूर्वी-ईशान उत्तर दिशा में सुगंधित पुष्पों के पौधे आदि तथा बायीं ओर स्थित दक्षिण-नैऋत्य के आसपास ऊंचे, बड़े वृक्ष अशोक आदि का लगाना शुभ होगा।

ढाल और उसका निर्माण

हम जिस भूमि पर भवन बनाने जा रहे हैं, प्रकृति ने उसे किसी भी

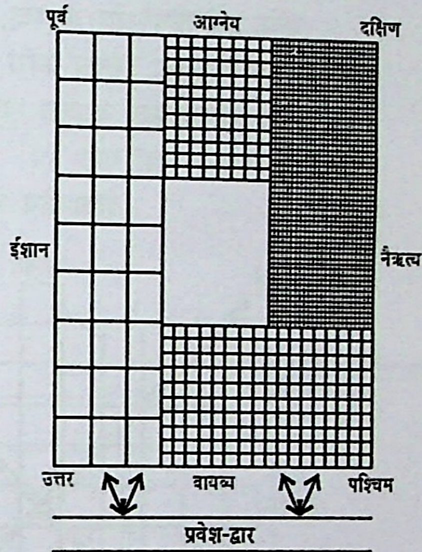
प्रकार का स्वरूप प्रदान किया हो, उसे हमें अपने अनुकूल बनाकर ही प्रयोग करना चाहिए। अतः इस दिशा मुखी आवास हेतु हमें संपूर्ण भवन का ढाल इस प्रकार निर्मित कराना (कृत्रिम रूप से) अधिक शुभत्व उत्पन्न करने वाला होगा। आवास चाहे अत्यंत छोटा हो, मध्यमाकर हो या बड़ा हो, संपूर्ण निर्मित भूतल को दिशानुरूप निम्न चित्र के अनुरूप ढाल का निर्माण करावें।

(i) लंबाई और चौड़ाई में स्थित कुल दूरी को 9-9 भागों में विभाजित किया।

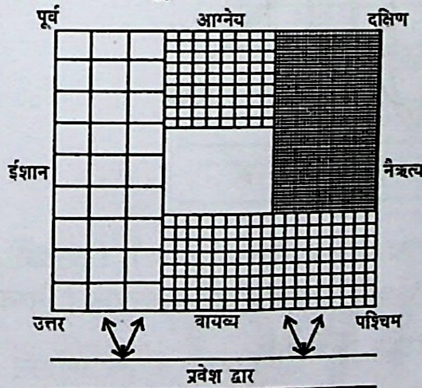
(ii) निर्दिष्ट रूप से दिशानुरूप—

(A) सर्वोच्च भूमि को कम से कम 6 इंच तथा अधिक से अधिक 10-12 इंच तक ऊंचा करें।

(B) सामान्य उच्च भूमि को कम से कम 4 इंच और अधिक से अधिक 6-8 इंच तक ऊंचा करें।



(C) निम्न भूमि को समतल ही बना रहने दें।



जहां—

(A) सर्वोच्च भूमि (दक्षिण, नैऋत्य)

(B) सामान्य उच्च (आग्नेय, पश्चिम वायव्य)

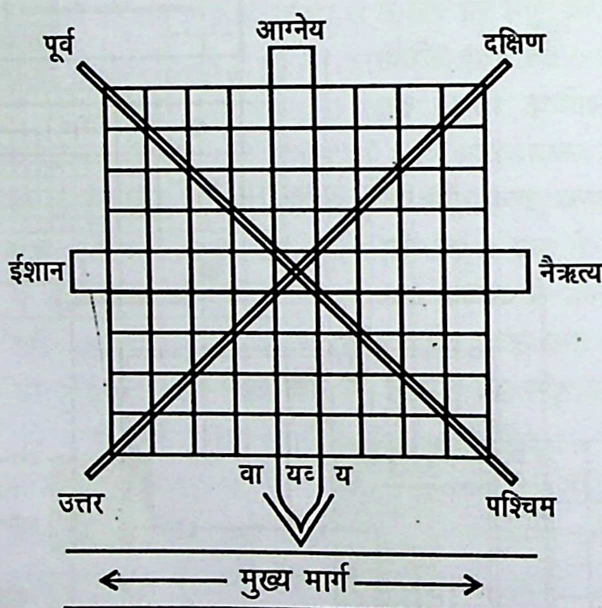
(C) निम्न तल (उत्तर ,ईशान, पूर्व)

आवासीय मानचित्र

जब एक ही दिशा वायव्य में मुख्य मार्ग या सड़क हो, तथा अन्य शेष सभी दिशाओं में मार्ग आदि का अभाव हो तो हमें अपने भवन का प्रवेश-द्वार भी उसी दिशा में बनाना होगा तथा वास्तुशास्त्र के निर्देशों के अनुरूप भवन का निर्माण निम्नांकित नक्शे के अनुसार करना शुभदायक होगा।

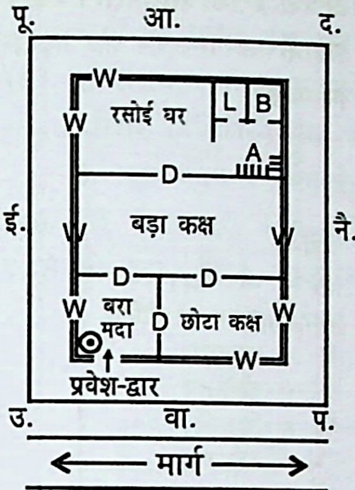
चूंकि हमें तीन ओर से हवा, प्रकाश एवं निकासी की पर्याप्त सुविधा नहीं है, अतः इसका प्रबंध भी हमें करना होगा। अर्थात् छत का ऊपरी हिस्सा कुछ न कुछ खुला छोड़ना होगा। जिसका ध्यान नक्शे में पर्याप्त रखा गया है।

दिशाबोध चक्र



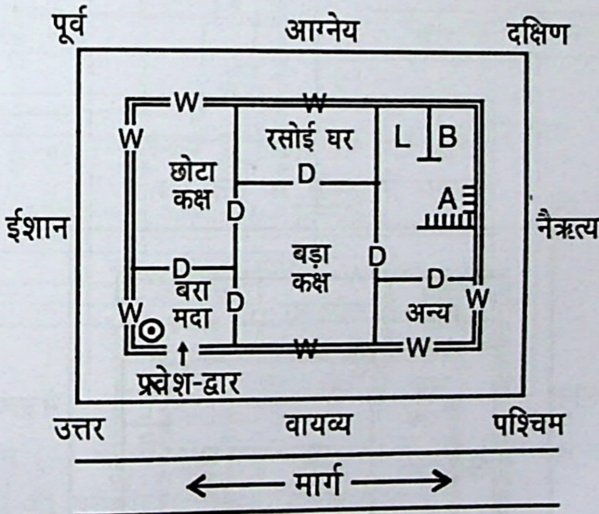
1. छोटा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30), अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शों की आदर्श संरचना (15×22$\frac{1}{2}$), माप है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा
⊙ = जल स्थान

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

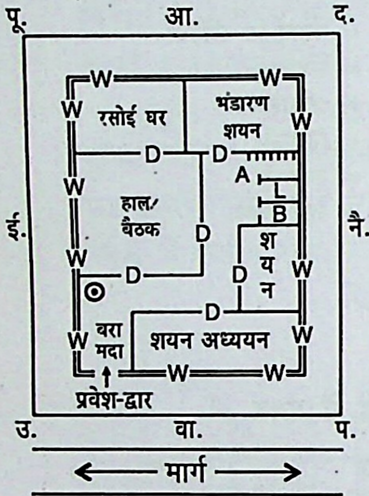


विशेष

दक्षिण-नैऋत्य में शौचालय या स्नानगृह को घेरती हुई सीढ़ियों का निर्माण स्थान बनवाने की दृष्टि से उचित होगा।

2. मध्यमाकार भवन– संभावित आकार (फीट में)–(20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना (20×40) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

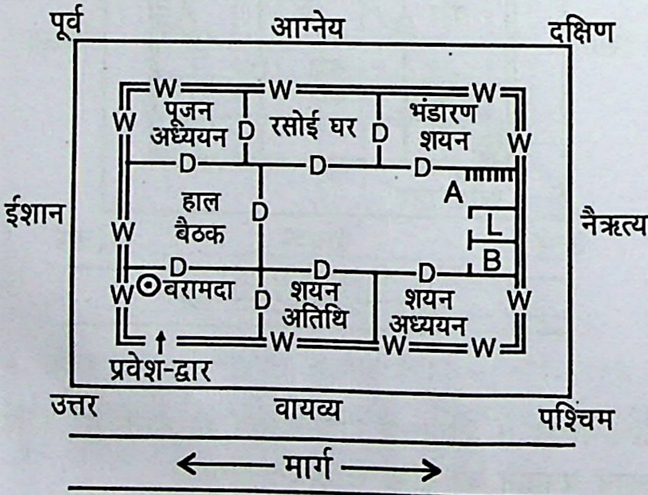
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



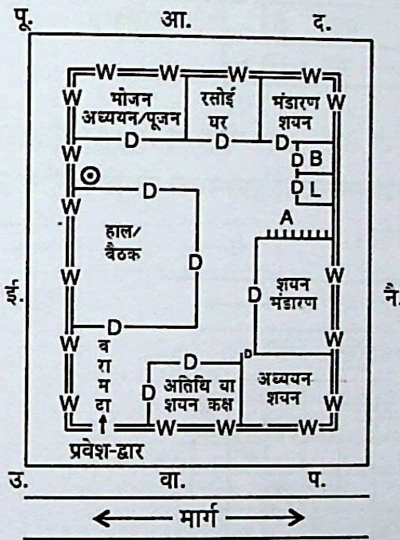
विशेष

(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट उत्तर वायव्य में कहीं भी प्रवेश द्वार बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं सीढ़ियों का स्थान-परिवर्तन सुविधानुसार उसी परिसर (दक्षिण-नैऋत्य) में कहीं भी किया जा सकता है।

3. बड़ा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शों की संरचना (40×60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

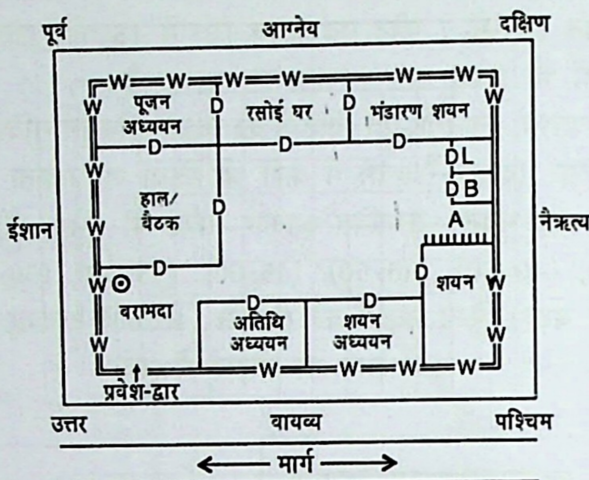
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
D = दरवाजा
W = खिड़की
⊙ = जल स्थान

विशेष

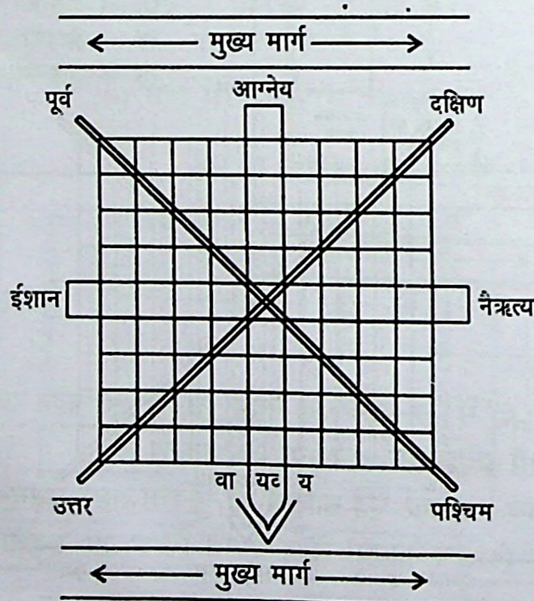
(i) भवन (A) में 17 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट उत्तर-वायव्य में कहीं भी प्रवेश-द्वार लगवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय, स्नानगृह एवं सीढ़ियों का सुविधाजनक स्थान-परिवर्तन उसी परिसर (दक्षिण-नैऋत्य) में कहीं भी किया जा सकता है।

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

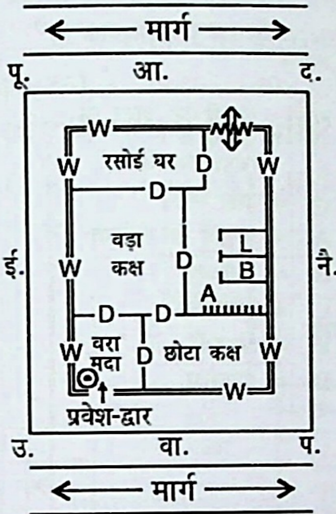


जब आवासीय भूखंड के आगे और पीछे दोनों ओर मुख्य सड़क या आम रास्ते हों, तब वास्तुशास्त्रानुसार भवन का निर्माण निम्न नक्शों के अनुरूप करना शुभ होगा।



1. छोटा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शे की रचना माप $15 \times 22\frac{1}{2}$ मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= शटर, चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

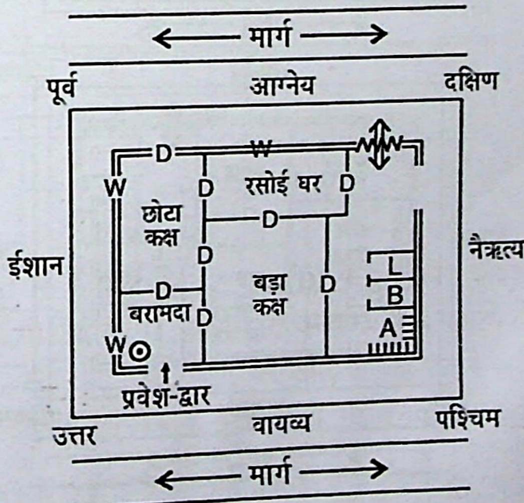
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

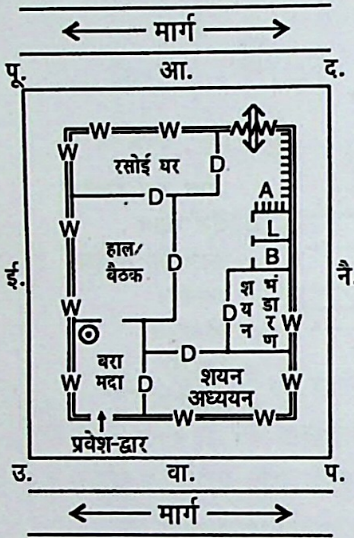
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



2. मध्यामाकार भवन– संभावित आकार (फीट में)–(20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40), अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना का आदर्श नाप (20×40) मानकर की गई है।

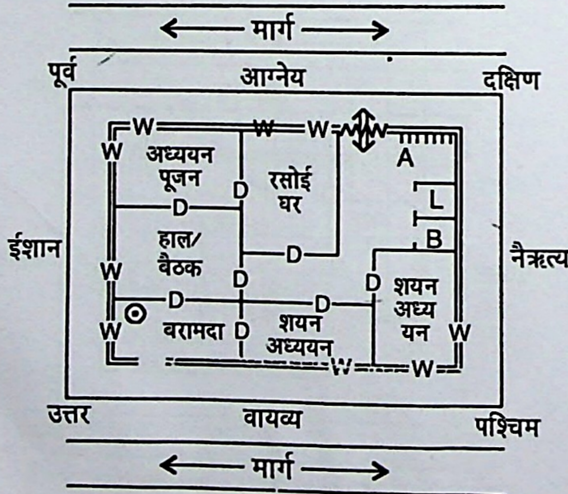
(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= चैनल गेट, शटर या बड़ा दरवाजा
⊙ = जल स्थान
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लम्बाई में भवन



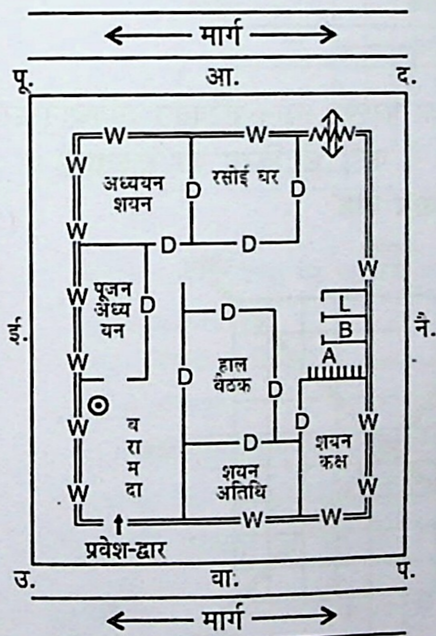
विशेष

(i) भवन (A) में 7 फीट तथा भवन (B) में 13 फीट उत्तर-वायव्य की दूरी में प्रवेश-द्वार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(ii) चढ़ाव, शौचालय व स्नानगृह को सुविधाजनक रूप में परस्पर स्थान-परिवर्तन उसी परिसर (दक्षिण-नैऋत्य) में कहीं भी किया-जा सकता है।

3. बड़ा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा। निम्न नक्शे की संरचना माप (40×60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



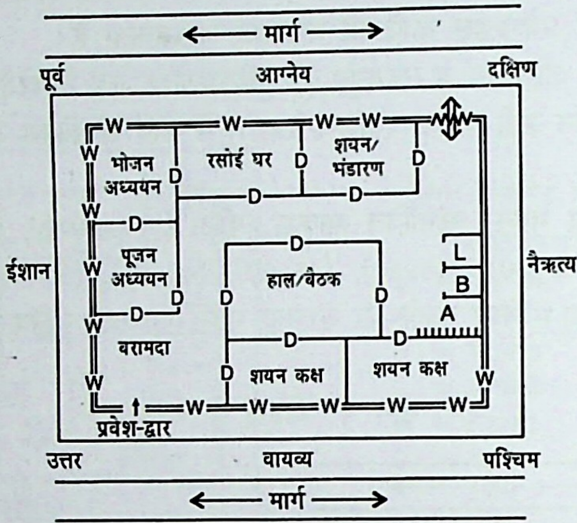
जहां–
⊙ = जल स्थान
= शटर, चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट तथा भवन (B) में 20 फीट उत्तर-वायव्य में

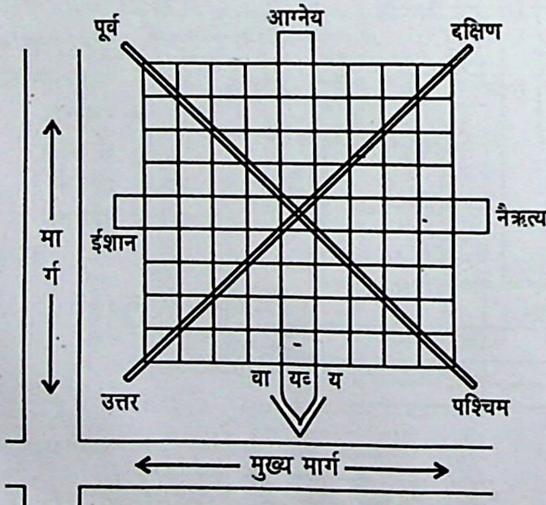
किसी भी स्थान पर प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन



(ii) शौचालय, स्नानगृह, चढ़ाव का परस्पर स्थान-परिवर्तन सुविधानुसार उसी परिसर (दक्षिण-नैऋत्य) में कहीं भी किया जा सकता है।

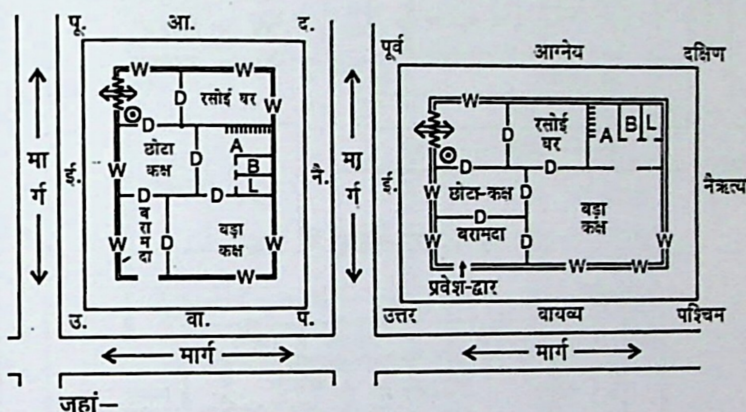
दिशाबोध चक्र



यदि आवासीय भूखंड में हम जिस दिशा में प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं, उसके दाहिने ओर एक अन्य मार्ग हो तथा शेष दो ओर अन्य भवन आदि के कारण बंद हो तब पर्याप्त वायु एवं प्रकाशयुक्त वास्तु संगत भवन का निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप कराना शुभ होगा।

1. छोटा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30) अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना ($15\times22^1/_2$) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन (B) मार्ग पर लंबाई में भवन



जहां–

W = शटर, चैनल गेट या अन्य दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

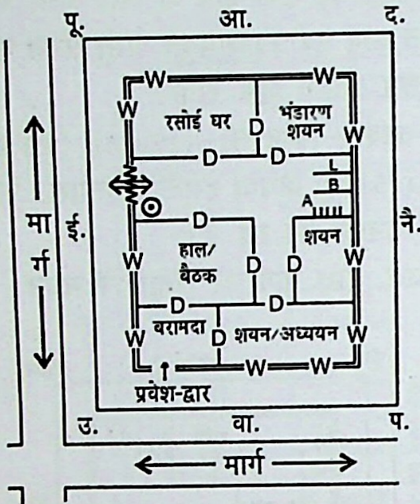
D = दरवाजा

2. मध्यमाकार भवन– संभावित आकार (फीट में)–(20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना की आदर्श नाप (20×40) मानकर की गई है।

विशेष

(i) भवन (A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट उत्तर-वायव्य में कहीं भी प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= चैनल गेट शटर या अन्य वड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

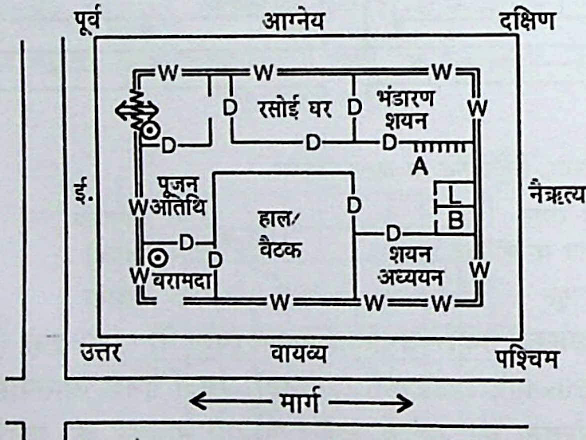
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

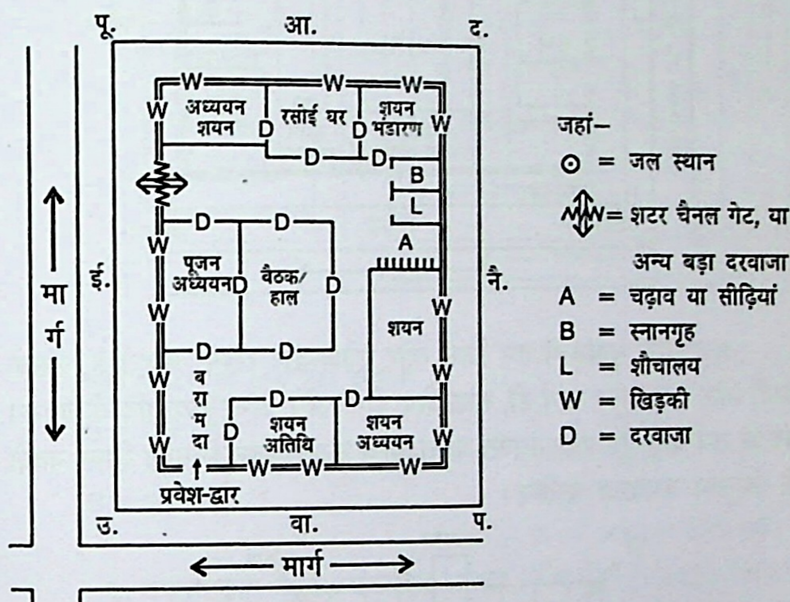


(ii) शौचालय, स्नानगृह, चढ़ाव आदि का परस्पर स्थान-परिवर्तन उसी परिसर (दक्षिण-नैऋत्य) में सुविधानुसार कहीं भी बनवाया जा सकता है।

(iii) जल स्थान ईशान-पूर्व एवं ईशान-उत्तर दोनों में से किसी भी स्थान पर बनवाया जा सकता है।

3. बड़ा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(40×40), (40×50), (40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा निम्न नक्शों की संरचना (40×60) मानकर की गई है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



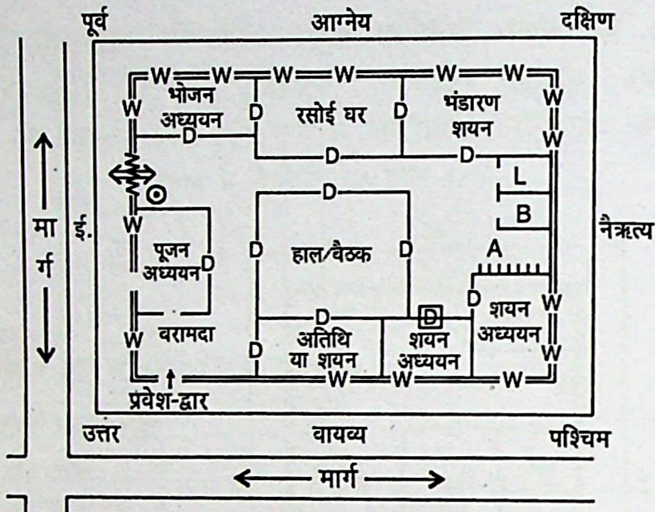
विशेष

(i) भवन (A) में 17 फीट तथा भवन (B) में 20 फीट उत्तर-वायव्य की कुल दूरी में कहीं भी प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

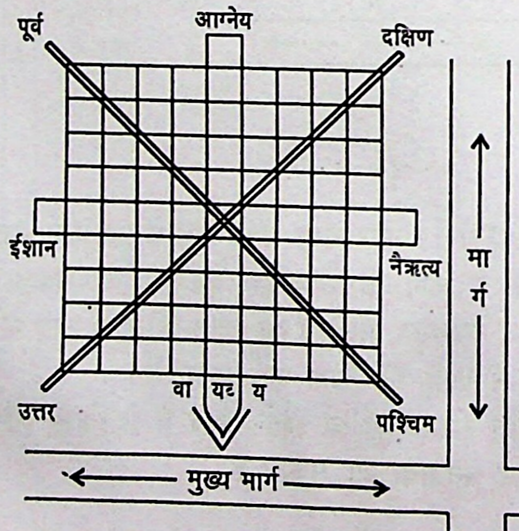
(ii) शौचालय, स्नानगृह, सीढ़ियों का स्थान-परिवर्तन उसी परिसर (दक्षिण-नैऋत्य) में कहीं भी किया जा सकता है।

(iii) जल स्थान ईशान पूर्व या ईशान-उत्तर में से किसी भी सुविधाजनक स्थान पर बनवाया जा सकता है।

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

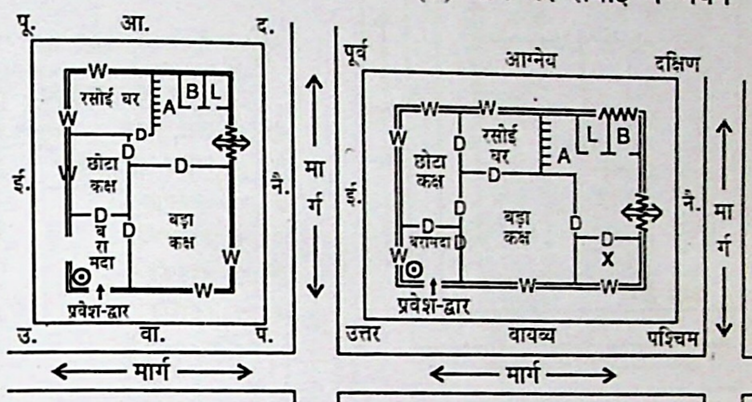


आवासीय भूखंड में हम जिस ओर प्रवेश-द्वार रखना चाहते हैं, उसके बायीं ओर एक अन्य मार्ग हो, तथा शेष दोनों ओर अन्य भवनादि के कारण बंद हो तब वायु एवं प्रकाशयुक्त वास्तुशास्त्र संगत भवन निर्माण निम्न नक्शे के अनुरूप करवाना चाहिए।



1. छोटा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(12×18), (12×20), (12×24), (15×20), (15×25), (15×30), अथवा इसके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना (मानक) $15\times22^{1}/_{2}$ वर्ग फीट है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन (B) मार्ग पर लंबाई में भवन



जहां–



=शटर, या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

X = अतिरिक्त छोटा कक्ष

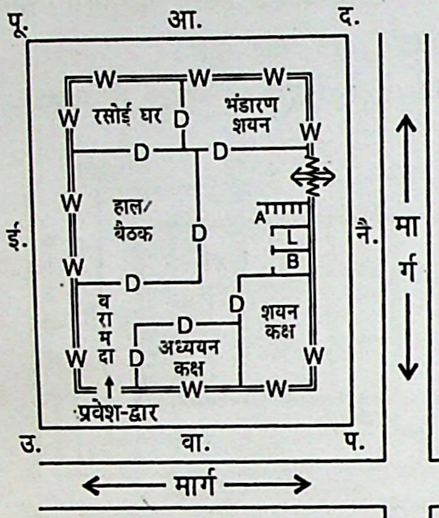
2. मध्यामाकार भवन– संभावित आकार (फीट में)–(20×25), (20×30), (20×35), (20×40), (25×35), (25×40) अथवा इनके आसपास। निम्न नक्शों की संरचना (20×40) को आधार बनाकर की गई है।

विशेष

(i) भवन(A) में 7 फीट एवं भवन (B) में 13 फीट उत्तर-वायव्य में किसी भी स्थान पर प्रवेश-द्वार बनवाया जा सकता है।

(ii) चैनल गेट (या अन्य बड़ा दरवाजा), शौचालय, स्नान गृह-चढ़ाव आदि को सुविधानुसार परस्पर परिवर्तित रूप में ही दक्षिण-नैऋत्य में बनवाया जा सकता है।

(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= चैनल गेट शटर या अन्य बड़ा दरवाजा

⊙ = जल स्थान

A = चढ़ाव या सीढ़ियां

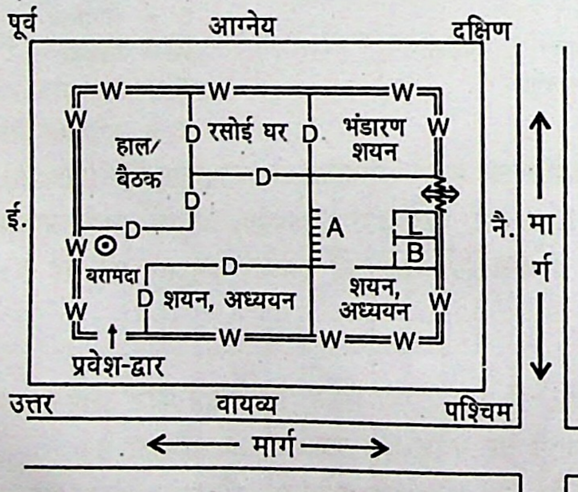
B = स्नानगृह

L = शौचालय

W = खिड़की

D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लंबाई में भवन

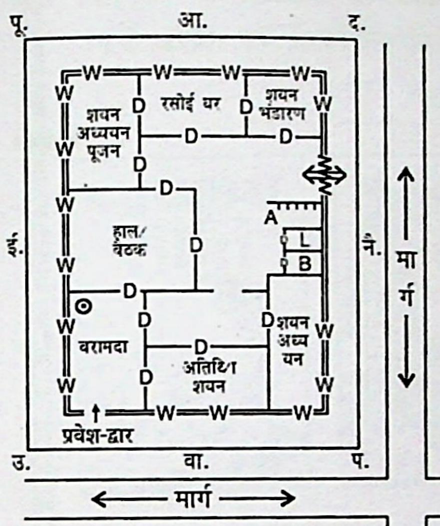


3. बड़ा भवन– संभावित आकार (फीट में)–(40×40), (40×50),

(40×60), (40×80), (45×50), (45×60), (45×65), (50×75) अथवा इससे भी बड़ा।

निम्न नक्शों की संरचना (40×60) वर्ग फीट मानकर की गई है।

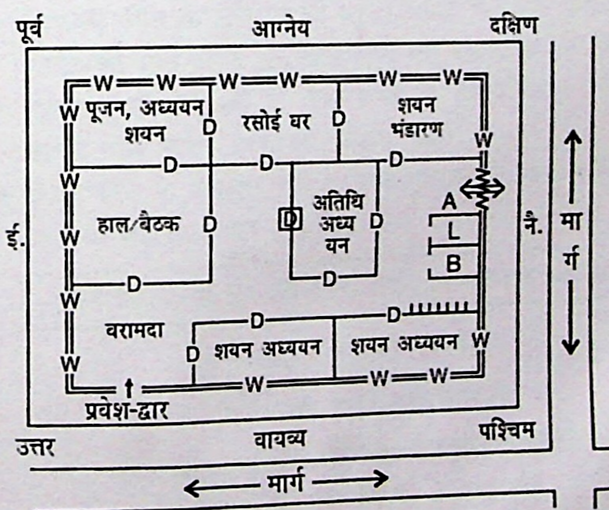
(A) मार्ग पर चौड़ाई में भवन



जहां–

= शटर, चैनल गेट या अन्य बड़ा दरवाजा
⊙ = जल स्थान
A = चढ़ाव या सीढ़ियां
B = स्नानगृह
L = शौचालय
W = खिड़की
D = दरवाजा

(B) मार्ग पर लम्बाई में भवन

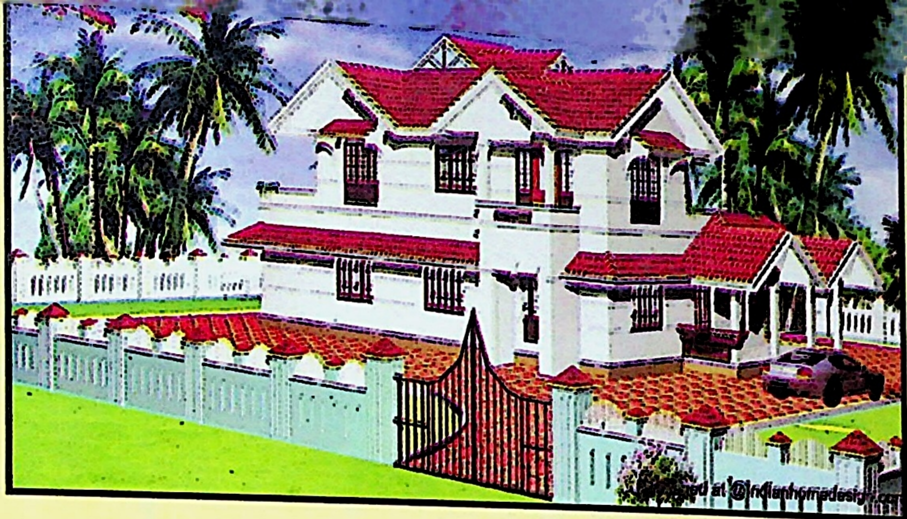


विशेष

(i) भवन (A) में 13 फीट एवं भवन (B) में 20 फीट उत्तर-वायव्य में प्रवेश-द्वार किसी भी स्थान पर बनवाया जा सकता है।

(ii) शौचालय स्नानगृह, चढ़ाव आदि पर परस्पर स्थान-परिवर्तन उसी परिसर (दक्षिण नैऋत्य) में कहीं भी किया जा सकता है।

●●●



वास्तु द्वारा गृह निर्माण



ओम प्रकाश
कुमरावत 'आचार्य'

यदि आप नया घर बनवा रहे हैं अथवा बनवाना चाहते हैं, तो यह पुस्तक आपके लिए उपयोगी है।

यदि प्रारम्भ से ही घर को वास्तु शास्त्रानुसार बनवाया जाए तो न केवल वास्तुदोष से होने वाली हानियों से बचा जा सकता है, अपितु उचित मार्गदर्शन पाकर समृद्धि के द्वार भी खोले जा सकते हैं।

कैसा भूखंड शुभ होता है? गृह का प्रवेश द्वार किस दिशा में और किस स्थान पर हो? अतिथिशाला किस दिशा में हो? गृहस्वामी का कक्ष, बच्चों का अध्ययन कक्ष, रसोई, बैठक, स्टोर आदि कहां-कहां हों? मानचित्रों (नक्शों) के द्वारा इस पुस्तक में इन प्रश्नों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। यदि आप घर बनवाकर सम्पूर्ण रूप से वास्तुलाभ प्राप्त करना चाहते हैं, तो आज ही यह पुस्तक खरीदें।



वास्तु अपनाएं, सुख-समृद्धि पाएं।



साधना पब्लिकेशन्स
K 4/4, Model Town II, Delhi- 110009